नवीनीकरण

कलीसिया के जीवन में ईश्वरीय योजना का सर्वेक्षण

ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रगट किया जाए।
(इफिसियों 3:10)

ड्वाइट स्मिथ

सैचुरेशन चर्च प्लांटिंग इंटरनेशनल सिरैक्यूज,
न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रकाशित
संयुक्त राज्य अमेरिका में मुद्रित

© 2017 सैचुरेशन चर्च प्लांटिंग
सारे अधिकार सुरक्षित हैं

अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया www.spcglobal.org को देखिये, info@scpglobal.org पर ई–मेल करिये, या 620 W Genesee Street, Syracuse, New York, 13204, U.S.A के पते पर पत्र भेजिए।

विषय वस्तु

प्रस्तावना

भाग 1

कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य

1. हम अपने राष्ट्र का इतिहास लिख रहे हैं

2. कलीसिया का उद्देश्य क्या है?

3. कलीसिया को अपनी सफलता को किस प्रकार मापना चाहिए?

4. हमारे जीवन का भण्डारीपन

भाग 2 अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए कलीसिया को सशक्त बनाना

5. यीशु ने अपनी कलीसिया को नेतृत्व दिया है

6. कलीसिया के नेतृत्व में अंतर्निर्भरता

7. अमेरिकी कलीसिया के लिए अब क्या?

परिशिष्ट 1: परमेश्वर की कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को लागू करना

परिशिष्ट 2: हमारे उद्देश्य को दुनिया के अन्य जगह पर बढ़ाना

टिप्पणियाँ

प्रस्तावना

यह पुस्तक रेनोवेशनः डिवाइन डिजाइन इन द लाइफ ऑफ द चर्च का एक महत्वपूर्ण संपादन है, जिसे मैंने पहली बार 2010 में प्रकाशित किया था। इस छोटे संस्करण का उद्देश्य कलीसियाओं को उनकी कलीसिया के लिए और नेतृत्व करने वालों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का दर्शन प्राप्त करने के लिए एक सरल उपकरण प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त, जब से मैंने पहला खंड लिखा था, मैंने इसमें नेतृत्व, शिष्यत्व, और अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की अवधारणाओं पर अधिक विस्तार से लिखा था, और अब इन सभी विषयों पर अलग अलग पुस्तकें उन लोगों के लिए उपलब्ध हैं जो इन मामलों की गहराई को मापना चाहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि यह पुस्तक कलीसिया के जीवन में ईश्वरीय योजना पर एक मिसाल है।

मैं उन अवसरों के लिए बहुत आभारी हूँ जो मुझे पिछले वर्षों में पूरी दुनिया में युवा पुरुषों और महिलाओं को प्रभावित करने के लिए मिले हैं। वे युवा अब परिपक्व हो गए हैं और ऐसे कलीसियाओं का निर्माण कर रहे हैं जो परमेश्वर की योजना को प्रतिबिंबित करते हैं और उस प्रयास का नेतृत्व कर रहे हैं जिसे हम संतृप्ति कलीसिया रोपण कहते हैं–सुसमाचार के लोगों के द्वारा सुसमाचार की उपस्थिति से प्रत्येक स्थान को संतृप्त करना। आप सब को धन्यवाद। आप कई वर्षों पहले मेरे दिल पर रखे गए बोझ की पूर्णता हैंः जो ईश्वरीय अगुवों की एक पीढ़ी को बढ़ाने के लिए विश्व में सुसमाचार प्रचार के कार्य को अपने शहरों, राष्ट्रों और उससे आगे तक ले जाएँगे।

ड्वाइट स्मिथ
2 मार्च 2017

भाग 1

कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य

1

हम अपने राष्ट्र का इतिहास लिख रहे हैं

अमेरिका की कलीसिया भटक गयी है। हाल के वर्षों में हमने पुरे दो हजार वर्षों के उन हजारों मसीह अनुयायियों की बुलाहट और प्रतिबद्धता को भूला दिया है या अनदेखा कर दिया है, या नीचा भी किया है, जिन्होंने हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के भेजने की इस अंतिम आदेश को पूरा करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया हैः "तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ" (मत्ती 28:19 को देखिये)। परमेश्वर के इन महापुरुषों और स्त्रियों के दायित्व को लेने के बजाय, आज के पश्चिमी कलीसिया के अधिकांश लोगों ने लोगों को मसीह की ओर आकर्षित करने के प्रयास में, सुनहरी बातें करने वाले अगुवों, भव्य–गुणवत्ता वाले आराधना बैंड, बड़ी ईमारतों, और असंख्य सामाजिक कार्यक्रम के व्यवसाय के द्वारा प्रासंगिक बनने की कोशिश की है।

मैं इसे "आओ और देखो" रूपी नमूना कहना पसंद करता हूँ। हमारे दिनों में कलीसिया खुद को लोगों के इकट्ठा होने के स्थान के रूप में देखता है, जो अपनी ओर बड़ी मंडलियों को आकर्षित करता है। लेकिन आज हम जो करेंगे वह हमारे देश के इतिहास का हिस्सा बन जाएगा। क्या हम निश्चित हैं कि संयुक्त राज्यों की कलीसिया में हमने जो योजनायें बनाई हैं, वे पूरी तरह से बाइबल के स्तर के अनुसार हैं?

लगभग तीस साल पहले मेरी पत्नी, पैट्टी और मैंने सेचुरेशन चर्च प्लांटिंग सेवकाई (एससीपी) शुरू किया था। हमारा संदेश कोई नई बात नहीं है। यह केवल बाइबल की केंद्रीय कहानी का धर्म सैद्धान्तिक विस्तार है–कि परमेश्वर ने पापी लोगों को छुड़ाने और उन्हें उनके लिए उसके मूल उद्देश्य में पुनर्स्थापित करने और दो हजार वर्षों से कलीसिया ने अपने बारे में

जो कुछ भी समझा है उसके ऐतिहासिक विस्तार को पुनर्स्थापित करने के लिए एक उद्धारकर्ता को भेजा है।

बाइबल की कहानी वास्तव में काफी सरल है। यह उत्पत्ति में शुरू होता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अपने स्वरुप में बनाया। उत्पत्ति के वृत्तांत से हम देखते हैं कि, पहला, परमेश्वर से संबंधित होने के लिए और दूसरा, उस स्थान पर जहाँ उसने उन्हें रखा था, वहाँ उसके द्वारा सृजित सभी चीजों के सक्रिय प्रबंधन के द्वारा दुनिया में उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए मानवजाति की रचना की थी। हालांकि इसमें वे असफल रहे। उनकी विफलता के बाद से, परमेश्वर ने उनके पुनर्स्थापना को अपने हाथों में ले लिया, और यह कहानी पवित्रशास्त्र के पन्नों पर प्रकट होती है। परमेश्वर की दया और यीशु में एकपक्षीय कार्य के कारण, आत्मा के द्वारा, परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को उसकी रचना के अपने मूल योजना को पुनर्स्थापित करने के लक्ष्य के साथ अनुग्रह प्रदान कियाः ऐसा उसने उसके साथ संबंध रखने और उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए किया। धार्मिकता की पुनर्स्थापना इस संसार का अंत होगा, केवल थोड़े स्थानों में ही नहीं, वरन सम्पूर्ण नए जगत में, जिसमें धार्मिकता राज्य करेगी, और लोग उनके लिए परमेश्वर की योजना में बढ़ते जाएँगे और परिपक्व होंगे।

सुसमाचार का केंद्रीय संदेश यह है कि आदम और हव्वा में स्थित परमेश्वर के मूल स्वरुप में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को पुनर्स्थापित किया जा सकता हैः हमारे स्थान पर उसके पुत्र, अंतिम आदम की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा हम उसके साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं और उसका प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जिसका अर्थ है कि हम उसके और उसके राज्य की उपयोगिता के लिए पुनर्स्थापित हो गए हैं, जिसमें हम यीशु में अपने जीवन का विश्वासयोग्यता से प्रबंधन करने के द्वारा, हर उस स्थान पर जहाँ पवित्र आत्मा प्रतिदिन हमारी अगुवाई करता है, परमेश्वर की दया के संदेश का देहधारण बन जाते हैं। हमारा जीवन इस बात का सबसे स्पष्ट प्रमाण बन जाता है कि सुसमाचार में मानवता के पाप की स्थिति को ठीक करने की सामर्थ्य है।

जैसा कि परमेश्वर के लोगों की पिछली कई पीढ़ियाँ यह समझ चुकी हैं कि, परमेश्वर खोए हुए पुरुषों और स्त्रियों को अपने लिए छुड़ाने और उसके साथ संबंध और उसके प्रतिनिधित्व के लिए उन्हें पुनर्स्थापित करने के मिशन पर है। और इसी में उसकी कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य निहित हैः हम, जो पहले से ही छुड़ाए गए लोग हैं, इस मिशन में सेवक हैं। जब हम प्रतिदिन उसके वचन के द्वारा और जब तक हम पृथ्वी पर होते हैं तब तक अपने व्यक्तिगत और विशेष बुलाहट में उसका प्रतिनिधित्व करने के द्वारा परमेश्वर के साथ संबंध में होते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा करते हैं और दूसरों को उसमें पुनर्स्थापित करने के लिए आकर्षित करने के लिए उसके द्वारा उपयोग किये जाते हैं। परमेश्वर के लोगों के

द्वारा प्रत्येक घर, कार्यस्थल, समुदाय, शहर, और राष्ट्र को सुसमाचार के संदेश के साथ भर देने को एससीपी में हम संतृप्त इंजिलवाद कहते हैं।

इफिसियों 3:8–11 में पौलुस अपने लोगों के लिए परमेश्वर के इस उद्देश्य की घोषणा करता हैः "अनुग्रह दिया गया . . . ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।" अनंतता यीशु में परमेश्वर के चमत्कारी कार्यों का एक श्रोता है, और कलीसिया वह वर्तमान पात्र है जिसका उपयोग वह आत्मिक प्रधानों और अधिकारियों पर इसको प्रदर्शित करने के लिए करता है। इन सांसारिक क्रियाओं का ध्यान समय पर नहीं बल्कि अनंतता पर होता है; वे परमेश्वर के सनातन उद्देश्य में निहित हैं।

जब हम एससीपी में कलीसिया के बारे में बात करते हैं, तो हम कलीसिया करने के नये तरीके को फिर से शुरू करने की कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि एक भटकती हुई पीढ़ी को पवित्रशास्त्र की कहानी की याद दिलाते हैंः यह हमारे बारे में नहीं है; यह परमेश्वर और उसके छुटकारे के कार्यों के बारे में है। तब, कलीसिया, सुसमाचार में निहित इस छुटकारे के कार्य और उसके उद्धार के प्रस्ताव को उसकी शेष सृष्टि तक पहुँचाने के लिए परमेश्वर का वर्तमान साधन है।

जब हम नेतृत्व के बारे में बात करते हैं, तो हम एक भटकती हुई पीढ़ी को याद दिला रहे हैं कि नेतृत्व केवल एकमात्र उद्देश्य के लिए मौजूद हैः कलीसिया को एक सम्पूर्ण देह के रूप में और व्यक्तिगत सदस्यों के रूप में, पूर्ण रूप से और विश्वासयोग्यता से परमेश्वर की इस योजना में स्थानांतरित करना।

जब हम अपनी दुनिया के प्रत्येक संदर्भ में कलीसिया के लिए परमेश्वर के इस उद्देश्य को रणनीतिक रूप से लागू करने के बारे में बात करते हैं, तो हमने उन अन्य पीढ़ियों के विश्वासयोग्य अनुयायियों से जो सीखा है उसे स्थानांतरित कर रहें हैं, जिन्होंने उन जगहों पर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश की है जहाँ उनमें से प्रत्येक को सेवा के लिए बुलाया गया है।

मिशन पर परमेश्वर की कलीसिया

फिर से यह कहना चाहूँगा, कि यह शिक्षा नयी नहीं है। इस भण्डारीपन में भाग लेने के अपने लगभग पचास वर्षों में, मैं कम से कम तीन अन्य पीढ़ियों का पता लगा सकता हूँ जो हमसे

पहले जा चुकी हैं और जिनसे हमने सीखा है। पचास साल पहले, केनेथ स्ट्रैचन जैसे कई पुरुष संतृप्ति सुसमाचार प्रचार के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने पूछा, कि यदि कलीसिया ने अपने प्रयासों को एक विशिष्ट स्थान पर एक विशिष्ट समय के लिए एक साथ केंद्रित किया होता, तो क्या हम सुसमाचार को पूरी दुनिया तक ले जाने के कार्य को पूरा होते हुए देख सकते थे? उसने बहुत कुछ सीखा, उसने बहुत कुछ हासिल किया, लेकिन बहुत कुछ सीखा जाना बाकी रह गया था। अगली पीढ़ी ने इस अनुभव को अस्वीकार नहीं किया; उन्होंने इससे सीखा और उस सीख को आगे बढ़ाया।

मेरे जीवन के चालीस से अधिक वर्षों के लिए मुझे डोनाल्ड मैकगवरन जैसे पुरुषों के द्वारा सोचने और सीखने के लिए प्रेरित किया गया है, जिसने विश्वासियों को लोगों की गतिविधियों के बारे में सोचने के लिए आमंत्रित किया; राल्फ विंटर, जिसने यीशु के अनुयायियों को यह सोचने के लिए आमंत्रित किया कि दुनिया में कितने लोग हैं और उन तक पहुँचने में वे कितने दूर हैं; जिम मोंटगोमरी, जिसने परमेश्वर के लोगों को यह पूछने के लिए चुनौती दी थी कि क्या हर छोटी से छोटी जगह में एक कलीसिया स्थापित करने के द्वारा किसी व्यक्ति या स्थान को सुसमाचार से संतृप्त करना प्रभावशाली रूप से पूरा किया जा सकता है। कई और लोग अपनी–अपनी बारीकियों और परिवर्धन को लेकर आए, और मैंने उन सभी से सीखा।

इन पिछले चालीस वर्षों में यीशु मसीह की कलीसिया ने पूरी दुनिया में अभूतपूर्व वृद्धि का अनुभव किया है। जब मैंने लगभग पचास साल पहले इस भण्डारीपन में अपनी यात्रा शुरू की, तो कई लोगों ने महसूस किया कि सुसमाचार प्रचार का गिलास आधा खाली था। आज मैं एक ऐसी पीढ़ी का हिस्सा बनकर खुश हूँ जो उन बातों को देख रही है जिसके बारे में कई अन्य पीढ़ियों ने पूरा होने का सपना देखा, प्रतिक्रिया दी, और बलिदान कियाः अधिक से अधिक पुरुष और महिलाएँ वैश्विक स्तर पर मसीह के पास आ रहे हैं। हम दर्शन को जी रहे हैं!

मेरे जीवनकाल के दौरान आज की आशीष में योगदान करने के लिए परमेश्वर के द्वारा बड़ी सभाओं और परिणामी गतिविधियों का उपयोग किया गया है। बर्लिन में इंजीलवाद पर 1966 के विश्व सम्मेलन ने कलीसिया–रोपण गतिविधियों के श्रृंखला की शुरुआत की। डॉन मिनिस्ट्रीज के जिम मोंटगोमरी ने इस सम्मेलन को पूरे राष्ट्रों के लिए कलीसिया–रोपण की रणनीति के लिए अपनी खोज के लिए चिंगारी के रूप में उद्धृत किया। 1970 और 80 के दशक में लॉजेन की कई सभाओं ने दुनिया भर से पुरुषों और महिलाओं को आमंत्रित किया और दुनिया के बारे में और उस दुनिया तक पहुँचने के लिए उन्हें क्या करना होगा उसके बारे में मसीह की देह में एक नई चेतना उत्पन्न की। 'एडी 2000, कलीसिया रोपण संतृप्ति के लिए गठबंधन' जैसे आँदोलन, जो मसीह को नहीं जानने वाले लोगों के लिए आँदोलन था, और

इसके जैसे कई अन्य आँदोलन, पृथ्वी के छोर तक *मिसियो देई* रूपी परमेश्वर की योजना का विस्तार करने के लिए अस्तित्व में आए।

फिर भी यह पचास साल की छोटी समीक्षा लोगों और आंदोलनों के केवल एक छोटे से हिस्से को दर्शाती है जो पृथ्वी पर कलीसिया के दो हजार साल के जीवनकाल में चलाए गए हैं। जब प्रारंभिक कलीसिया बिखरी हुई थी (प्रेरितों के काम 8:1 को देखिए), तब प्रेरितों ने इस आंदोलन को शुरू किया, जिसमें थोमा ने भारत तक सुसमाचार को पहुँचाया और पौलुस ने पूरे रोमी साम्राज्य में प्रचार किया। पॉलीकार्प, उल्फिलास, पैट्रिक और कोलँबा जैसे लोगों के माध्यम से यह विस्तार कई सौ वर्षों तक जारी रहा। रोमन कैथोलिक कलीसिया में उन लोगों की कमी नहीं थी जो कलीसिया के द्वारा प्रेरितों को भेजने की प्रकृति को समझते थे। बोनिफेस, रेमंड लुल, मैथ्यू रिक्की, और कई अन्य लोगों ने सुसमाचार को दुनिया तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। मोरावियों ने प्रोटेस्टेंट रिफार्मेशन के बाद के शुरुआती दिनों में नेतृत्व किया और आधुनिक मिशनरी आँदोलन की स्थापना की, जो तीन सौ वर्षों तक जारी रहा।

आज कलीसिया अकेली नहीं खड़ी है। हम केवल एक सफल पीढ़ी हैं जिसका उपयोग परमेश्वर संबंध और प्रतिनिधित्व के लिए लोगों का पुनर्निर्माण करने के अपने मिशन को पूरा करने के लिए कर रहा है। हम कई अन्य लोगों के कंधों पर खड़े होते हैं, उनसे सीखते हैं और उस शिक्षा का विस्तार करते हुए आशा करते हैं कि सुसमाचार प्रचार का कार्य पूरा हो और धार्मिकता का संसार स्थापित हो जाए!

जैसा कि हम लगातार एससीपी की शिक्षाओं पर जोर देते हैं, कि परमेश्वर संसार में जो कुछ भी करेगा, वह मसीह के सारे लोगों के माध्यम से ही करेगा। मसीह के लोग दुनिया को, और स्वर्गीय स्थानों की रियासतों और शासकों को इस बात की घोषणा करने के लिए परमेश्वर की शानदार रचना हैं, कि हम उसके लिए और उसके उद्देश्यों के लिए बनाए गए हैं। परमेश्वर को विफल नहीं किया जाएगा। उसकी मूल रचना को उसके पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा पुरुषों और महिलाओं में पुनर्स्थापित किया जाएगा।

मसीही जीवन, परमेश्वर के राज्य में, आराधना के कार्य के रूप में निवेश करने के लिए ही है। लेकिन हमें इसे प्रभावी ढँग से निवेश करने के लिए, हमें अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर की प्रभुता के अधीन रहना सीखना चाहिए! परमेश्वर के लोगों में परमेश्वर के वचन का उपयोग करते हुए पवित्र आत्मा हम में परिवर्तन का काम करता है, ताकि हम अपने जीवन के इस निवेश को प्रस्तुत कर सकें। वह ऐसा हमें परमेश्वर के मूल और एकमात्र इरादे में पुनर्निर्मित करने के द्वारा करता है: वह अपने लिए ऐसे लोगों का निर्माण करता है जो उसके जैसे हैं, उसके लिए जीते हैं, और दुनिया में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। और क्योंकि

परमेश्वर ने हमें मसीह की देह का हिस्सा बनने के लिए रचा है, यह परिवर्तन हमारे जैसे अन्य लोगों के साथ उस देह की चमत्कारी संगति में आता है जिसे परमेश्वर ने अपना बनाया हैः कलीसिया।

जब परमेश्वर के पास अपना मार्ग होता है

"देखो परमेश्वर ने क्या किया है" की घटनाओं का हर पीढ़ी का अपना हिस्सा होता है! जब अपने लोगों के लिए उपाय करने और उनके माध्यम से दूसरों को अपने सुसमाचार की व्याख्या करने की बात आती है, तो हमारा परमेश्वर छोटे और बड़े चमत्कारों का परमेश्वर है। लेकिन उसके आदेश के संदर्भ में कि हम उसके सुसमाचार को सभी लोगों तक ले जाएँ, परमेश्वर हमारी पीढ़ी में इतिहास की किसी अन्य पीढ़ी की तुलना में अधिक कर रहा है।

सोलहवीं शताब्दी में सुधार के पीछे, प्रोटेस्टेंट मिशनों की एक नई लहर शुरू हुई थी। अठारहवीं शताब्दी के मध्य से लगभग 1900 तक इस आँदोलन का नेतृत्व यूरोपीय लोगों ने किया। मिशनों की यह लहर द्वितीय विश्व युद्ध तक जारी रही और संख्या के अनुसार, यह इतना था जितना कलीसिया ने पहले कभी नहीं देखा था, इसे मिशन में भेजने का सबसे बड़ा प्रयास कहा जा सकता है।

लेकिन बीसवीं सदी के अंत तक, पवित्र आत्मा कुछ नया उत्पन्न कर रहा था। कई राष्ट्रों से कई मिशनरी, जिनमें से कई गैर–पश्चिमी थे, दुनिया भर में सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजे जा रहे थे। यीशु की कलीसिया अपनी यहूदी और बाद में यूरोपीय जड़ों से दुनिया भर के देशों में फैल रही थी। दुनिया भर में लाखों मसीहीयों ने उस बात को प्रदर्शित किया जिसे उन्नीस सौ वर्षों की कलीसिया ने पहले कभी पूर्णता में नहीं देखा थाः यीशु मसीह की कलीसिया, हर जाति और भाषा और राष्ट्र से, दुनिया भर में सामर्थ्य और स्थायित्व के साथ स्थापित की जा रही थी।

इसका एक अच्छा उदाहरण भारत की कलीसिया है। 1987 में कलीसिया के सत्तावन अगुवों के एक समूह ने मुलाकात की और दो प्रश्न पूछेः परमेश्वर भारत के लिए क्या चाहता है? और यदि परमेश्वर ने वह किया होता जो वह इस देश में करना चाहता था, तो यह देश कैसा दिखता? दो हजार वर्षों तक कई लोगों ने उस देश की तेजी से बढ़ती हुई जनसँख्या के लिए सुसमाचार को लाने का प्रयत्न किया था; 85 करोड़ लोगों के देश में अन्य पीढ़ियों के द्वारा किया गया श्रम इन सत्तावन अगुवों में नहीं खोया था। इन प्रतिनिधियों ने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर चाहता था कि भारत में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को उसके साथ मेल–मिलाप करने का बार–बार अवसर मिले। जब उन्होंने स्वयं को इस कार्य में लगाया, तो

उन्होंने पाया कि जब परमेश्वर ने वह किया जो वह करना चाहता था तो यह कैसा दिखता है।

उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बावजूद, परमेश्वर के उद्धार के दमदार संदेश ने और सभी जातियों को चेला बनाने के लिए हमारे प्रभु के अंतिम आदेश ने उन्हें यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि वे अद्वितीय, दैवीय रूप से शुरू किए गए अवसर के क्षण में पहुँच गए हैं। इसलिए उन्होंने परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार किया और यह सुनिश्चित करने के लिए अपना मन लगा दिया कि भारत में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को सुसमाचार को समझने और उसकी प्रतिक्रिया देने का बार–बार अवसर मिले। उन्होंने ऐसा दस लाख नयी कलीसिया स्थापित करने के उद्देश्य से किया, या, जैसा कि उन्होंने इसे समझा, कि हर गाँव में और हर शहर के हर मोहल्ले में एक कलीसिया स्थापित हो। वे जानते थे कि भारत में सुसमाचार के साथ पूरी तरह से पहुँचने के लिए, यीशु के अनुयायियों का एक समूह होना आवश्यक था, जो प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे तक आसानी से पहुँच सकें।

उनके आज्ञाकारी विश्वास के परिणाम किसी चमत्कार से कम नहीं रहे हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पिछले तीन दशकों में, उस देश में मसीह को स्वीकार करने वाले मसीहीयों की सँख्या मसीही इतिहास में सबसे बड़ी कलीसिया बनाने जितनी बढ़ चुकी है, जो 2.5 करोड़ मसीहीयों से बढ़कर 15 करोड़ और 1987 में सिर्फ 100,000 से अधिक कलीसिया से बढ़ कर 600,000 से अधिक हो गई है।

राष्ट्रों को सुसमाचार के साथ बहते हुए देखने का ऐसा दर्शन मसीह की देह में नया नहीं है। पिछले चालीस वर्षों में फिलीपींस, भारत, ग्वाटेमाला और अन्य देशों में राष्ट्रीय कलीसियाओं के द्वारा इसी तरह के दर्शन का चयन किया गया है। उदाहरण के लिए, 1974 में फिलीपींस की कलीसिया को पता था कि परमेश्वर उन्हें उनके देश में उनके जीवनकाल में सभी तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए कह रहा था। उस समय उस देश में चार हजार से भी कम कलीसिया थी। अपने देश के बारे में उन्होंने जो किया था उसे जानते हुए, विश्वासियों ने माना कि वर्ष 2000 तक, हर पुरुष, महिला और बच्चे के लिए सुसमाचार को पूरी तरह से सुलभ बनाने के लिए कलीसिया को पचास हजार स्थानों पर होने की आवश्यकता होगी। विश्वास से, यह जानते हुए कि आगे उन्हें दशकों तक कड़ी मेहनत करनी होगी, उन्होंने इस दर्शन का दावा किया और इसे गंभीरता से लिया। और परमेश्वर की स्तुति हो, कि उसने वर्ष 2000 तक उन पचास हजार कलीसियाओं को स्थापित किया!

पश्चिमी कलीसिया क्या सीख सकता है?

पश्चिमी कलीसिया, जैसा कि हमने देखा, काफी हद तक उस तरह के दर्शन से भटक गया है जो यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ पूरे राष्ट्रों तक पहुँचने का प्रयास करता है। भारत और फिलीपींस जैसी कलीसियाओं में कुछ सिद्धाँत कौन से हैं जिन्हें वे यहाँ पश्चिम की कलीसियाओं को सिखा सकते हैं?

जब परमेश्वर एक राष्ट्र में कार्य करता है, तो वह स्वदेशी लोगों के माध्यम से कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर स्थानीय संदर्भों में स्थानीय लोगों का उपयोग करता है। सैचुरेशन चर्च प्लांटिंग (एससीपी) ने मिशनरियों को विभिन्न संस्कृतियों में इस अवधारणा का उपयोग करते देखा है। स्वदेशी लोगों के माध्यम से सुसमाचार का प्रसार सबसे महत्वपूर्ण तरीका है जिसमें परमेश्वर कार्य करता है। हर गाँव, हर मोहल्ले, हर शहर को इसमें यीशु के क्रूस के द्वारा परिवर्तित साधारण लोगों की आवश्यकता होती है। हर व्यवसाय में और हर गली में हमें यीशु के प्रेम को साझा करने वाले मसीह के अनुयायियों की आवश्यकता है। इस तरह परमेश्वर के द्वारा अपने पुत्र में दिए गए मेल–मिलाप के संदेश को किसी देश में मानवीय संबंधों के हर संदर्भ में देखा, छुआ और सुना जा सकता है। परमेश्वर के लोग यह घोषणा करते हुए कि कब्र वास्तव में खाली है सुसमाचार की कहानी के देहधारण बन जाते हैं।

जब परमेश्वर एक राष्ट्र में कार्य करता है, तो वह बड़े पैमाने पर कलीसिया की एकता के माध्यम से कार्य करता है। ऐसी बहुत चीजें हैं जो किसी भी राष्ट्र में कलीसिया के कई भावों को विभाजित कर सकता है। लेकिन कोई भी राष्ट्रीय कलीसिया जो यीशु के सुसमाचार के साथ अपने ही लोगों को पूरी तरह से चेला बनाता है, ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह उन शाश्वत वास्तविकताओं को समझता है जो हर मण्डली को उसकी सीमाओं के अंदर एकजुट करती हैं। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में कम सच नहीं है। यदि केवल 5.2 करोड़ अमेरिकी किसी भी रविवार को कलीसिया में हैं (जैसा कि शोध स्पष्ट करता है) और एक बहुत छोटा प्रतिशत ऐसा मसीही जीवन जी रहा है जैसा कि बाइबिल में दर्शाया गया है, तो लगभग 30 करोड़ अमेरिकियों को सुसमाचार सुनाये जाने या पुनः सुसमाचार सुनाये जाने की आवश्यकता है। संयुक्त राज्य में कलीसियाओं को विभाजित करने वाले मुद्दे लोगों की सुसमाचार के लिए जरूरत की तुलना में कमजोर हैं, यहाँ तक कि वहाँ भी जहाँ गहरे धार्मिक विश्वास मौजूद हैं।

जब परमेश्वर एक राष्ट्र में कार्य करता है, तो वह नयी कलीसियाओं की गुणात्मक वृद्धि करने के द्वारा कार्य करता है, न कि केवल मौजूदा कलीसियाओं के आकार को बढ़ाता है। हम इस पाठ को प्रेरितों के काम की पुस्तक से सीखते हैं, जहाँ कलीसिया की स्थापना करने के बारे में सिखाया या वर्णन भी नहीं किया गया है–यह माना जाता है! जैसे ही प्रेरितों और कलीसिया के सामान्य सदस्यों द्वारा सुसमाचार को रोमी दुनिया में लाया गया, लोगों ने इसके

प्रति प्रतिक्रिया दी। इन लोगों को तब कलीसिया माना जाता था, और उन्हें नए समुदायों में संगठित करने के लिए कदम उठाए गए जिन्हें कलीसिया या मण्डली कहा जाता था।

यह सीख स्पष्ट रूप से भारत और फिलीपींस में फलवन्त रूप से स्थापित की गयी स्थानीय कलीसियाओं के गुनात्मक वृद्धि से स्पष्ट है। लोगों से सुसमाचार की प्रतिक्रिया मिलने के लिए, इसे उनके गाँव तक पहुँचाया जाना चाहिए। ऐसा कई तरह से हो सकता है। हालाँकि, सबसे प्रभावी तरीका हमेशा उन लोगों के लिए रहा है जो भौगोलिक रूप से पास–पास के गाँव या शहर में रहते हैं, या एक ही स्थान में रहते हैं–स्थानीय मण्डली के रूप में वे अपने विश्वास को इस तरह से जीते हैं कि सुसमाचार को न सिर्फ सुना जा सके, बल्कि देखा जा सके, और महसूस किया जा सके। जब यीशु के अनुयायियों की देह लोगों के बीच सुसमाचार का देहधारण कर लेता है, तब एक देश में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे तक सुसमाचार पहुँचाया जा सकता है। हाँ, कुछ कलीसियाएँ काफी बड़े हो जाएँगे, लेकिन उनका आकार उनके अपने फायदे के लिए नहीं होना चाहिए। उनकी विशालता, उनके विशाल संसाधनों के साथ, अन्य गाँवों और पड़ोस में कलीसियाओं को अपनी पहुँच के अंदर स्थापित करने के लिए परमेश्वर के हाथों में एक उपकरण बनना चाहिए। हाल के शोध से पता चला है कि इस तरह के जीवन का निर्वहन करने वाली कलीसियाओं में उन कलीसियाओं की तुलना में तीन गुना तेजी से विकास होता है जो कि बस आकार में बड़े हो जाते हैं!

जब परमेश्वर एक राष्ट्र में कार्य करता है, तो वह लोगों को उनके स्थानीय क्षेत्र के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करने के द्वारा कार्य करता है। जब हम केवल किसी स्थान के लिए प्रार्थना करने के बजाय, किसी विशेष स्थान के लिए प्रार्थना करना शुरू करते हैं, तो हम विशिष्ट व्यक्तियों और परिवारों के लिए प्रार्थना और देखभाल करना शुरू करते हैं। जब हम किसी विशिष्ट स्थान पर विशिष्ट लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए समर्पित होते हैं, तो परमेश्वर उस स्थान पर जो कर रहा है, उसका हिस्सा बनने के लिए हमारा हृदय प्रेरित होता है। हम उस स्थान के लोगों के लिए सुसमाचार की आवश्यकताओं के उत्तर का भाग बनना चाहते हैं। प्रार्थना एक शक्तिशाली उपकरण है। परमेश्वर के द्वारा एक विशिष्ट स्थान और वहाँ के लोगों के लिए प्रार्थना का उपयोग पहले से मौजूद कलीसियाओं के माध्यम से हर गाँव और मोहल्ले में काम करने के लिए किया जाता है, और लोग यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति अधिक प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं।

इस प्रकार की प्रार्थना कलीसिया को अधिक एकता की ओर ले जाती है। यह हमें लगातार याद दिलाता है कि हमारे विभाजन प्रत्येक राष्ट्र में उन बहुत से लोगों की तुलना में फीका है जिन्हें अभी भी यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप करने के लिए बुलाए जाने की आवश्यकता है।

आइए अपने राष्ट्र का इतिहास लिखें

संयुक्त राज्य अमेरिका की कलीसिया की तुलना में आज कोई भी राष्ट्र अपनी पूरी आबादी तक सुसमाचार पहुँचाने का अधिक अवसर नहीं रखता है। ऐतिहासिक सँस्थाओं और राष्ट्र में निर्मित होने वाली कई नयी सँस्थाओं के बीच सहयोग की आज की बढ़ती भावना परमेश्वर के हाथों में एक बड़ा उपकरण हो सकता है। इस तरह की एकता को प्राप्त करना वास्तव में काफी सरल हैः अमेरिकी मसीहीयों को कलीसियाओं का एक आँदोलन बनना चाहिए जो यह मानने को तैयार हों कि इस राष्ट्र का पूर्ण अनुशासन हमारे जीवनकाल में प्राप्त करने योग्य है। हमें विश्वास करना चाहिए कि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप करने का बार–बार अवसर मिल सकता है।

इतिहास हमारे विचार के लिए कुछ महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को प्रदर्शित करता है।

सबसे पहले, हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि कलीसिया के बारे में हम जितना सोचते हैं यह उससे बड़ी है। हम स्वयं जो विश्वास करते हैं मसीह की देह केवल उन बातों पर विश्वास करने वाले लोगों से अधिक से बना है। हमारी धार्मिक प्राथमिकता नहीं, बल्कि पवित्रशास्त्र, प्रेरित है। परमेश्वर जो कहता है वह बिना त्रुटि के आता है। मनुष्य परमेश्वर के बारे में जो कहता है वह हमेशा कुछ त्रुटि के साथ आता है।

दूसरा, कलीसियाओं को एक साथ प्रार्थना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने पूरे राष्ट्र तक सुसमाचार पहुँचाने के आँदोलन के लिए यह आवश्यक है हमें अपने लिए प्रार्थना करने की नहीं बल्कि राष्ट्र में जो कुछ करने की आवश्यकता है उसके लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम पड़ोसी कलीसियाओं और सँस्थाओं पर आशीष की प्रार्थना नहीं करते हैं, लेकिन सबसे बढ़कर हम अपनी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के हृदय के साथ जोड़ते हैं, जो चाहता है कि हर पुरुष, महिला और बच्चे को सुनने, छूने, महसूस करने, और सुसमाचार की प्रतिक्रिया देने का अवसर मिले।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम एक साथ प्रार्थना कर सकते हैं। पड़ोस, शहर, या गाँव की मण्डलीयों के विशिष्ट क्षेत्र के लिए एक साथ प्रार्थना शुरू करने के लिए प्रत्येक सप्ताह या महीने में एक दिन निकालना सबसे प्रमुख है। इसके अलावा, हम कभी–कभी ऐसे दिन और स्थान नियुक्त कर सकते हैं जिनमें बड़ी संख्या में कलीसिया और अगुवे अपने शहरों, कस्बों और गाँवों के लिए प्रार्थना करने के लिए एक या उससे अधिक दिन के लिए साथ आ सकते हैं। अंततः, सँस्था के अगुवे अन्य सँस्थाओं के अगुवों के साथ मिलने के लिए अलग समय

निर्धारित कर सकते हैं, जिसका एकमात्र उद्देश्य राष्ट्र के उन स्थानों और लोगों के बारे में प्रार्थना करना है जहाँ सुसमाचार का प्रचार करने की आवश्यकता है।

तीसरा, हम सहयोगपूर्वक लक्ष्यों को अपना सकते हैं। हम सब एक साथ जुड़ सकते हैं और अपने विश्वास की पुष्टि कर सकते हैं कि परमेश्वर वास्तव में देखना चाहता है कि 30 करोड़ अमेरिकियों को उसके साथ मेल–मिलाप करने का बार–बार अवसर मिलता है।

अंततः, हम उन लोगों में शामिल होने के द्वारा अपने स्वयं के प्रयासों को दोगुना कर सकते हैं जिनका उपयोग परमेश्वर हमारे जीवनकाल में संयुक्त राज्य अमेरिका में पूरी तरह से सुसमाचार को पहुँचाने के लिए करता है। हम अन्य कई कलीसियाओं को कई कलीसियाएँ स्थापित करना सिखा सकते हैं। हम नयी कलीसियाओं की स्थापना को अपनी पहली प्रतिबद्धता बनाने के लिए और अधिक अगुवों को प्रशिक्षित कर सकते हैं। हम इस कार्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने विज्ञप्तियों, उपदेशों और कार्यक्रमों का उपयोग करके संदेश प्रदान करने में मदद करने के लिए अपने सभी संसाधनों को बेहतर बना सकते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी दुनिया में समय आ पहुँचा है। अवसर की ऐसी खिड़की हमेशा के लिए खुली नहीं रहेगी। हम एससीपी में प्रार्थना कर रहे हैं कि आने वाले वर्षों में इस कार्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर अपने लोगों के बीच समर्पण, एकता और संसाधनों का निर्माण करेगा। क्योंकि यह अब से अधिक सत्य पहले कभी नहीं रहा है–हम अपने राष्ट्र का इतिहास लिख रहे हैं।

2

कलीसिया का उद्देश्य क्या है?

आज दुनिया भर के लोगों के द्वारा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा जाता है कि कलीसिया का उद्देश्य क्या है? पश्चिमी कलीसिया नेतृत्व में कई लोग इसका उत्तर जानने का अनुमान लगाते हैं। लगभग हर प्रशिक्षण स्कूल के पाठ्यक्रम इस विषय का अध्ययन कराते हैं। स्थानीय कलीसिया के पास्टर इस पर उपदेश देते हैं। संबंधित कलीसिया सँस्थाएँ इस उत्तर का निश्चय देने वाले बहु–दिवसीय संगोष्ठियों के लिए पैक की गई महँगी सामग्री के साथ चमकदार विज्ञापन वितरित करते हैं। बड़ी कलीसिया के अगुवे दुनिया भर के खोए हुए और

भूखे लोगों के लिए आने और जवाब प्राप्त करने के लिए दिखाना–और–बताना सप्ताहाँत कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

लेकिन अगर पश्चिमी कलीसिया दुनिया में कलीसिया की भूमिका को सही मायने में समझता है, तो पश्चिम में कई दुखी लोग मसीहत का विरोध क्यों करते हैं? आँकड़े एक दिलचस्प कहानी बताने से ज्यादा बयाँ करते हैं। वे प्रचलन को प्रकट करते हैं, यदि वे अपरिवर्तित हैं, तो यह संकेत मिलता है कि पश्चिम में सँस्थागत मसीही स्थानीय कलीसिया जीवन का भविष्य सबसे अच्छे रूप में अप्रासंगिकता की ओर और सबसे खराब रूप में विलुप्त होने की ओर अग्रसर है। मुझे यहाँ गलत मत समझिए। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सुसमाचार मृत हो जाएगा या यीशु के अनुयायी पश्चिमी देशों में नहीं मिलेंगे। बल्कि, सैकड़ों वर्षों से हम जिन सार्वजनिक और सँस्थागत रूपों को जानते हैं, वे गहरे संकट में हैं।

यदि आप एक मिशनरी हैं या एक राष्ट्रीय कलीसिया के अगुवे हैं जो पश्चिम और उसकी समस्याओं से दूर है, तो आप सोच रहे होंगे, *इसका मुझसे क्या लेना–देना है?* इसका आपसे बहुत कुछ लेना–देना है, क्योंकि पश्चिमी विचार और कलीसिया के अभ्यास को सैकड़ों वर्षों से पूरी दुनिया में फैलाया गया है–और यह अब भी जारी है। हमारे पास जो बीज है, केवल वही है जिसे हम पुनः उत्पन्न कर सकते हैं। अगर हम पूरी दुनिया में हजारों और नयी कलीसियाएँ स्थापित करना चाहते हैं, तो पश्चिम में हमारे पास जो बीज है, वह प्रामाणिक रूप से बाइबल आधारित होना चाहिए और खुद को पुनः हजारों बार उत्पन्न करने में सक्षम होना चाहिए। हम खराब गुणवत्ता वाले बीज का रोपण नहीं कर सकते हैं जो सीधे भरोसेमंद प्रजनन के खिलाफ काम करता है और लगातार, फलदायी परिणाम की उम्मीद करता है।

मेरी खोज

मेरे स्वयं की लम्बी यात्रा ने मुझे कलीसिया को एक वस्तु के रूप में पहचानने से लेकर एक जीवित शारीरिक रचना के रूप में कलीसिया के बारे में नई खोजों और पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा हर जगह अपने आप को स्वाभाविक रूप से पुनः उत्पन्न करने के लिए परमेश्वर के उद्देश्य तक ले आया है।

जब मैं तीस वर्ष का था, तब तक मेरी पत्नी, पैट्टी, और मैंने सेवकाई में, पहले अमेरिका के एक स्थानीय कलीसिया में युवा लोगों के साथ काम करते हुए, फिर बाद में लैटिन अमेरिका में मिशनरियों के रूप में, और अंत में दक्षिणी कैलिफोर्निया की एक बढ़ती हुई कलीसिया में लगभग दस वर्ष बिताए थे। मैं अपने सपने को जी रहा था–वचन का प्रचार कर रहा था और सैकड़ों को मसीह की देह में जुड़ते हुए देख रहा था। मैं सोचता था कि अगर

कोई कलीसिया को समझता है, तो वह मैं हूँ। आखिरकार, क्या मैंने इफिसियों की पुस्तक पर एक लोकप्रिय शिक्षण श्रृंखला को हाल ही में समाप्त नहीं किया था?

लेकिन उस समय परमेश्वर ने, बिना आमंत्रण के, मेरी संतुष्टि पर आक्रमण किया। उसने मुझे यह सवाल पूछने के लिए मजबूर किया कि ये सभी लोग कहाँ से आ रहे हैं। मेरे निष्कर्ष असहज थे क्योंकि मैंने कुछ बातों को पहली बार देखा था। मैंने महसूस किया कि प्रभु मुझसे पूछ रहा है, "ड्वाइट, क्या तुमने मेरी कलीसिया को एक भंडार घर के रूप में बदल दिया है ताकि लोग आकर तुम्हारी बातों को सुनें और दूसरों को गाते हुए सुनें और दूसरों को सेवकाई करते हुए देखें?" मुझे लगा जैसे परमेश्वर मुझसे पूछ रहा है, "कलीसिया का उद्देश्य क्या है?"

मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मैं वास्तव में नहीं जानता था; और यदि मेरे साथी पास्टर मुझे मूर्ख नहीं बना रहे थे, तो उनमें से अधिकांश लोगों को भी नहीं पता था। इसके अलावा, इस अनुभव को प्राप्त करने से कुछ ही साल पहले स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मुझे एक ऐसा अंतर्ज्ञान था जिसके बारे में मेरे अधिकाँश प्राध्यापकों को भी नहीं पता था। मुझे इस सवाल का पूरी तरह से सामना करना पड़ाः अमेरिकी कलीसिया क्या थी, हम यहाँ किस लिए थे, और हमने कलीसिया की संरचना जिस प्रकार की थी उसका इस बात से क्या सम्बन्ध था? सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम अपने समुदायों और कार्यस्थलों में बिखरे हुए थे तो इससे हमारे आसपास के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्रचार, आराधना, छोटे समूह और यहाँ तक कि सुसमाचार प्रचार जितना महत्वपूर्ण था, मुझे विश्वास हो गया कि ये बातें कलीसिया का उद्देश्य नहीं थीं। जब मैंने विचार किया, मुझे इस बात का एक बेहतर विचार प्राप्त हुआ कि कलीसिया क्या नहीं थी, लेकिन कलीसिया के उद्देश्य के बारे में एक गहरी धारणा प्राप्त करने से पहले मुझे काफी साल हो गए थे। यात्रा में, परमेश्वर ने मुझे नेतृत्व पर महत्वपूर्ण सबक सिखाया जिसे मैं अपनी सेवकाई के प्रारंभिक दिनों में पूरी तरह से आत्मसात करने की स्थिति में नहीं था।

इस मुद्दे पर परमेश्वर की आत्मा के साथ मेरी अगली मुलाकात पहली मुलाकात के लगभग पाँच साल बाद हुई। 1979 के अक्टूबर की शुरुआत में, पैट्टी और मैंने खुद को एक नए कलीसिया स्थापना में शामिल पाया जो तेजी से हजारों लोगों में विकसित हुआ। हम दस वर्षों तक इस मण्डली का हिस्सा थे, और अंत में हम एक अन्य कलीसिया में नेतृत्व के लिए पहुँचे जो इसी मण्डली से स्थापित की गयी थी। हमारे यहाँ लगभग हर सप्ताह बपतिस्मा होता था, हमारी संख्या बढ़ रही थी, और पाँच साल के अंदर हम बाईस सौ लोगों तक बढ़ चुके थे। यदि किसी को प्रचार करते हुए सुनने के लिए सैकड़ों लोगों का एकत्रित होना सफलता का संकेत था, तो हजारों की संख्या का क्या अर्थ होगा? बड़ी भेंटें, बड़ी आराधना

सेवाएँ—हमारे पास वह सब कुछ था जो कोई भी नयी कलीसिया कभी चाह सकती थी। मुझे लगा कि शायद मेरे जीवन में पहली बार, मैं कलीसिया के वास्तविक उद्देश्य को समझने के करीब पहुँच रहा हूँ। आखिरकार, हमारी मंडली बढ़ रही थी, लोग उद्धार पा रहे थे, और हमारे पास एक मिशन कार्यक्रम था जो पूरे अमेरिका की कलीसियाओं के लिए ईर्ष्या का विषय था।

हालाँकि, ज्यादा समय नहीं हुआ था, उससे पहले परमेश्वर की आत्मा ने मुझे फिर से प्रश्न करने करने के लिए प्रेरित किया। मैं किसी भी तरह से उन लोगों के उद्देश्यों पर जो मेरे साथ सेवकाई में थे या उन अच्छी बातों पर जो हमारी कलीसिया में पूरी हुई थीं, सवाल नहीं उठा रहा हूँ। लेकिन मुझे बस यह पूछने के लिए प्रेरित किया गया, "वास्तव में यहाँ क्या हो रहा है?" मैंने कुछ चीजों का पता लगायाः पहला, हमारी कलीसिया में जोड़े गए अधिकाँश लोग अन्य मण्डलीयों से आए थे, और दूसरा, लोगों के द्वारा यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करने के छह महीने बाद, उनमें से बड़ी संख्या हमारी मण्डली में नहीं पाई गई।

इस समय के दौरान मैं अगुवों के एक समूह का हिस्सा था जो उस क्षेत्र की कलीसिया के बारे में जहाँ हम रहते थे, वही सवाल पूछ रहे थे, और हमारी संयुक्त खोजों ने हमारी अपनी कलीसियाओं में हमारे व्यक्तिगत निष्कर्षों को मान्य किया। हमने पाया कि हमारे क्षेत्र में हमारे आस—पास की आबादी की तुलना में विश्वासियों की संख्या घट रही थी। हमने यह भी पाया कि हमारे क्षेत्र में कलीसियाओं की संयुक्त वृद्धि का एक बड़ा प्रतिशत कलीसिया स्थानाँतरण से आया है। अंत में, हमने महसूस किया कि अगर हमारे क्षेत्र में हमारी कलीसियाओं में उपस्थित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति के बच्चे यीशु के अनुयायी बन जाएँ तो उससे जो वृद्धि होगी उसकी तुलना में कलीसियाओं की संयुक्त वृद्धि कम थी। हमने फिर से प्रश्न पूछा, कलीसिया का उद्देश्य क्या है?

इस सबने मुझे मसीह की देह के उद्देश्य के बारे में कुछ निश्चित विश्वासों को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के वचन की एक गंभीर खोज में वापस ले गया, जो मुझसे अब तक दूर था। जब मैंने खोज की, तो मैंने पाया कि केवल मैं ही उसकी कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की खोज करने वाला नहीं था; इतिहास उन पुरुषों और महिलाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने मसीह की देह के लिए परमेश्वर के सुंदर और प्रभावशाली रचना की खोज की है और उसे जीया है। मैंने जो खोजा—वह सत्य जिसे मुझसे पहले दूसरे लोग जानते थे—उसने कलीसिया के बारे में मेरे दृष्टिकोण और दुनिया के लिए परमेश्वर की योजना में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को हमेशा के लिए बदल दिया। मेरी कहानी का सबसे दुखद हिस्सा यह है कि उत्तर मुझसे कभी भी दूर नहीं थेः पौलुस ने इफिसियों की अपनी पत्री में लगभग उन सभी चीजों को स्पष्ट रूप से समझाया था जिसे हमें जानने की जरूरत है।

मुझे क्या मिला

दो हजार साल पहले परमेश्वर ने मानव इतिहास में चमत्कारिक रूप से हस्तक्षेप किया था, और उसके हस्तक्षेप में तीन पहलू शामिल थेः मसीह की मृत्यु, उसका पुनरुत्थान, और कलीसिया का निर्माण।

यीशु एक यहूदी दुनिया में, मानव रूप लेकर आया, जो मसीहा के आगमन के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। उसके शानदार आगमन का उत्साह ज्यादा समय तक नहीं रहा, कम से कम यह राजनीतिक स्वतंत्रता लाने के लिए पर्याप्त नहीं था। लेकिन स्पष्ट विफलता जीत के लिए परमेश्वर की बुनियाद थी। वह अधिकांश लोगों के लिए अपरिचित था, लेकिन अपने पुनरुत्थान के द्वारा यीशु यहूदियों के राजा से भी बढ़कर बन गया; वह दुनिया का उद्धारकर्ता बन गया। फिर, जब प्रेरितों के मन में एक बार फिर से जीत की उम्मीद जगी, तो यीशु को उनके बीच में से स्वर्ग की ओर उठा लिया गया। परन्तु उसके उठा लिए जाने ने मानव इतिहास में परमेश्वर के तीन चमत्कारी हस्तक्षेप के अंतिम भाग को निर्मित किया, जिसने इस त्रिएकता को पूरा कियाः कलीसिया का निर्माण, जैसा कि पौलुस इफिसियों 2:10–3:11 में बताता है। ये वचन बाइबल में कलीसिया के सम्बन्ध में पाई जाने वाली सबसे व्यापक कथन को प्रस्तुत करते हैं।

पद 2:11–18 में पौलुस हमें कलीसिया से परिचित कराता है। वह अपने अन्यजातिय पाठकों को याद दिलाता है कि वे पहले प्रतिज्ञा के उद्धारकर्ता और मसीहा के बिना आत्मिक निराशा में जी रहे थे। उनके लिए "मानवता" का कोई अर्थ नहीं था, क्योंकि वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों का हिस्सा नहीं थे। इस खालीपन में परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से यीशु को न केवल यहूदियों का बल्कि उन सभी का जो उसके नाम से पुकारते थे, उद्धार करने के लिए भेजकर हस्तक्षेप किया था। यीशु के द्वारा परमेश्वर ने वह किया जिसकी पृथ्वी पर किसी व्यक्ति ने अपेक्षा नहीं की थीः उसने अपने आप में यहूदी और अन्यजातियों दोनों का आपस में मेल–मिलाप कर लिया, इस प्रकार कलीसिया की रचना कीः "पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो . . . कि वह दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे" (इफि. 2:13–15)। कलीसिया मसीह की नई सृष्टि है; यह उसका है! पृथ्वी पर कोई भी मानवीय सँस्था परमेश्वर से संबंधित चीजों को परिभाषित या नियंत्रित करने का अनुमान नहीं लगा सकता है, न ही इसकी अनुमति दी जानी चाहिए।

वचन 2:19–22 में पौलुस हमें परमेश्वर की नई सृष्टि की अनूठी प्रकृति को प्रकट करने के लिए इस चमत्कारी सत्य को निर्मित करता हैः

> इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।

इन चार पदों की छोटी सी अवधि में, पौलुस चार रूपकों के माध्यम से परमेश्वर के कार्य का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ता हैः परमेश्वर के चमत्कारी हस्तक्षेप ने यहूदी और अन्यजातियों को समान रूप से एक नई राष्ट्रीयता प्रदान की है; वे परमेश्वर के लोग हैं। उसने उन्हें एक नई वंशावली, यीशु की वंशावली दी है, और वे एक नया परिवार हैं। उसने उनमें से एक नया निवासस्थान बनाया है, एक ऐसा मंदिर जिसमें परमेश्वर स्वयं निवास करता है। पुराने नियम का आराधना केंद्र और गतिविधि परमेश्वर के नए शरणस्थान में स्थानांतरित हो जाती हैः मसीह की देह, कलीसिया!

उसके लोगों में परमेश्वर के निवास की प्रकृति अनोखा है। यह देह उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की सेवकाई और लेखों के द्वारा परमेश्वर के वचन के प्रकाशन पर निर्मित किया गया है। यीशु स्वयं संरचनात्मक प्रतिरुप है जो यह निर्धारित करता है कि यह नया मंदिर कैसा दिखेगा। मसीह के सभी लोग व्यक्तिगत रूप से (1 कुरि. 6:19 देखिये) और सामूहिक रूप से भी (इफि. 2:20–21 देखिये) परमेश्वर का निवासस्थान हैं। इस नए सामूहिक मंदिर के अंदर, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को वहाँ रखता है जहाँ वह चाहता है कि वह हो। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर एक गुणात्मक विशिष्टता बनाए रखते हुए, परमेश्वर का सिद्ध निर्माण प्रत्येक व्यक्ति को उस व्यक्ति के रूप में विकसित होने की सबसे बड़ी क्षमता प्रदान करती है जो वह चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति हो। तब लोग अपने आस–पड़ोस और बाजारों में या जहाँ कहीं भी वे रहते हैं और काम करते हैं मसीह की ज्योति को प्रज्जवलित कर सकते हैं।

दुनिया भर में पवित्र आत्मा व्यक्तियों, परिवारों और स्थानीय कलीसियाओं के इस प्रसार का उपयोग मसीह की देह में जोड़ने के लिए करता है। मसीह तब वापस आएगा जब सुसमाचार की यह सेवकाई, जो मसीह के प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा पवित्र आत्मा के माध्यम से जिया और बोला जाता है, अपनी सम्पूर्ण कार्रवाई को पूरा कर लेगी (मत्ती 24:14 देखिये)।

यद्यपि मसीह के लोग परमेश्वर के मंदिर को निर्मित करने के लिए एक साथ जुड़े हुए हैं, प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसा व्यक्ति बना रहता है जो अनोखे तरीकों से बढ़ता और परिपक्व होता रहता है। इस प्रकार मसीह के लोगों में से प्रत्येक की बढ़ती आत्मिक परिपक्वता और संपूर्ण रूप में परिपक्व होती हुई देह भी परमेश्वर के सुसमाचार संदेश को इस तरह से प्रस्तुत करता है कि हमारे आस–पास की दुनिया में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को परमेश्वर के

शुभ संदेश को सुनने, समझने और स्वीकार या अस्वीकार करने का अवसर मिलता है। यह बढ़ती हुई आध्यात्मिक परिपक्वता वह रूप है जिससे कलीसिया का संख्यात्मक विकास हो सकता है। इस प्रकार परमेश्वर ने अपने देह की रचना की है; यह एक आनुवांशिक प्रतिरुप है जिसे उसने कलीसिया की कार्यप्रणाली में बुना है।

यह स्वाभाविक रूप से कलीसिया के बारे में पौलुस के अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशन की ओर ले जाता हैः "यह अनुग्रह हुआ . . . ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी" (इफि. 3:8–11)। कई बार परमेश्वर की इस नई रचना का भव्य लेकिन सरल उद्देश्य अत्यधिक संरचित संस्था में खो जाता है जिसे आज बहुत से लोग कलीसिया कहते हैं। यहाँ पौलुस की घोषणा से, हम पाँच महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को देखते हैं।

शुरू से ही परमेश्वर का एक ही उद्देश्य रहा है। पौलुस परमेश्वर के उद्देश्य की इस विलक्षणता पर जोर देता है–लोगों को पाप से छुड़ाना और उन्हें उसके साथ संबंध और उसके प्रतिनिधित्व के लिए पुनर्स्थापित करना–न केवल उसके व्याकरण के चुनाव के द्वारा (परमेश्वर के उद्देश्य का बहुवचन के बजाय एकवचन होना) बल्कि भूतकाल में परमेश्वर के छिपे हुए कार्य का उल्लेख करने के द्वारा भी इसे स्पष्ट करता है। यद्यपि यह अस्पष्ट हो सकता है, फिर भी यह आदम और हव्वा के पाप करने के बाद से ही पुरे इतिहास में स्वयं काम कर रहा है। इस क्षण से पहले जो कुछ भी गुजर गया वह तैयारी थी, और इसके बाद जो कुछ भी आने वाला है वह पूर्णता है।

पृथ्वी पर इस समय के लिए परमेश्वर के पास केवल एक ही उपकरण हैः कलीसिया। परमेश्वर जो कुछ भी पड़ोस, शहरों, राज्यों और यहाँ तक कि दुनिया के राष्ट्रों में करने वाला है, उसे वह मसीह के प्रत्येक व्यक्ति के माध्यम से करेगा। सुसमाचार की कहानी को जीने और कहने से किसी को भी नहीं छोड़ा जा सकता है। अब जब यीशु परमेश्वर के दाहिनी ओर है, तो वह अपने प्रत्येक अनुयायी के द्वारा अपने अनुग्रह की कहानी सुनाएगा। इस कार्य में कोई भी तुच्छ नहीं है; कोई भी अनावश्यक नहीं है।

मसीह में परमेश्वर के कार्य का रहस्यमयी अनुग्रह (इफि. 3:8 देखिये) मसीह के प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा विशेष, अनोखी, संपूर्ण, और अंततः सार्वभौमिक अभिव्यक्ति प्राप्त करेगा। विश्वासियों की अपनी अनुग्रह कहानियों को बताने की यह सेवकाई विशेष है क्योंकि मसीह के प्रत्येक व्यक्ति ने इसे ग्रहण किया है–दूसरे शब्दों में, मसीह के प्रत्येक अनुयायी को अपनी कहानी दूसरों के साथ साझा करने के लिए बुलाया गया है। यह अनोखी है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ने इसे अपने तरीके से ग्रहण किया है; हर व्यक्ति की कहानी किसी और की कहानी के

समान नहीं है; हर एक के बिना यह अधूरा है, और उन सभी के साथ यह उस पूरी कहानी को बयाँ करता है जिसे परमेश्वर बताना चाहता है। इस प्रकार, यह संपूर्ण है क्योंकि सभी व्यक्तिगत कहानियाँ किसी दिन सम्पूर्ण कहानी में जुड़ जाएँगी। अंततः यह सार्वभौमिक है क्योंकि अनुग्रह के सुसमाचार का प्रचार पूरी दुनिया में किया जाएगा। हर जाति, भाषा और राष्ट्र के लोग इसके द्वारा परिवर्तित होंगे।

परमेश्वर के अनुग्रह का यह विशेष, अनोखी, संपूर्ण और सार्वभौमिक प्रदर्शन समय से परे रहने वाली अदृश्य शक्तियों के लिए अनंत रहस्य है। शैतान इसे नहीं समझता है। शैतान और उसके दुष्टात्मा पाप और दण्ड को जानते हैं, परन्तु वे अनुग्रह को नहीं समझ सकते हैं। हालांकि, जिब्राईल और स्वर्गदूत की सेना, परमेश्वर के पुत्र मसीह को जानते हैं, और वे मानते हैं कि लाखों कलीसियाओं के अंदर, मसीह के प्रत्येक लोग, अनुग्रह के रहस्य का एक विशेष और सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है।

पौलुस का यह कथानक पाप के कारण खराब हुई एक अच्छी योजना को बचाने के प्रयास में परमेश्वर के द्वारा एक क्षणिक स्वभाविक प्रतिक्रिया को प्रकट नहीं करता है। इसके बजाय, यह सटीक रूप से चीजों के लिए परमेश्वर के अनंत क्रम के समान हो जाता है। प्रभु न केवल मसीह के प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा अनुग्रह के रहस्य को मूर्त रूप में प्रदर्शित कर रहा है, बल्कि वह इसे अनंत काल के लिए भी पूरा कर रहा है।

मेरा निष्कर्ष

अंत में मैं परमेश्वर की योजना को देखने में सक्षम था! मसीह की कलीसिया लोगों को प्रचार करने या आराधना सेवाओं के लिए इकट्ठा करने के लिए भंडार घर नहीं है। यह लोगों को अच्छे चारित्रिक गुणों के बारे में सिखाने के लिए कार्यक्रमों की प्रस्तुति करने वाला मौलिक क्लब नहीं है। यह हमारे लिए अच्छे मित्र और संगति खोजने के लिए एक सामाजिक क्लब नहीं है। ये सभी कलीसिया के कार्य के उचित परिणाम हो सकते हैं, लेकिन वे कलीसिया का अंतिम उद्देश्य नहीं हो सकते हैं और न ही होने चाहिए। परमेश्वर हमें जहाँ भी बुलाता है वहाँ मसीह की कलीसिया के प्रत्येक सदस्य के द्वारा सुसमाचार को जीना ही हमारा उद्देश्य है।

कई विश्वासी कलीसिया में परमेश्वर की रचना की जटिलता से नहीं बल्कि इसकी सरलता से अभिभूत हैं। लोग कलीसिया में सँस्थागत संरचना के लिए शोर मचाते हैं क्योंकि वे सुरक्षा चाहते हैं, और नेतृत्व का पालन होता है क्योंकि वे महत्व की तलाश करते हैं। मसीह की देह को संरचना की आवश्यकता है, और सुरक्षा और महत्व पाप नहीं हैं। लेकिन जब संरचना संस्था की ओर ले जाती है, और जब लोग सुसमाचार के साथ दुनिया के उद्देश्यपूर्ण

जुड़ाव से ज्यादा सुरक्षा को चुनते हैं और अगुवे मसीह के लोगों की मापी गई शक्ति से ज्यादा संस्थागत महत्व का चयन करते हैं, तो कलीसिया पाप का शिकार हो जाता है। जब नेतृत्व ऐसा होने देता है, तो वे पवित्र आत्मा के अलावा, उस एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण साधन को काट देते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमें दुनिया से जुड़ने के लिए दिया हैः उसके लोग।

मेरी सारी शोध ने मुझे चार निष्कर्षों तक पहुँचाया जो उस नींव का निर्माण करते हैं जिससे हम मसीह के सभी लोगों को इस्तेमाल कर सकते हैं, नई कलीसिया स्थापित कर सकते हैं, और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि किसी भी पड़ोस, शहर, क्षेत्र या राष्ट्र में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे के पास यीशु में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रस्ताव को सुनने, समझने और प्रतिक्रिया करने का अवसर प्राप्त हो।

पहला, परमेश्वर इस संसार में जो कुछ भी करेगा, उसे वह मसीह के सारे लोगों के द्वारा ही करेगा।

दूसरा, परमेश्वर जो कुछ भी मसीह के सारे लोगों के द्वारा इस संसार में करेगा, उसे वह ऐसे नेतृत्व के माध्यम से करेगा जो मसीह के लोगों को सशक्त बनाने के कार्य को उच्च प्राथमिकता देता है।

तीसरा, जो कुछ भी परमेश्वर मसीह के सारे लोगों के द्वारा संसार में करेगा, उसे वह मुख्य रूप से एक विकेन्द्रीकृत नेतृत्व संरचना के माध्यम से करेगा।

चौथा, परमेश्वर संसार में जो कुछ भी करेगा, उसे वह स्थानीय कलीसियाओं के माध्यम से करेगा जो सुसमाचार और उसके विस्तार के लिए जाने, भेजने, सहभागी होने, सहयोग करने, और जिम्मेदार ठहरने में सीधे तौर पर शामिल है।

जवाबदेही का एक चक्र निर्मित करना

मेरी खोज ने मुझे कलीसिया के बारे में और नेतृत्व के कार्य के बारे में एक और निष्कर्ष पर पहुँचाया कि इसे इसके ईश्वरीय उद्देश्य में इस्तेमाल करना हैः जब वे मसीह के लोगों को सशक्त बनाते हैं, तो नेतृत्व की ओर से व्यक्तिगत धोखे की सम्भावना, मजबूत होती है।

कलीसिया के बारे में पश्चिमी कलीसिया का धर्मशास्त्र हमारे दिनों में इतना कमजोर और अधूरा है कि अगुवों को भी यह विश्वास हो जाता है कि किसी भवन या कार्यक्रम में जो भी हो रहा है वह मसीह के लोगों और दुनिया दोनों के साथ उनकी प्रभावशीलता का एक वैध माप है। यह भ्रम लोगों और अगुवों पर समान रूप से अपना जादू बिखेरता है, जिससे हमें

ईमानदारी से विश्वास हो जाता है कि अगर लोगों को हमारी कलीसियाओं में जोड़ा जा रहा है, या हमारे लोग संतुष्ट हैं, या हमारी मंडलियाँ आत्मा से भरी हुई हैं, तो हम मसीह की कलीसिया के रूप में अपना उद्देश्य पूरा कर रहे हैं।

वास्तव में, जैसा कि हम आज पश्चिम में देखते हैं, लोग परमेश्वर के साथ अपनी सारी घनिष्ठता खो रहे हैं। हम यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि भले ही हमारे शहरों में कलीसिया की संख्या कम हो रही है, अगर हमारी अपनी कलीसिया बढ़ रही है या संतुष्ट है, तो हमें ठीक होना चाहिए। वास्तव में, यह सोचने से ज्यादा कि हम ठीक हैं, हमें यह विश्वास कराके धोखा दिया जाता है कि हमारी कलीसिया दूसरों के अनुकरण के लिए एक आदर्श है।

जैसे–जैसे मैंने कलीसिया के बारे में बाइबल आधारित विश्वास प्राप्त किए, मुझे उन विश्वासों का एक रणनीतिक अनुप्रयोग विकसित करना पड़ा ताकि यह सोचकर खुद को धोखा न दिया जा सके कि परमेश्वर का उद्देश्य हमारे बीच में पूरा किया जा रहा है, जबकि वास्तव में हो सकता है कि हमारी वृद्धि झुँड मनोविज्ञान और भँडारण से अधिक कुछ भी नहीं है। मैं इस रणनीतिक अनुप्रयोग को "जवाबदेही का चक्र" कहता हूँ।

जवाबदेही का एक चक्र बनाने का अर्थ है पवित्र आत्मा से हमारी स्थानीय मण्डलियों को हमारे चारों ओर एक भौगोलिक क्षेत्र प्रदान करने के लिए कहना जिसमें हम यह सुनिश्चित करने के लिए अपने सभी संसाधनों को सशक्त और इस्तेमाल कर सकें कि एक विशिष्ट समय सीमा में प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को सुनने, समझने, और यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार या अस्वीकार करने का अवसर मिल सके।

हमें मसीह के विश्वास में आने वालों को एक स्थानीय कलीसिया के जीवन में शामिल होने के लिए सक्षम करने की भी आवश्यकता है जो उन्हें उनके स्वयं के याजकीय अधिकार का अभ्यास करने के लिए सशक्त बनाता है (1 पतरस 2:9 देखिये) और इस प्रकार स्वर्गीय पिता के साथ घनिष्ठता में बढ़ते है, और उन सभी रिश्तों में जिन्हें परमेश्वर की आत्मा ने उन्हें दिया है, अनुग्रह की अपनी अनूठी कहानियों को उन्हें बताने के लिए उन्हें सशक्त बनाता है और जवाबदेह ठहराता है, और उन्हें उनके आत्मिक वरदानों की पहचान करने और उन्हें कलीसिया में, और सबसे महत्वपूर्ण बात कि दुनिया में, जहाँ वे अपना अधिकाँश समय व्यतीत करते हैं, इस्तेमाल करने के लिए एक वातावरण प्रदान करता है।

जवाबदेही का चक्र मुझे विरासत में प्राप्त कलीसिया के धर्मशास्त्र के ठीक विपरीत है। मेरी शुरुआती सोच ने हमारी कलीसिया की प्रभावशीलता को एक विधि के द्वारा मापा, जिसे मैं "अंदर से बाहर की ओर सोच" कहता हूँ–इसके द्वारा कि हम बढ़े या नहीं। मैं अपनी कलीसिया को एक मानदंड के रूप में इस्तेमाल करता था और कई बार संतुष्ट, सुरक्षित और यहाँ तक कि आत्मतुष्टि से परिपूर्ण महसूस करता था। हमारे लोग कहाँ से आए थे और

कलीसिया के बाहर अपने रिश्तों में अपने विश्वास के साथ वे क्या कर रहे थे, यह द्वितीयक था।

दूसरी ओर, बाहर से अंदर की ओर सोच ने, मुझे पूरे समुदाय की वास्तविकताओं के बीच में, जिसमें हम रहते हैं, और उसी समुदाय में मसीह की व्यापक देह के सहयोग में कलीसिया के सुसमाचार के उद्देश्य के अनुसार, हमारी कलीसिया का मूल्याँकन करने के लिए प्रेरित किया। मूल प्रश्न यह बन गया था, कि क्या हम उस समुदाय तक पर्याप्त मात्रा में सुसमाचार पहुँचा रहे हैं जिसमें हम रहते हैं? और यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे मापना आसान है।

तो, हमारे लिए केवल एक ही प्रश्न बचा है, कि कितने प्रतिशत ऐसे लोगों से हम संतुष्ट होंगे जो हमारी कलीसियाओं में भाग लेते हैं और अपने विश्वास के साथ कुछ नहीं करते हैं? उस प्रश्न का हमारा उत्तर यह निर्धारित करेगा कि हमारी कलीसियाओं के लोग क्या विश्वास करते हैं कि उनका उद्देश्य क्या है और क्या हम वास्तव में उस दुनिया से जुड़ सकते हैं जिसमें हम रहते हैं।

3

कलीसिया को अपनी सफलता को कैसे मापना चाहिए?

आदि में परमेश्वर ने नर और नारी को अपने स्वरूप में बनाया। पुरे ब्रह्माँड में कुछ भी मानवीय सृष्टि की अनूठी संरचना के समान नहीं है; न जानवर, न प्राकृतिक दुनिया, न ही स्वर्गदूत। ब्रह्माँड की बाकी सारी चीजों से अलग, परमेश्वर ने आदम और हव्वा और उनकी सँतानों को दो स्पष्ट उद्देश्यों के लिए बनाया थाः उसके साथ सम्बन्ध में होने और उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए।

सम्बन्ध और प्रतिनिधित्व का यह संदेश पुरे बाइबल के पन्नों में पाया जाता है। व्यवस्था प्रदान करने में, मूसा ने सम्बन्ध के बारे में लिखा हैः "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना" (व्यवस्थाविवरण 6:4–5), और संसार में परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के बारे में लिखा हैः "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूँ" (लैव्य. 19:18)।

जब यीशु से पूछा गया तो उसने भी वही कहाः

"हे गुरू; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" उस ने उस से कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" (मत्ती 22:36–40)

प्रेरित पौलुस 2 कुरिन्थियों 5:17–20 में भी इस संदेश को दोहराता है: "इसलिए यदि कोई मसीह में है (सम्बन्ध), तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गयीं हैं; देखो, सब बातें नयी हो गयीं हैं। . . . इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं (प्रतिनिधित्व), मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है।"

कलीसिया का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह देखना है कि लोग परमेश्वर पिता के साथ अपने संबंधों में बढ़ रहे हैं। जब कलीसिया यह पूछने में विफल रहता है कि क्या ऐसा हो रहा है, तो ऐसा करना कितना भी असहज या मुश्किल क्यों न हो, यह अपने प्राथमिक कार्य में विफल रहता है। जब कलीसिया नियमित रूप से परमेश्वर के उद्देश्य की प्रभावशाली तलाश को मापने में विफल रहता है और वह जो कर रहा है वह वास्तव में सहयोग और सहायता प्रदान करता है, तो यह अपने प्राथमिक कार्य में विफल रहता है।

कलीसिया का दूसरा कार्य विश्वासियों को परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए मजबूत और सक्षम बनाना है। वह प्रतिनिधित्व लोगों के जीवन के कुल योग को व्यक्त करना चाहिए। यह परमेश्वर के साथ उनके संबंध से ऊपर उठता है, उनमें पवित्र आत्मा के निवास के द्वारा विकसित होता है, उनके द्वारा लिए गए निर्णयों में सहमति पाता है, और उनके आसपास की दुनिया के लोगों के साथ उनके संबंध में फैलता है।

हम इस बात को कैसे मापते हैं कि क्या कलीसिया प्रभावशाली रूप से लोगों को परमेश्वर के साथ संबंध और उसके प्रतिनिधित्व में सशक्त कर रहा है? पवित्रशास्त्र परिपक्वता की ओर अग्रसर विश्वासी के जीवन में उसे जिसे मैं "प्रारम्भ मूल्य" कहता हूँ उसकी कम से कम पाँच बातों को प्रकट करता है। पहला संबंध के बारे में है; अंतिम चार प्रतिनिधित्व के बारे में बताता है। ये प्रारम्भ मूल्य महत्वपूर्ण और गैर–समझौतायोग्य हैं। वास्तव में, यदि वे लोग जो एक कलीसिया के रूप में एकत्रित हुए हैं, अपने दैनिक जीवन में इन मूल्यों को पोषित करने के लिए छोटे कदम भी नहीं उठा रहे हैं, तो हो सकता है कि उनके पास वास्तव में एक कलीसिया न हो। यदि लोग अच्छे प्रचार, अच्छी आराधना, अच्छे कार्यक्रमों, या अच्छी इमारतों के लिए कलीसिया में आते हैं, लेकिन परमेश्वर के सारे वचनों से परे जाकर उन मूल्यों में समरूपी और मापने योग्य वृद्धि का सबूत नहीं देते हैं, तो उनके पास कलीसिया नहीं है।

इन पाँच गैर–समझौतायोग्य प्रारम्भ मूल्यों के ढाँचे में कलीसिया की "सफलता" को मापने से यह निर्धारित होगा कि हमारे पास वास्तव में एक कलीसिया है, न कि केवल एक धार्मिक सभा। ये पाँच मूल्य एक मापक के रूप में भी काम करते हैं कि क्या कलीसिया वास्तव में मसीह के लोगों को इन मूल्यों को जीने के लिए सशक्त बना रहा है या केवल "आओ और देखो" प्रतिरुप को पुनः स्थापित कर रहा है जो आज अत्यधिक प्रचलित है। आइए उनकी जाँच करें।

प्रारम्भ मूल्य 1: परमेश्वर के साथ घनिष्ठता विकसित करना

पवित्रशास्त्र की पहली बुलाहट, और इस प्रकार सबसे महत्वपूर्ण प्रारम्भ, परमेश्वर के साथ संबंध विकसित करना है। सिर्फ किसी भी तरह का संबंध नहीं बल्कि करीबी, घनिष्ठ संबंध। परमेश्वर के साथ संबंध के बिना हम अपने आस–पास की दुनिया के लोगों के सामने उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जब एक कलीसिया लोगों का समर्थन करता है और उनसे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में चलने की अपेक्षा करता है, तो वह अपना काम कर रहा होता है।

हमें परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में बुलाया गया है:

> मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से ऊबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। और मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। (भजन संहिता 40:1–3)

भजनहार का यह निमंत्रण हमें चुनौती देता है कि हम अपने पिता परमेश्वर के साथ एक गहरे संबंध में प्रवेश करें। लेकिन अक्सर हमारे आस–पास का संसार उन लोगों के दिमाग और दिलों पर अफीम का काम करती है जो परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध चाहते हैं। शायद आज की संस्कृति मीडिया के प्रसार के कारण, पहले की तुलना में अधिक पापी है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि पहले की तुलना में आज विश्वासी परमेश्वर के साथ संबंध के कहीं अधिक संकट का अनुभव कर रहे हैं।

इनमें से कुछ लोग नाममात्र के मसीही हैं। वे वही प्रतीत होते हैं जिनसे यीशु एक दिन कहेगा, "मैंने तुमको कभी नहीं जाना" (मत्ती 7:23)। वे मसीहत के रूपों का अभ्यास करते हैं लेकिन यीशु के द्वारा प्रतिज्ञा किए गए किसी भी बदलाव या सामर्थ्य को प्रदर्शित नहीं करते

हैं। ये लोग वास्तव में कलीसिया में रहकर कलीसिया के जीवन के लिए खतरा पैदा करते हैं। जहाँ एक बार हमने उन्हें केवल उदारवादी कलीसियाओं में देखा होगा, आज वे कई इंजीलवादी कलीसियाओं को भी भरते हैं।

अन्य लोग यथार्थ रूप में परमेश्वर के साथ एक गहरे संबंध की इच्छा रखते हैं लेकिन वे व्यस्त रहते हैं। ये वे लोग हैं जो संस्कृति के अफीम के तहत सबसे अधिक पीड़ित हैं, ये लोग भौतिकवाद, सांसारिक प्रभावों, दुनिया की चिंताओं में फंस गए हैं। उनका पुरस्कार पवित्रशास्त्र की सच्चाई के साथ सूखेपन की बढ़ती भावना है जिसे वे अभी भी धारण करते हैं। यदि वे बहुत सी कलीसियाओं के कार्यक्रमों के द्वारा पेश की गई मसीहत के रूपों से अधिक कुछ भी अनुभव करना चाहते हैं, तो उनके जीवन की वास्तविकता की जाँच क्रम में है।

शेष विश्वासियों के लिए, स्वयं को परमेश्वर के लिए त्याग देने की बुलाहट एक आशाजनक निमंत्रण बना हुआ है। जब वे उन क्षणों को याद करते हैं जो उन्होंने परमेश्वर के साथ बिताए थे, तो वे प्रोत्साहन, चुनौती, और यहाँ तक कि सुधार को भी गर्मजोशी के साथ याद करते हैं। उन क्षणों में उन्हें एहसास होता है कि परमेश्वर पूरी तरह से विश्वासयोग्य है और खुद को उसके लिए त्याग देना कोई जोखिम नहीं है।

लेकिन मसीह के इन समर्पित अनुयायियों को इस परित्याग को गहरा करने के लिए आवश्यक समय और अनुशासन को लगातार बनाए रखना चाहिए। परमेश्वर के साथ संबंध को गहरा करना यूँ ही नहीं हो जाता; इस पर काम किया जाना बहुत जरुरी है। मसीही कार्यक्रमों की विधियों और यीशु के साथ संबंध निर्मित करने के लिए आवश्यक अनुशासनों के बीच स्पष्ट अंतर करने के लिए मैं कहता हूँ कि "काम किया गया" और "काम नहीं किया गया"।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठता कहाँ से शुरू होती है? 2 कुरिन्थियों 5:20 में पौलुस हमें बताता हैः "हम तुम से मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप कर लो।" परमेश्वर के साथ घनिष्ठता इस स्वीकृति से शुरू होती है कि हमें पहले परमेश्वर के साथ उसके पुत्र के द्वारा मेल–मिलाप करना चाहिए।

फिर से, यह संदेश सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र से आगे बढ़ जाता है। यह उत्पत्ति 1 की सृष्टि की कहानी में निहित हैः मनुष्य का जन्म परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध में हुआ था, लेकिन पाप ने उसे प्रभु से अलग कर दियाः अब यीशु में, हम उसके साथ उस संबंध को पुनः स्थापित कर सकते हैं। यीशु का भी यही संदेश है। हम इसे मत्ती 20:20–28 और यूहन्ना 17 में स्पष्ट रूप से देखते हैं। पुराने नियम में सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा यह है कि हम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे हृदय, सारे मन और सारे प्राण से प्रेम करें, और इसीलिए यीशु इस पृथ्वी पर आयाः ताकि हम उस पिता और पुत्र को जान सकें जिसे उसने भेजा था (यूहन्ना 17:3 देखिये)। मसीहत इस नींव से शुरू और समाप्त होता है, अन्यथा इसे मसीहत

नहीं कहा जा सकता है। कलीसिया को इसे व्यवसाय का पहला क्रम बनाना चाहिए, अन्यथा यह लोगों का समय बर्बाद कर रहा है।

जबकि मेल–मिलाप हमें परमेश्वर के साथ संबंध में ले जाता है, हम उसके बाद एक समस्या को पाते हैंः हम परमेश्वर के साथ अपने संबंध में पाप को लाते हैं। हाँ, यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में हमारे पाप पर विजय प्राप्त की गई थी, लेकिन जब तक हम मरकर स्वर्ग नहीं जाते, तब तक हमारे पापमय मजदूरी के अवशेष उस सम्बन्ध के खिलाफ युद्ध करते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए योजनाबद्ध किया था जब उसने हमें रचा था। जब हम ईर्ष्या, चुगली, बदनामी और अन्य परीक्षाओं के साथ लड़ते हैं तो पाप हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करता है। ये लोगों के साथ, यहाँ तक कि हमारे परिवारों में पाये जाने वाले लोगों के साथ भी, हमारे संबंधों को नुकसान पहुँचाते हैं। इनमें से कुछ पाप हमारे जीवन में जितने लंबे समय तक हावी रहते हैं, वे उतने ही अधिक घाव पैदा करते हैं। लेकिन जिससे हमें आज विजय प्राप्त करने की जरूरत है, परमेश्वर के पास उसका उपाय है, साथ ही साथ उसके पास अतीत की क्षति के लिए चंगाई है।

किसी भी सम्बन्ध की तरह, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को बनाए रखने और मजबूत करने के लिए आवश्यक अनुशासनों की आवश्यकता होती है। हम ऐसी कामना कर सकते हैं कि उद्धार के समय विजय प्राप्त करने वाली सामर्थ्य हमारा तात्कालिक प्रकृति बन जाए और अतीत के सभी क्षति दूर हो जाए। लेकिन परमेश्वर की प्रतिज्ञा ऐसा नहीं है। मैं पवित्रशास्त्र को कम से कम चार अनिवार्य संबंधात्मक अनुशासनों का समर्थन करते हुए देखता हूँ जो परमेश्वर के साथ एक गहरी घनिष्ठता की हमारी इच्छा को मजबूत करेंगे।

पहला अनुशासन बाकी सभी अनुशासनों के लिए मंच तैयार करता है और यह उस चंगाई की नींव है जिसे परमेश्वर हमारे जीवन में लाना चाहता हैः परमेश्वर के वचन में बिताया गया समय। परमेश्वर का वचन किसी भी अन्य लिखित शब्द से अलग हैः "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण, और आत्मा को, और गाँठ गाँठ, और गूदे गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है" (इब्रा. 4:12)।

परमेश्वर का वचन जीवित है क्योंकि यह परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है। इस प्रकार यह उन लोगों के जीवन में लगातार सक्रिय होता है जो इसमें प्रवेश प्राप्त करते हैं। परमेश्वर के वचन का सरल पठन पाठक के दिल और दिमाग में एक सक्रिय बीज को बोता है। अक्सर किसी चीज या किसी व्यक्ति के द्वारा न्यूनतम निवेश के साथ अविश्वासी को यह दृढ़–विश्वास, पश्चाताप और उद्धार की ओर ले जा सकता है। यही नये जन्म का कार्य हममें से उन लोगों के लिए भी होता है जिनका पहले से ही परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप हो चुका है, लेकिन

उसके साथ हमारे संबंध को निर्मित करने की आवश्यकता होती है। वचन, नियमित रूप से हमारे पढ़ने और अध्ययन के द्वारा हम में बोया जाता है, हमारी असलियत को उजागर करता है, जैसा कि इब्रानियों का लेखक स्पष्ट करता है। वचन हमें स्वयं को देखने के लिए स्वतंत्र करता है—गाँठ गाँठ, गूदा गूदा, प्राण, और आत्मा को—जैसा परमेश्वर हमें देखता है।

कई लोगों के लिए यह परिदृश्य डर से भरा हुआ है। परमेश्वर की भेदने वाली आँख के सामने इतना उजागर होने को, खुद की एक स्पष्ट तस्वीर को देखने को, सँभाल पाना हमारे लिए बहुत अधिक है, इसलिए हम छिप जाते हैं। अक्सर हम अच्छी चीजों में छिपते हैं—जैसे कि कलीसिया जाना। हम किसी और के साथ सम्बन्ध के बारे में गीत गाने या उपदेश देने में ज्यादा सहज होते हैं, जितना कि हम खुद संबंध बनाने में होते हैं। हमें डर है कि परमेश्वर सहित किसी पर भी हमारे बारे में इतने गहरे ज्ञान के साथ भरोसा नहीं किया जा सकता है या जब हम वचन में देखते हैं तो हम जो देखते हैं वह हमें पसंद नहीं आता है। तो हम लज्जित होकर छिप जाते हैं।

लेकिन छिपना हमारी पीड़ा को बढ़ाता है, हमारे चोट को कठोर करता है, और सबसे बुरी बात यह है कि यह हमें चंगा होने से रोकता है। इस दुनिया में और कुछ भी हमें परमेश्वर के समान उसके वचन के द्वारा चंगा नहीं कर सकता है। कुछ भी नहीं! यह इब्रानियों की प्रतिज्ञा है। हमें इस बात को जानने की आवश्यकता हैः हमारे स्वयं का खुलासा जो आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर के वचन को नियमित रूप से पढ़ने के प्रति समर्पित होने से आता है, हमेशा हमारे महायाजक यीशु के साथ होता है, जो हमें अपनी धार्मिकता के वस्त्र पहनाता है। उसके वस्त्र पहनकर, हम बेनकाब हो जाते हैं लेकिन दोषी नहीं ठहरते हैं। यीशु ने हमारे लिए सारे दोष को ले लिया है। इसलिए परमेश्वर के वचन को नियमित रूप से पढ़ने के लिए, हमें आमंत्रित किया जाता है क्योंकि हम स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति में पाये जाते हैं। उस उपस्थिति में हमें वह मिलता है जिसकी हमें आवश्यकता होती हैः करुणा, जो हमारे पास यीशु में मौजूद क्षमा की याद दिलाता है, और अनुग्रह, जो परमेश्वर के चंगाई की सामर्थ्य है जो हमारे जीवन पर लागू होती है।

यह प्रक्रिया सिर्फ एक बार के लिए नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता था? यदि परमेश्वर ने किसी एक क्षण में हमारे जीवन के सारे धब्बों का खुलासा कर दिया होता, तो क्या हम वास्तव में इसे सह सकते थे? हमें परमेश्वर के साथ एक निरंतर संबंधात्मक अनुशासन में परमेश्वर के वचन के लिए समय निकालना चाहिए। जबकि अधिकांशतः परमेश्वर हमें प्रोत्साहन और आनंद प्रदान करेगा, क्योंकि वह सबसे अच्छी तरह जानता है, वह हम पर इस बात का खुलासा भी करेगा कि हम कौन हैं और हमें अभी भी कहाँ चंगाई की आवश्यकता है।

परमेश्वर के साथ संबंध एक जीवित चीज है। वचन को पढ़ना हमें ऐसे ज्ञान का आधार प्रदान नहीं करता है जो समय–समय पर प्रभु के साथ हमारे संबंधों को नजरअंदाज करने की अनुमति देता है। जब हम परमेश्वर के साथ संबंध के इस सबसे बुनियादी अनुशासन को पोषित करने में विफल होते हैं, तो हम पीछे हट जाते हैं। सत्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सम्बन्ध की जगह नहीं ले सकता है। इसके अलावा, केवल सत्य मात्र ही हमें उस उत्साह को खोने से नहीं रोकेगा जो परमेश्वर स्वयं हमें प्रदान करता है, हमें चल रहे चंगाई के कुछ भी चीज की आवश्यकता नहीं है। इन बातों को हमारे स्वर्गीय पिता के साथ घनिष्ठ संबंध में पोषित किया जाना चाहिए।

दूसरा संबंधात्मक अनुशासन मौन है। निर्गमन 14:14 में मूसा ने इस्राएलियों को स्मरण दिलाया, "यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो।" भजन संहिता 37:7 में भजनकार हमें स्मरण दिलाता है, "यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है!" और भजन संहिता 46:10 में हमें एक बार फिर कहा गया है, "चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं परमेश्वर हूँ।"

हमारी शोर–शराबे वाली दुनिया में अक्सर ऐसा लगता है जैसे शाँत जगह ही नहीं हैं। लेकिन मौन हमारे लिए हर तरफ उपलब्ध है–अगर हम इसे चुनते हैं। मैंने पाया है कि एक व्यस्त हवाई अड्डे में भी मुझे मौन मिल सकता है। हो सकता है कि मुझे कहीं दूर जाना पड़े या किसी दूर जगह पर बैठना पड़े, लेकिन अगर मुझे जो चाहिए वह मौन है, तो मैं इसे पा सकता हूँ।

मौन एक विकल्प है। इसका मतलब है कि हमारे आस–पास की दुनिया के शोर को बंद करना जो हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए शोर कर रहा है। टीवी, रेडियो, अच्छी किताबों और लोगों के लिए एक अलग समय है। लेकिन गहरी सोच और चिंतन तभी विकसित हो सकता है जब हम मौन को चुनना और अभ्यास करना सीखते हैं।

मौन में हम नये आनन्द को प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के वचन को पढ़ने के अनुशासन के माध्यम से हमारे हृदयों में जो वचन बोए गए हैं, उनके पास हमारे हृदयों और मनों को नए अर्थों से भरने का अवसर होता है। हमारे चारों ओर परमेश्वर की दुनिया की सुंदरता हमें उसकी सामर्थ्य और प्रभुता के बारे में बताती है। सबसे बढ़कर, हम एक बार फिर से परमेश्वर की उपस्थिति से रोमांचित हो जाते हैं।

मौन में अधिक समय बिताये बिना परमेश्वर के साथ संबंध के रहस्य में प्रवेश करने का मुझे दूसरा कोई रास्ता नहीं मिला। मौन का अभ्यास न करने के लिए हम सभी प्रकार के कारण ढूँढ सकते हैं, लेकिन फिर से, मौन एक विकल्प है। परमेश्वर के साथ हमारा संबंध तब

तक अधूरा रहेगा जब तक हम उसके साथ मौन की नियमित अवधियों का अभ्यास करना नहीं सीखते हैं।

तीसरा संबंधात्मक अनुशासन एकाँत है। मत्ती 14:23 उन कई स्थानों में से एक है जहाँ हम स्वयं यीशु को अकेले रहने का चुनाव करते हुए पाते हैं: "वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चला गया; और साँझ को वह वहाँ अकेला था।" शायद इससे ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है: अगर यीशु ने एकाँत की तलाश की, तो क्या यह हमारे लिए कम जरूरी है? अगर हमारी संस्कृति में चुप रहना हमारे लिए मुश्किल है, तो अकेले रहना शायद और भी कठिन है। यदि हम लंबे समय तक परमेश्वर को उसके वचन के द्वारा सुनने में असफल रहे हैं, तो यह हो सकता है कि हम वास्तव में स्वयं के साथ अकेले नहीं रहना चाहते हों। शायद स्वयं की खोज का डर हमें अकेले रहने की इच्छा से रोकता है। या शायद यह है कि हम अपने चारों ओर की संस्कृति के मनोरंजन में अपना सबसे बड़ा "आनंद" पाते हैं। हमारी कठोर संस्कृति व्यावहारिक रूप से हमें अकेले समय बिताने, शांत रहने और चिंतन में यह पता लगाने से रोकती है कि हमारी संस्कृति धुएँ और दर्पण से ज्यादा कुछ नहीं है।

एकाँत में हमें मौन के साथ–साथ परमेश्वर के वचन को सक्रिय रूप से सुनने का समय भी मिलता है। एकांत में हमें इस पृथ्वी पर हमारे छोटेपन और हमारी अस्थायी स्थिति की याद दिलाई जाती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि एकाँत में हमें याद दिलाया जाता है कि हम इस संसार के लिए नहीं बने हैं। पाप का प्रभाव इस पृथ्वी पर हावी है। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने हमारे लिए जो संसार बनाया था, यह वही है जिसके लिए हम सृजे गए हैं, और यह वही है जिसमें हम पुनर्स्थापित किए जाएँगे। एकाँत हमें अपने जीवन की दिशा को पुनः तैयार करने के लिए आवश्यक क्षण प्रदान करता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एकाँत में हमें पता चलता है कि हम अकेले नहीं हैं। परमेश्वर वास्तव में साथ है।

अंतिम संबंधात्मक अनुशासन समर्पण है। समर्पण परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में आवश्यक और समृद्ध बनाने योग्य है। इब्रानियों 12:9 हमें स्मरण दिलाता है कि "फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें।" इब्रानियों 5:7 में हमें स्मरण दिलाया जाता है, "यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार–पुकारकर, और आँसू बहा–बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनती की और भक्ति (या समर्पण) के कारण उसकी सुनी गई।" यीशु के अपने शब्द अधीनता के महत्व को प्रदर्शित करते हैं: "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार अब मुझे दिया गया है। तुम जहाँ भी जाओ, लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। ऐसा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देने के द्वारा

और उन्हें जो कुछ भी सिखाया जाएगा उन्हें उसका पालन करने के लिए सिखाने के द्वारा करो" (मत्ती 28:18–20, मेरी व्याख्या)।

"समर्पण" शब्द पर गलतफहमी और डर का आरोप लगाया गया है। पौलुस के इस कथन को भी उतना ही गलत समझा गया है कि वह यीशु का दास था। यदि परमेश्वर इस ग्रह का प्रधान सृष्टिकर्ता है, जैसा कि उत्पत्ति का दावा है, यदि उसने भयानक और अद्भुत रीति से हमें रचा है, जैसा कि भजनकार दावा करता है, और यदि सृष्टिकर्ता को यह उम्मीद करने का अधिकार है कि उसकी रचना उसके प्रेमपूर्ण बुद्धि की प्रतिक्रिया देगी, तो कैसे हो सकता है हम उसके प्रति पूरे दिल से और ऐच्छीक समर्पण को उसके साथ हमारे संबंधों का एक स्वाभाविक बहाव होने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं?

यीशु और पौलुस दोनों ने समर्पण के वास्तविक स्वरूप को समझा। उनका समर्पण उस व्यक्ति के साथ संबंध और विश्वास की वास्तविकता में निहित था जिसे वे घनिष्ठ रूप से जानते थे।

परमेश्वर हमें उस पर भरोसा करने के लिए आमंत्रित करता है। पवित्रशास्त्र के अनुशासनों, मौन, और एकाँत का अभ्यास, सभी विश्वास को बढ़ाते हैं; वास्तव में, उस व्यक्ति पर भरोसा करना जिसे हम बाइबल में पाते हैं, स्वाभाविक है। जब हम हमारे जीवन में उसकी बुलाहट की बातचीत करते हैं, तो उस बिंदु तक पहुँचना हमारा लक्ष्य होना चाहिए, जहाँ पर परमेश्वर के प्रति समर्पण हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह न केवल परमेश्वर के वचनों के प्रति आज्ञाकारी रूप से प्रतिक्रिया करने के लिए हमारी ऐच्छीक प्रवृत्ति की माँग करता है जब वे हमारे पास आते हैं, बल्कि हमारी भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में आज्ञाकारिता को सीखने की इच्छा की भी माँग करता हैं।

परमेश्वर ने अपने वचन में जो कुछ भी प्रकट किया है उसकी सच्चाई और विश्वसनीयता के प्रति आश्वस्त होना हमारे मन में आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति को भड़काता है। लेकिन परमेश्वर को उसके वचन के द्वारा, मौन में, और एकाँत में सुनना सीखना उसके प्रति आज्ञाकारी प्रतिक्रिया को बढ़ाने का काम करता है जिसे वह हमारे दिलों में चाहता है।

हमारे चारों ओर की दुनिया और हमारे अंदर का शरीर, दोनों शैतान और उसके सेवकों द्वारा उत्तेजित होकर, हमें स्वर्गीय पिता के साथ संबंधों के रहस्य में खुद को स्वतंत्र करने से रोकने की साजिश करते हैं। लेकिन हजारों वर्षों से उन लोगों के जीवन में जो प्रत्यक्ष जोखिम उठाने के लिए तैयार रहे हैं, अपने आप को परमेश्वर के लिए त्यागने का निमंत्रण बना हुआ है।

प्रारम्भ 2: अपने अनुग्रह की कहानियाँ सुनाना

नए नियम में दूसरा प्रारम्भ मूल्य इफिसियों 3:1–11 में पाया जाता है: हमारे दैनिक जीवन में हमारे आस–पास के लोगों के लिए अपने अनुग्रह की कहानियों को जीना और मौखिक रूप से व्यक्त करना। यहाँ हम इस समय और अनंत काल के लिए कलीसिया के उद्देश्य की स्पष्ट और सरल घोषणा पाते हैं:

> मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊँ, और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। (इफि. 3:8–10)

हमने इस परिच्छेद के महत्व को इस पुस्तक के अध्याय 2 में देखा। कलीसिया का उद्देश्य उन लोगों को सुसमाचार के संदेश को सुनाना है जिनके बीच हम दैनिक आधार पर रहते हैं, और प्रत्येक विश्वासी अपने अनुग्रह की अनूठी कहानी, या परमेश्वर ने उसके जीवन में जो कुछ किया है उसकी व्यक्तिगत गवाही का विस्तार करके ऐसा करता है।

कलीसिया का उद्देश्य, जिसे पौलुस द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है, यदि इस दृश्य को सांसारिक रंगमंच पर अनन्त श्रोताओं के लिए प्रदर्शित किया जाता है, तो इसमें प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी को शायद ही कम किया जा सकता है। स्थानीय कलीसिया की प्रभावशीलता का दूसरा माप प्रत्येक व्यक्ति के अनुग्रह की कहानी की बढ़ती अभिव्यक्ति में किसी भी और सभी सम्बन्ध में पाया जाना चाहिए जिसमें परमेश्वर की आत्मा हमें ले जाती है। यदि कलीसिया में जाने वाले अधिकाँश लोग इस प्रारम्भ में नहीं बढ़ते हैं, तो कलीसिया अपना काम नहीं कर रहा है।

प्रारम्भ 3: हमारे आत्मिक वरदानों का प्रयोग करना

यदि आत्मिक वरदान प्रदान करने में परमेश्वर का आत्मा सर्वोपरि है, तो यदि लोग इन वरदानों की समझ और उपयोग में वृद्धि नहीं कर रहे हैं, तो कलीसिया एक बार फिर, अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य को पूरा नहीं कर रही है। पवित्र आत्मा वरदानों का उपयोग परमेश्वर के लोगों के माध्यम से उन कई सेवकाईयों को रणनीतिक अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए करता है जिन्हें यीशु पूरा करना चाहता है। कलीसिया और दुनिया में अपनी नियुक्ति में

एक भी व्यक्ति की परिपक्वता को खोना उस रचनात्मक प्रतिभा को कम करना है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए नियोजित किया है। इस प्रकार तीसरा प्रारम्भ मूल्य हमारे घरों और कार्यस्थलों में आत्मा के वरदानों को जीना है।

इसके अलावा, तथ्य यह है कि इन वरदानों को अधिक सटीक रूप से वर्णित किया जा सकता है क्योंकि विशिष्ट तरीकों से हमारे द्वारा काम करने वाली आत्मा का अर्थ है कि वे हर जागृत क्षण में सक्रिय होते हैं, क्योंकि जब हम यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ संबंध में आते हैं, तो हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हो जाते हैं। ये वरदान कलीसिया के कार्यक्रमों को शक्ति प्रदान करने के लिए नहीं बल्कि कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के लिए दिए गए हैं।

परमेश्वर की प्रतिभा को मसीह के लोगों के दैनिक वितरण में उनके आस–पड़ोस और दुनिया भर के बाजारों में देखा जाता है क्योंकि आत्मा अनुठे और शक्तिशाली रूप से प्रत्येक को वरदान प्रदान करता है। विशेष स्थान हो या व्यवसाय कोई फर्क नहीं पड़ता। चूँकि परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा उसके सभी लोगों में धड़कता है, हर जगह जहाँ हम रहते हैं और काम करते हैं, गवाही के लिए और उद्धार की प्रतिज्ञा में प्रत्येक के विशेष हिस्से को जीने के लिए एक जगह बन जाती है। आत्मा के वरदान की सेवकाई आत्मा के द्वारा नियंत्रित और संचालित होते हैं, जो प्रत्येक विश्वासी के लिए और उनके माध्यम से प्रस्तुत होते हैं।

यह कुछ मसीहीयों को अजीब लग सकता है, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि कई लोगों ने हमारे जीवन में आत्मा की इस विशेष अभिव्यक्ति को गलत समझा है। ऐसे विश्वासियों ने कार्य के सिद्धान्त से संबंध खो दिया है जो इस वास्तविकता से आता है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं और उसकी सृष्टि की देखभाल करने और वह सब कुछ जो वह हमारे हाथों में देता है, उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाये गये हैं। उन्होंने अनंत काल से संबंध खो दिया है, और इस प्रकार वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने, उसकी संपत्ति का प्रबंधन करने, और उसकी महिमा और उसकी प्रतिज्ञा को अपने जीवन के केंद्र के रूप में दिखाने के महत्व को खो देते हैं। इन सभी बातों ने कलीसिया की समझ को वरदानों को एक ऐसे कार्यक्रम को संचालित करने के लिए आवश्यक शक्ति के रूप में बना दिया है जो बड़े पैमाने पर अन्य मसीहीयों के द्वारा और उन्हीं के लिए है चलाया जाता है। हमारा अपना जीवन और, सबसे महत्वपूर्ण बात, परमेश्वर का स्वरूप जो उसके लोगों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, इसी की वजह से असहाय हैं।

प्रारम्भ 4: आत्मा के फल का प्रदर्शन करना

चौथा प्रारम्भ मूल्य एक दूसरे के साथ और दुनिया के हमारे संबंधों में आत्मा के फल को प्रदर्शित करना है। गलातियों 5:22–23 में पौलुस इन पारस्परिक गुणों को सूचीबद्ध करता है: "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।" ये मसीह के लोगों में रहने वाली आत्मा के स्वाभाविक परिणाम हैं और इन्हें परिपक्वता और अभिव्यक्ति में लगातार विकसित होना चाहिए।

जो लोग अपने विवाह, परिवार और मंडलियों में आत्मा के फल में बढ़ रहे हैं, वे पृथ्वी पर इस बात का सबसे शक्तिशाली प्रमाण व्यक्त करते हैं कि यीशु अपने लोगों में जीवित है। इन रहस्यमय पारस्परिक संबंधों की उनकी बढ़ती अभिव्यक्तियाँ उस अनोखी शक्ति को प्रदर्शित करती हैं जो उनमें से प्रत्येक में रहती है।

इस फल की अभिव्यक्ति में जो मसीह के लोगों में अवतरित हुई और उनके आसपास की दुनिया में देखी गई, इसमें दमदार सामर्थ्य है। यह याकूब की बात है: "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें" (याकूब 1:27)। पूरे इतिहास में कलीसिया, जब अपने स्वामी के साथ संगठित हुआ है, तो यह दुनिया के लिए एक रहस्य रहा है। यह संसार, संसार के असुरक्षित लोगों पर बहुत कम ध्यान देती है, लेकिन कलीसिया अपनी दुनिया में सभी लोगों को शामिल करने के तरीके ढूँढता है और वास्तव में, लोगों में चंगाई उत्पन्न करने के लिए लगन से काम करता है। यह दुनिया में इंजीलवाद के काम के लिए सबसे दमदार नींव है।

मैं पवित्रशास्त्र में कहीं नहीं देखता कि हम मसीह के आगमन से पहले संसार की प्रणालीगत समस्याओं को अनिवार्य रूप से ठीक कर सकते हैं। लेकिन यह स्पष्ट है कि हमें सबसे जघन्य मानव प्रणालियों में फंसे लोगों को छूने, चंगा करने और उनका छुटकारा करने की आवश्यकता है। यह कलीसिया की सामर्थ्य है। स्थानीय कलीसियाओं में अपने–अपने स्थान पर अनाथालयों, ड्रग–पुनर्वसन केंद्रों, और भोजन–प्रदाय कार्यक्रमों को बड़ी लगन से महान आज्ञा का पालन करते हुए देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

स्थानीय कलीसियाओं को अपने लोगों में आत्मिक पारस्परिक विकास का समर्थन और मापन करना चाहिए ताकि वे अपने उन लोगों के शिकार न हों जो स्वर्ग से जुड़े होने का दावा करते हैं जबकि स्वर्ग की बुलाहट के अनुसार जीवन कम ही जीते हैं। एक इच्छुक स्थानीय कलीसिया के लिए ऐसा करना कठिन नहीं है, खासकर यदि उसके पास किसी भी प्रकार की छोटी–समूह के समान कोई सेवकाई है जिसमें उसके अधिकाँश लोग शामिल हैं। ऐसे लोगों पर केंद्रित परिदृश्य में हमें आत्मा के फल को कलीसिया के अंदर संबंधों में कार्य करते हुए देखने की अपेक्षा करनी चाहिए। कलीसिया को उन शहरों और मोहल्लों की जरूरतों

का भी समर्थन करना चाहिए जिनमें हमारी मंडलियाँ स्थित हैं और अपने लोगों को उनके इलाके में प्रत्येक उप–समूह की सेवा करते हुए देखने की उम्मीद करनी चाहिए। जब ऐसा नहीं होता है, तो कुछ तो बहुत ही गलत है।

प्रारम्भ 5: हमारे जीवन का प्रबंधन करना

पाँचवाँ प्रारम्भ मूल्य पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए हमारे जीवन, संबंधों और संपत्ति का प्रबंधन करना है। पहली प्रारम्भ के समान, इसे भी विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता है। इसलिए हम इसे अध्याय 4 में व्यक्त करेंगे।

4

हमारे जीवन का भण्डारीपन

हमने पहले चार प्रारम्भ मूल्यों की जांच की है: परमेश्वर के साथ घनिष्ठता विकसित करना, अपनी अनुग्रह कहानियों को बताना, अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करना, और आत्मा के फल का प्रदर्शन करना। अब हम पांचवें कार्य पर ध्यान करेंगे: हमारे जीवन का इस तरह से भण्डारण करना कि परमेश्वर के राज्य के वृद्धि में पूरी तरह से सहयोग करें। यह अंतिम तरीका है जिससे कलीसिया लोगों के विश्वास के प्रभाव को उनके व्यक्तिगत निर्णयों जैसे धन, पवित्रता, विवाह, परिवार, मित्रों, कलीसिया निकाय और बाजार पर देख सकता है। हम इसे जीवन का भण्डारीपन कह सकते हैं, क्योंकि इसमें हम अपने समय, धन और अपेक्षाओं के साथ जो कुछ भी करते हैं, वह शामिल है।

मत्ती 6:24 में यीशु कहता है, "तुम परमेश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकते।" जब यीशु धन की बात कर रहा है, तो वह जो सिद्धांत व्यक्त करता है वह पूरे जीवन पर लागू होता है: एक बार जब हम यीशु के साथ मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से मृत्यु से जीवन में चले जाते हैं, तो परमेश्वर ने हम में जो नया हृदय प्रत्यारोपित किया है, वह परमेश्वर को केंद्र में रखने के लिए बनाया गया है।

जहां धन या कोई अन्य वस्तु किसी व्यक्ति के दिल में हावी हो जाती है, उस जीवन में परमेश्वर मौजूद नहीं होते हैं। तब मनुष्य के लोभ की कोई अभिव्यक्ति संभव है। या, जैसा कि यीशु मत्ती 6:23 में कहते हैं, एक व्यक्ति का "पूरा शरीर अन्धकार से भर जाएगा।" यदि धन

उनके दिलों पर राज करता है तो भले ही लोग अपने धार्मिक और मानवीय कार्यों में ईश्वरीय भावनामृत प्रतीत होते हैं, लेकिन उनके अन्दर परिवर्तन नहीं हो रहा है।

बदले हुए हृदय में, परमेश्वर ने केवल एक के रहने के लिए जगह बनाया हैः स्वयं परमेश्वर! आसानी से हम यहाँ पृथ्वी पर अपने जीवन के संचालन को समझना शुरू कर सकते हैं। मत्ती 6:19–34 में यीशु हमें पाँच कारण बताता है कि क्यों हमें सांसारिक संपत्ति को अपनी सोच पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

पहला, वे सड़ेंगे या गायब हो जाएंगेः "अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं" (मत्ती 6:19)। नये कार, कपडें और अन्य वस्तुएं पुरानी हो जाती हैं। मैंने पिछले वर्षों में सम्पूर्णता की ओर रुख किया। मैं अभी भी अपनी निराशा को याद कर सकता हूं जब मैंने जो कुछ खरीदा था वह पुराना हो गया , खरोंच आ गया, या यहां तक कि उपयोग करने लायक भी नही रहा। एक बार मेरी कीमती चीज चोरी हो गई; जो नुकसान की भावना भयानक था। हम जानते हैं कि यीशु सही है, लेकिन हम बहुत प्रभावित हुए हैं और कभी–कभी हमारे आस–पास की संस्कृति ने उन चीजों को महत्व देने के लिए बहकाया है जो अनंत काल तक जीवित नहीं रहेंगी।

दूसरा, यीशु कहते हैं कि हमें "स्वर्ग मे धन इकठ्ठा करो" (मत्ती 6:20), जो हमें अधिक प्रिय है उसे रखने के लिए सबसे सुरक्षित स्थान है। यीशु सिर्फ बाहरी चीजों से अधिक गहरी बात कर रहे हैं; वह उन आंतरिक चीजों की भी बात कर रहें है जिन्हें हम महत्व देते हैं जैसे अर्थ, महत्व और पूर्ति।

तीसरा, जो हमारे दिलों पर राज्य करता है वो स्वामी हो जाता हैः "जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा" (मत्ती 6:21)। कई चीजें अपने आप में बुरी नहीं होती हैं, लेकिन उनका हमारे दिलों और कार्यों पर जो प्रभाव है वह गंभीर हो सकता है। परमेश्वर के विरोध में हमारी संस्कृति की मूल्य की परिभाषा दिलों से प्रभावित होते है वो आँखों को जकड लेता है और दिल पर राज्य करता है। सच्चे जीवन की तरह ही सच्चा मूल्य नकली, सतही और खतरनाक मनोवृत्तियों और कार्यों से फिर से परिभाषित हो जाता है।

चौथा, जब हमारे हृदयों का ध्यान भटक जाता है, तो हमारी देखने की क्षमता भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि "आंख शरीर का दीपक है" (मत्ती 6:22)। धुँधले हृदय को संपत्ति को जिस तरह से परमेश्वर की मंशा करता है देखने में अत्यधिक कठिनाई होती है, जैसे सच्चा आराम और आशीर्वाद लाने के लिए। ऐसा धुंधला हृदय अन्धकार उत्पन्न करता है। बहुतायत प्रतीत होने के बीच भी कम से कम उसे दुख, संदेह और अवसाद का अनुभव होने लगता है।

पाँचवाँ, हम दो विरोधी शक्तियों की सेवा नहीं कर सकतेः "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा" (मत्ती 6:24)। परमेश्वर की नई सृष्टि में केवल एक ही रहने वाला हैः स्वयं परमेश्वर। छुड़ाया नहीं गया मनुष्य इसे एक नकारात्मक विकल्प के रूप में देखता है, परन्तु परमेश्वर इसे एक चेतावनी के रूप में नहीं बल्कि एक वादा के रूप में प्रस्तुत करता है।

अंततः जब हम अपने आस–पास की संस्कृति की मांगों को परमेश्वर के बनाये गए पक्ष के रूप में अस्वीकार करते हैं और अपनी संपत्ति को उनकी देखभाल में छोड़ देते हैं, तब भी हम चिंता से ग्रस्त हो सकते हैं। शुक्र है, यीशु वादा करता है कि परमेश्वर हमारी मदद करेगाः "तुम चिंता करके यह न कहना कि हम क्या खायेंगे? वा क्या पिएंगे? या 'हम क्या पहनेंगे?' क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें इन सब वस्तुओं आवश्यकता है" (मत्ती 6:31–32)। यदि वह पक्षियों को खिला सकता है और खेतों की सुंदरता की देखभाल कर सकता है, तो वह हमारी जरूरतों को पूरा कर सकता है। चिंता से पता चलता है कि हम उस चीज को महत्व दे सकते हैं जिसे हम देख सकते हैं, और जिसे हम नहीं देख सकते, लेकिन हम विश्वास करने के लिए बुलाये गए है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिसे हम पिता कहते हैं, उसके साथ हमने पर्याप्त समय नहीं बिताया है।

परमेश्वर के राज्य की खोज करें

अपनी शिक्षा में कि हमें चिन्ता नहीं करनी है, यीशु हमें उपचार देता हैः "इसीलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी" (मत्ती 6:33)। हाँ, जब हम इस संसार में रहते हैं, हमें धन और अन्य भौतिक चीजों की आवश्यकता होती है, लेकिन यदि हम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करते हैं, तो हम अपने धन और संपत्ति का सफलतापूर्वक भण्डारण कर सकते हैं। हमें यह कैसे करना हैं?

हमें अपने आस–पास की संस्कृति के प्रति रचनात्मक विरोध में रहना है। इसका मतलब यह है कि हमें संस्कृति में होना चाहिए और इस तरह इसमें सकारात्मक साधन होने चाहिए जबकि वास्तव में हमारी संस्कृति में हमे यीशु के जीवन कि शिक्षा बहुत कम देते हैं। इस संतुलन को बनाए रखना आसान नहीं है।

प्रेरित पौलुस ने इस तनाव को समझा और तीमुथियुस को सलाह दी कि हम परमेश्वर के राज्य में निवेश करते हुए इस संसार की दौलत को कैसे संभाल सकते हैं:

> इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। वे भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों, और आगे के लिये एक अच्छी नींव डाल रखें, कि सच्चे जीवन को वश में कर लें। (1 तीमुथियुस 6:17–19)

पौलुस यहाँ झूठ की त्रयी को उजागर करके धन के खतरों की घोषणा करते हुए वह कहते है। "धन के पीछे छिपे खतरों से सावधान रहें"। "परन्तु परमेश्वर के राज्य में निवेश करें!"

वह पहले तीमुथियुस से कहता है, "उन्हें आदेश दो कि वे घमंड न करें।" विज्ञापन के हर रूप के माध्यम से इस विश्वदृष्टि के बड़े पैमाने पर व्यापार के साथ, पश्चिम में लोग उपभोक्ताओं की मांग करने वाले धूर्त बन गए हैं। हमारी उम्मीदों को झूठ की सूक्ष्मता के लिए बनाया गया है और यहां तक कि कठोर भी किया गया है जो हमें बताता है कि हम धनी होने के योग्य हैं।

दूसरा, पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि विश्वासियों को "धन की अनिश्चितता पर अपनी आशा नहीं रखनी चाहिए," क्योंकि धन उतना मजबूत नहीं है जितना कि यह प्रतीत होता है। "तीस साल का उधार," "जीवन भर की वारंटी," और "आखिर तक के लिए निर्मित" सभी नारे लोगों को दूसरे झूठ पर विश्वास करने के लिए लुभाते हैं। लेकिन कुछ भी आखिर तक रहने के लिए नहीं बना है।

अंततः पौलुस विश्वासियों को "परमेश्वर पर" अपनी आशा रखने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि सांसारिक धन अनन्त आशा का कोई विकल्प नहीं है। इन झूठों से सबसे ज्यादा नुकसान यह हो सकता है कि कोई चीज वास्तव में मानव जीवन को परमेश्वर के स्थान से दूर कहीं गहरी खाई मे ले सकती है।

हम इस विश्वदृष्टि के खिंचाव का मुकाबला कैसे कर सकते हैं? पौलुस ने तीमुथियुस को उत्तर दिया: हमें परमेश्वर के वरदानों को ग्रहण करना है और उनका आनंद लेना है, क्योंकि यह परमेश्वर है जो "हमें आनंद करने के लिए सब कुछ बहुतायत से प्रदान करता है।"

लेकिन हमारी पतित संस्कृति के विचारों के आधार पर उस वादे का दुरुपयोग न करने के लिए, पौलुस आगे कहता है कि हमें "भलाई करने के लिए" उनका उपयोग करने के द्वारा उनका आनंद लेना है। एक अच्छा कर्म क्या है? 1 तीमुथियुस 5:10 मे पौलुस एक उत्तम परिभाषा देता है: और भले कामों मे सुनाम रहे हों, जिस ने बच्चों का पालन–पोषण किया हो;

अतिथियों कि सेवा कि हो, पवित्र लोगों के पाँव धोएं हो, दुखियों की सहायता कि हो, और हर भले काम मे मन लगाया हो।

ये कर्म इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं? क्योंकि जैसा यीशु ने मत्ती 5:16 में कहा, वे एक शक्तिशाली अवलोकनीय विश्वास का निर्माण करते हैं, जिसके द्वारा लोग सुसमाचार को देख और समझ सकते हैं:

> अब जबकि मैंने तुम्हें वहाँ एक पहाड़ की चोटी पर रखा है—इसीलिए तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता कि, जो स्वर्ग मे है बड़ाई करें।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि भलाई करने के तीन तरीके हैं।

सबसे पहले, हमें "अच्छे कामों के धनी" होना चाहिए – दूसरे शब्दों में, अपनी संपत्ति को दूसरों के लाभ में उपयोग करना चाहिए। हमें अपने पास मौजूद सभी चीजों का इस्तेमाल दूसरे लोगों की भलाई के लिए करना है।

दूसरा, हमें कुछ दान देकर अपनी संपत्ति को परमेश्वर के राज्य में निवेश करना चाहिए—हमें "उदार होना" है। पौलुस अभी भी यीशु के शब्दों को सुन सकता है, जैसा कि वह प्रेरितों के काम 20:35 में स्पष्ट रूप से कहता है: "मैंने तुम्हे सब कुछ करके के दिखाया कि इस रीती से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु येशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा है: 'लेने से देना धन्य है'।"

अंततः अपनी संपत्तियों के साथ "अच्छा करने" का सबसे कठिन तरीका उन्हें साझा करना है। जबकि हम अभी भी किसी वस्तु पर सक्रिय भण्डारीपन रखते हैं, हमें किसी और को भी इसका आनंद लेते हुए देखने के लिए एक आनंदित स्वभाव विकसित करनी चाहिए, इस पर कोई नियंत्रण नहीं रखना चाहिए कि वह व्यक्ति वास्तव में इसका उपयोग कैसे करता है। वह इसे गंदा कर सकता है, खरोंच सकता है, या इसे तोड़ भी सकता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी चुनौती दो निष्कर्षों के साथ समाप्त की। हमें अपने धन को "भविष्य के लिए एक अच्छी नींव के रूप में अपने लिए, खजाना जमा करते हुए" अपने सच्चे घर में निवेश करना चाहिए (1 तीमु. 6:19)। और हमें सच्चे जीवन में निवेश करना है "ताकि जो हमारा, सच्चा जीवन है उसे धारण कर लें" (1 तीमु. 6:19)। मसीह के लोगों की शक्ति को संसार सबसे अधिक तब महसूस करता है जब परमेश्वर के राज्य में निवेश करने की यह स्वभाव मसीह के लोगों में देखी जाती है। हम कैसे जीते हैं, यह परमेश्वर की आत्मा के हाथों में एक शक्तिशाली छुड़ाने वाला उपकरण है, शायद आज विशेष रूप से एक ऐसी संस्कृति में जो कि बाजार में है कि अंतिम महत्व किसी के पास जो है उसमे दिखता है।

परमेश्वर की धार्मिकता की खोज करें

जब हम परमेश्वर के साथ संबंध में आते हैं, तो हम एक नए जीवन में फिर से जन्म लेते हैं जिसे वह पवित्र आत्मा के निवास के माध्यम से हम में स्थापित करता है। यह इस नए जीवन के माध्यम से हम दुनिया में हमारे लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुरूप जी सकते हैं: न केवल उसके राज्य की परन्तु उसकी धार्मिकता की भी खोज करना। परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता नए नियम में अटूट रूप से जुड़े हुए हैं।

मत्ती 6:1 में यीशु सच्ची धार्मिकता का वर्णन करता है: "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो।" हम जो करते हैं वह केवल परमेश्वर की दृष्टि के लिए करना चाहिए। और कुछ भी एक ऐसा हृदय से आता है को बदला हुआ नही है तो वे दूसरों को दिखाने के लिए होता है और उसका एकमात्र प्रतिफल प्राप्त होता है। यह सच्ची धार्मिकता हमारी आध्यात्मिक जीवन के भण्डारीपन को कई तरीकों से नियंत्रित करती हैं।

पहला, जब हम देते हैं (देखें मत्ती 6:2–4), तो हमें उतना ही देना है जितना परमेश्वर हमें बताता है और जिसे वह देने के लिए हमसे कहता है। परमेश्वर दूसरों की आवश्यकताओं को जानता है, और वह यह भी जानता है कि हमें आज, कल और उसके बाद हर दिन क्या चाहिए। यदि हम उसके साथ नियमित संबंध में हैं, जो संपत्ति उसने हमें दी है, उसके प्रति आज्ञाकारी होने के इच्छुक हैं, तो वह विश्वासपूर्वक हमें निवेश करने और उन्हें वितरित करने के लिए निर्देशित करेगा। वास्तव में, पवित्र आत्मा के निर्देशन में देना इतना स्वाभाविक हो जाएगा कि हमारे बाएं हाथों को पता नहीं चलेगा कि हमारे दाहिने हाथों ने क्या किया है। दूसरे शब्दों में कहें तो, देना हमारे जीवन की एक वास्तविकता बन जाएगी।

दूसरा, जब हम प्रार्थना करते हैं (देखें मत्ती 6:5–15), तो हमें ऐसे बात करनी चाहिए जैसे हम वास्तव में परमेश्वर के साथ बात कर रहे हों। जब प्रार्थना केवल देखने वाली जनता के लाभ के लिए है, तो यह पाखंड है। वास्तविक प्रार्थना इतना घनिष्ट होता है कि एक बंद कमरे किया जा सकता है। सच्ची प्रार्थना इस ज्ञान से शुरू होती है कि परमेश्वर हमारी सुन रहा है, भले ही वह पहले से ही हमारी जरूरतों को जानता हो।

यीशु की प्रार्थना का उदाहरण हमें सिखाता है:

- परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करें।
- उसके नाम को अलग करने के द्वारा उसके प्रभुता के आगे झुकें।

- उसके राज्य को प्राथमिकता दें।
- उसकी इच्छा को प्राथमिकता दें।
- प्रति दिन हमें क्षमा मांगना है।
- प्रति दिन हमें क्षमा करना चाहिए।
- परीक्षा से सुरक्षा की खोज मे रहे।
- बुराई से सुरक्षा की खोज मे रहे।

यीशु क्षमा के महत्व पर जोर देते हैं जब वह जीवन के एक तरीके के रूप में इसकी आवश्यकता को दो बार दोहराते हैं। यह कुंजी है क्योंकि यह हमारे स्वर्गीय पिता के हृदय को प्रतिबिम्बित करती है।

तीसरा, जब हम उपवास करते हैं (देखें मत्ती 6:16–18), तो हमें ऐसा करना चाहिए जैसे कि हम उपवास नहीं कर रहे हो। पाखंडी लोग दिखाने के लिए उपवास रखते है। दूसरी ओर, वास्तविक उपवास, एक स्वस्थ चेहरे को बनाए रखता है। यह स्वर्गीय पिता पर ध्यान केन्द्रित करता है और बदले में, स्वर्गीय पिता द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।

अंततः हमें परमेश्वर को दूसरों का न्याय करने देना चाहिए (देखें मत्ती 7:1–6)। यदि हम अपने आप को न्यायियों के रूप में स्थापित करते हैं, तो परमेश्वर हमें हमारे अपने स्तर के अनुसार मापेगा। किसी और की मदद करने से पहले हमें स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम होना चाहिए। जब हम केवल परमेश्वर के लिए अपने अच्छे काम करते हैं, तो हम उसकी धार्मिकता की खोज करेंगे।

परमेश्वर की धार्मिकता हमारा आदर्श है

यह महसूस करने के लिए कि हमें एक समस्या है, पहाड़ी उपदेश में यीशु के वचनों को पढ़ने में ज्यादा समय नहीं लगता हैः जबकि यीशु के वचनों का इस दुनिया में हमारे जीवन मे भंडार करने के लिए महत्वपूर्ण नैतिक निहितार्थ हैं, वे इतने कठोर हैं कि वे हमें जीने के लिए असंभव प्रतीत होते हैं। या तो यीशु अतिशयोक्ति का उपयोग कर रहा था, या उसका वास्तव में मतलब था कि हमें पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करनी है। यीशु के वचनों के अनुसार जीने की कठिनाई को मत्ती 5:19–20 में देखा जा सकता हैः

> इसीलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं मे से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगो को सिखाए वह स्वर्ग के राज्य मे सबसे छोटा कहलायगा; परन्तु जो कोई उन

> आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य मे महान कहलायगा। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य मे प्रवेश करने न पाओगे।

लेकिन हमें एक असंभव आज्ञा देना ठीक वही है जो यीशु करना चाहते थे। वह यह स्पष्ट करना चाहता था कि मानव धार्मिक प्रयास आदम और हव्वा और उनके सभी बच्चों के लिए परमेश्वर द्वारा रचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। पहाड़ी उपदेश को जीवन के वर्णन के रूप में पढ़नी चाहिए जैसा कि यह है न कि—पाप से भ्रष्ट—लेकिन जैसा कि परमेश्वर ने शुरुआत में इसे बनाया था और एक दिन इसे पूरी तरह से पुनः स्थापित कर देगा।

मत्ती 5:48 हमें ऊपर दिए गए यीशु के वचनों में चुनौती का उत्तर देता है। इस पद में यीशु हमें पहाड़ी उपदेश के अनुसार हमारे जीवन का भण्डार करने की कुँजी देते हैं: "इसलिये तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" कई लोग इन शब्दों को एक चुनौती के रूप में या इससे भी बदतर, एक खतरे के रूप में देख सकते हैं। हालाँकि, वे जीवन जीने की कुंजी हैं जैसा कि परमेश्वर ने इसे बनाया है।

हमारे पिता की तरह बनने की आज्ञा का अर्थ है कि हम अपने भीतर अपने पिता से कुछ धारण करते हैं। यीशु में उद्धार से पहले, हमने केवल अपने सांसारिक पिता, आदम के स्वभाव को ही ग्रहण किया था। वह प्रकृति, यद्यपि परमेश्वर के स्वरूप, पाप के द्वारा खराब और भ्रष्ट थी, और उस तरह से नहीं जिस तरह से परमेश्वर ने इसे बनाया था। लेकिन एक बार जब हम यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान के साथ हमारे विश्वास के द्वारा नया जन्म प्राप्त करते हैं, तो हमारे पास हमारे अस्तित्व के सबसे मध्य भाग में एक नया बीज होता है—हमारे स्वर्गीय पिता का वंश—और यूहन्ना हमें 1 यूहन्ना 3:9 में बताता है कि "जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नही करता; क्योंकि उसका बिज उसमे बना रहता है, और वह पाप कर ही नही सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है।"

मत्ती 6 और 7 के पहले भाग में, हमने देखा कि कैसे यीशु ने परमेश्वर के साथ हमारे नए जीवन का वर्णन किया: देना, प्रार्थना करना, उपवास करना और सही ढंग से न्याय करना। अब मत्ती 5:1—48 में हम इस जीवन को देखेंगे जैसे कि परमेश्वर ने हमें इसे शुरुआत में जीने के लिए बनाया था, पवित्र आत्मा के मदद से जीवन जो अब हम में रहता है, और जीवन जैसा कि मानव इतिहास समाप्त होने पर या उसके बाद पृथ्वी का अंतिम न्याय पर होगा। यह मार्ग परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए हमारे जीवन का भण्डारण करने

की एक संपूर्ण तस्वीर को चित्रित करता है–यह पाँचवाँ प्रारम्भ मूल्य जो मापता है कि क्या कलीसिया अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार जी रहा है।

हम मत्ती 5:1–12 में शुरू करते हैं, जहां हम देखते हैं कि यह जीवन वास्तव में हमारे आस–पास के आदर्शों से भिन्न होती है। परमेश्वर के लोगों की विचार विशेषताओं की प्रक्रिया दूसरों से भिन्न होती है:

- वे अपनी जरूरत को पहचानते हैं (आत्मा में दीन हैं)।
- वे अपने "हानि" पर शोक मनाते हैं।
- वे परमेश्वर के सामने शांत रहते हैं (नम्र)।
- वे संपूर्णता (धार्मिकता के लिए) को प्राप्त करने के लिए भूखे रहते हैं।
- वे दया करते हैं।
- उनके पास शुद्ध प्रेरणाएँ हैं (मन से शुद्ध हैं)।
- वे शांति को बढ़ावा देते हैं (शांति बनाने वाले हैं)।
- उन्हें संपूर्ण होने के लिए उत्पीडित किया जाता है (धार्मिकता के लिए सताये जाते है)।
- यीशु के प्रति उनकी निष्ठा के कारण उन्हें ठुकरा दिया जाता है (सताये और बुरी तरह से बात की जाती है)।

उनके पुरस्कार, हालांकि, कई हैं:

- वे परमेश्वर का राज्य के अधिकारी होंगे।
- वे अपनी खोई हुई स्थिति में शांति पायेंगे।
- उन्हें दुनिया दी गई है।
- वे पूर्णता से भरे हुए होंगे।
- वे दया प्राप्त करते हैं।
- वे परमेश्वर को देखेंगे।

- वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।
- वे अपने विश्वास की मान्यता प्राप्त करते हैं जब वे भविष्यवक्ताओं को देखते हैं और उनकी समानता को देखते हैं।

मत्ती 5:13–20 में यीशु ने इस जीवन शैली के अपने आसपास की दुनिया पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है। इस तरह से परमेश्वर के लोग अपने आसपास की दुनिया में सुसमाचार को व्यक्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

नमक के रूप में, वे पृथ्वी में प्रवेश करते हैं और मानव जाति में अभी भी परमेश्वर की समानता को संरक्षित करते हैं। वे समझते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है और अपनी नमकीनता को बनाए रखने के लिए लगन से काम करते हैं। अन्यथा, नमक किसी भी चीज के लये अच्छा नही और केवल फेके और मनुष्य के पैरों तले रोंदे जाने के सिवाय जिसे प्रभावित करने का इरादा किया गया था। वे प्रकाश हैं, ठीक वैसे ही जैसे किसी पहाड़ी पर एक शहर से प्रकाश आता है। ऐसी प्रकाश को यात्री दूर से ही साफ देख सकते हैं। उनका प्रकाश छिपने के लिए नहीं है, बल्कि एक स्टैंड पर रोशनी के रूप में प्रदर्शित होता है, जो सभी को प्रकाश देता है। यीशु हमें प्रोत्साहित करता है, "तेरा प्रकाश चमके" (मत्ती 5:16)। इससे लोग पिता को देखेंगे। हम दुनिया में प्रकाशन, दृढ़ विश्वास और आशा को चमकाते हैं। हमें अपने प्रकाश की प्रेक्षण क्षमता को बनाए रखने के लिए सतर्क रहना चाहिए।

परमेश्वर के लोग भी राज्य की सच्चाई को जीते हैं। यीशु परमेश्वर की धार्मिक योजना से छुटकारा पाने के लिए नहीं आया था; उसे पूरा करने आया था। वह हमें साफ–साफ कहता है, "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं" (मत्ती 5:17)। जो लोग इन मांगों से छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे उन्हें तिरस्कार कर दिया जाएगा; जो उन्हें पूरा करते हैं वे महान हैं। किसी भी पीढ़ी की नाम मात्र की धार्मिकता के लिए, निष्कर्ष शक्तिशाली हैः जब तक हमारी धार्मिकता फरीसियों और वैवास्था के शिक्षकों से अधिक नहीं हो जाती, हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पायंगे।

मत्ती 5:21–47 में, यीशु ने अपनी स्त्री और पुरुष की रचना में परमेश्वर की रूपरेखा का वर्णन किया है। सबसे पहले, पद 21–26 में, वह उनके व्यक्तिगत संबंधों के बारे में बात करता है, कि अपने भाई के प्रति क्रोध और घृणा को बनाए रखना हत्या के समान ही बुरा है। दुनिया हत्या को मानवीय संबंधों में सबसे खराब व्यवहार के रूप में देखती है, लेकिन पारस्परिक मानवीय संबंधों के लिए परमेश्वर की बुलाहट हमें एक नए स्तर पर ले जाती है। क्रोध न्याय

के योग्य है, जैसे तिरस्कार और अनादर। यह महत्वपूर्ण है कि हम किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को करने से पहले किसी ऐसे व्यक्ति के साथ मेल–मिलाप करना है जिसके साथ हमने कोई अपराध किया हो।

पद 27–30 में, यीशु लैंगिक संबंधों का वर्णन करता है जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें चाहा था, यह स्पष्ट रूप से बताते हुए कि एक वासनापूर्ण घूरना व्यभिचार के बराबर है। दुनिया सोचती है कि व्यभिचार एक विवाह का सबसे बुरा विश्वासघात है, लेकिन लैंगिक संबंधों के लिए परमेश्वर का बुलाहट हमें फिर से एक उच्च स्तर पर चुनौती देता है। दूसरे व्यक्ति के लिए वासना मानव जाति के लिए परमेश्वर की योजना के विरुद्ध है। इसलिए हमें अपनी आंख को नियंत्रित करना चाहिए या इससे छुटकारा पाना चाहिए; हमें अपने हाथों को नियंत्रित करना चाहिए या उनसे छुटकारा पाना चाहिए। जाहिर है, अगर आंख या हाथ से छुटकारा पाना समाधान होता, तो यीशु दोनों आंखों और दोनों हाथों को हटाने के लिए कहते। लेकिन उसका लक्षण इस बात पर अत्यधिक जोर देता है कि कैसे परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं के बीच रिश्तों को बनाया। वैवाहिक रिश्तों में प्रवेश करने तक यौन के अभिव्यक्ति को मन और क्रिया में पवित्रता के रूप में चित्रित किया जाना चाहिए।

पद 31–32 में यीशु विवाह के विषय में पुरुष और महिला के रिश्तों के बारे में अधिक विशेष रूप से बोलते हैं, यह स्पष्ट करते हुए कि "जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।"

परमेश्वर पवित्रशास्त्र में बार–बार घोषणा करता है कि तलाक उसकी योजना को धोखा देता है। वह उत्पत्ति 2:18–24 में उस रचना की सुन्दरता का वर्णन करता है:

फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नही; मै उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए।".... तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद मे डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो आदम मे से निकली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। तब आदम ने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में कि हड्डी और मेरे मांस मे का मांस है; इसीलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर मे से निकाली गयी है।" इस कारण पुरुष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नि से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।

परमेश्वर ने जो विवाह रिश्ता बनाया है वह इतना मजबूत है कि केवल व्यभिचार (या मृत्यु) ही उस एकता को तोड़ सकता है। वह एकता इतना मजबूत है कि यीशु ने निष्कर्ष निकाला कि तलाक वास्तव में व्यभिचार का कारण बनता है।

33–37 पद में यीशु लोगों के बीच भरोसे के रिश्तों के बारे में बात करते है। वह हमें आज्ञा देता है कि तुम शपथ न खाना, परन्तु तुम्हारी 'हाँ' की 'हाँ' और 'नहीं' की 'नहीं' हो; "क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है" (मत्ती 5:37)। यह लगभग वैसा ही है जैसे यीशु कह रहे हैं, "तुम अपने को कौन समझते हो? एक–दूसरे के साथ आपके रिश्ते इतने खराब हो गए हैं कि जब आप चाहते हैं कि किसी चीज को गंभीरता से लिया जाए, तो आप पवित्र की कसम खाते हैं, मेरी प्रभुता को मानते हैं, और एक शपथ लेते हैं, जिस पर आपका कोई नियंत्रण नहीं है। "

दुनिया एक शपथ को एक वास्तविक और मजबूत वादा मानती है, लेकिन परमेश्वर मनुष्य को उस तरह की प्रभुता नहीं देता है। मनुष्य ये नहीं जानता कि क्या वह तत्वों जो उसकी शपथ में आते हैं उसको नियंत्रित कर सकता है; उसका इस पर कोई नियंत्रण नहीं है कि वह जीवित भी रहेगा या नहीं। सो यीशु ने कहा, "कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, न पृथ्वी कि, न यरूशलेम की, न अपने सिर की। इसके बजाय, अपने वचन को उस एकमात्र प्रभुता को प्रतिबिंबित करने दें जो वास्तव में आपके पास है–हाँ और केवल आज के लिए नहीं।"

43–47 पद में यीशु बिना सोचे समझे किये गए अपराधों को एक कदम आगे ले जाता है और उन्हें उन लोगों में व्यक्तिगत करता है जिन्हें हम वास्तव में जानते हैं जो हमें नुकसान पहुंचाना चाहते हैंः "तुम सुन चुके हो की कहा गया था, अपने पडोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो, और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता के संतान ठहरोगे" (मत्ती 5:43–45)। दुनिया सिर्फ अपने दोस्तों की परवाह करती है। लेकिन परमेश्वर का आदर्श इसके विपरीत हैः हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है और वास्तव में, उनके लिए प्रार्थना करना है। हमें अपने स्वर्गीय पिता की संतान बनना है। परमेश्वर की भलाई अच्छी और बुरी दोनों तरह से पूरी पृथ्वी पर जाती है, इसलिए हमें उसका प्रेम देती है जिससे हम अपने शत्रुओं से भी प्रेम कर सकते हैं। परमेश्वर के लोगों को सभी से प्रेम और अभिवादन करना चाहिए, खासकर तब जब हमारे पास हासिल करने के लिए व्यक्तिगत कुछ भी न हो।

यीशु इस नए भण्डारीपन के जीवन को जीने की महत्वपूर्ण कुंजी के साथ 48 पद में समाप्त करते हैंः "इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" कलीसिया के रूप में जीने की हमारी क्षमता जीने के लिए बुलायी गयी है, केवल हमारे पिता की सिद्ध धार्मिकता में पाई जाती है। परमेश्वर ने अपने बच्चों में जो नया जन्म दिया है, वह हमारे लिए इस तरह से जीना संभव बनाता है; हमारा पिता सिद्ध है, और हम उसके समान बनने के लिए रचे गए हैं।

पौलुस के शब्दों में

इफिसियों 4:17–6:9 में पौलुस भण्डारीपन के इसी जीवन का वर्णन करता है।

सबसे पहले 4:17–5:7 में, जैसा कि यीशु ने कहा, यह जीवन हमारे आस–पास के आदर्शों से अलग दिखता है। हम अपने पिता आदम से विरासत में मिली सोच की व्यर्थता में दुनिया की तरह नहीं जी सकते। वह सोच अंधकारमय हो जाती है, ईश्वर की सोच से अलग हो जाती है, संवेदनशीलता से रहित हो जाती है और पूरी तरह से स्वयं और उसके आसक्ति को सौंप दी जाती है। मसीह के पास हमारा आना इसकी अनुमति नहीं देगा। इसके बजाय, हमें वैसा ही बनना है जैसा हम बनने के लिए नये बनाये गए हैं–सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर के समान। हमें उसके पुत्र, यीशु के समान बनना है, क्योंकि इसी तरह से हमारा नया जन्म हुआ है। हमें "प्रेम में चलना है, जैसा कि मसीह ने हम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगंध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया" (इफि. 5:2)।

पौलुस पहाड़ी उपदेश में यीशु के वचनों की समानता करते हुए चला जाता है। इस नए जीवन का इसके आसपास के संसार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है (देखें 5:8–17)। यह व्यक्तिगत रिश्तों (देखें 5:18–21), वैवाहिक रिश्तों (देखें 5:22–33), पारिवारिक रिश्तों (देखें 6:1–4), और बाहरी रिश्तों (देखें 6:5–9) में नर और नारी के रूप में परमेश्वर की रचना में परमेश्वर की योजना को व्यक्त करते हैं। इन पदों से बहुत कुछ लिया जा सकता है, लेकिन मैं कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर प्रकाश डालूंगा।

सबसे पहले, यह जीवन हमें यीशु में दिया गया है। उसके साथ हमारी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बिना, कोई नया जीवन नहीं हो सकता। यह यूहन्ना 3 में नीकुदेमुस के लिए रहस्य था। जैसा कि यीशु ने उससे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:5), नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, "ये बातें कैसे हो सकती हैं?" (यूहन्ना 3:9)।

दूसरा, यह जीवन हमारे आसपास की दुनिया के जीवन से मेल नहीं खाता। जब हम मसीह के पास आते हैं, तो हमारे सभी मानवीय रिश्ता बदल जाते हैं; नम्रता अब उन सभी के मूल हो जाती है। इसलिए पौलुस हमें कहता है कि "मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन" रहो (इफि. 5रू21)। आपसी समर्पण रहस्य संबंधित अंतर्निर्भरता बनाता हैः पति अपनी पत्नियों को अपने शरीर के रूप में प्रेम करते हैं। पत्नियां अपने पतियों को स्वतंत्र रूप से सम्मान देती हैं। बच्चे अपने माता–पिता को सम्मान और आज्ञाकारिता देते हैं। यहाँ तक कि बहार में भी,

व्यवसाय प्रथाओं को उल्टा कर दिया जाता है क्योंकि मालिक अपने कर्मचारियों (दासों) के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं और कर्मचारी अपने मालिकों के साथ उसी सेवा के साथ व्यवहार करते हैं जो वे परमेश्वर के साथ करते है।

तीसरा, इस जीवन को हमें ही चुनना चाहिए। परमेश्वर के राज्य के वृद्धि के लिए हमारे जीवन को भण्डार करने की क्षमता हमारे लिए परमेश्वर के द्वारा अपने पुत्र को भेजने और पुत्र में पाए जाने वाले उद्धार को प्राप्त करने वालों में अपनी आत्मा को डालने के कारण संभव हुई है। हालांकि, हमें इस पर कार्य करनी चाहिए। रोमियों 6:11–14 में पौलुस इसे स्पष्ट करता हैः

> ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह येशु मे जीवित समझो। इसीलिए पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करें, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो; और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सोंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सोंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सोंपो। तब तुम पर पाप कि प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नही वरन अनुग्रह के अधीन हो।

यह अनुसरण करने के लिए एक धार्मिकता है

यीशु ने उस धार्मिकता के बारे में कहा है जिसका हमें अनुसरण करना है–"इसीलिए तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धर्म की खोज करो" (मत्ती 6:33)–और वह धार्मिकता जो हमें दी गई हैः "सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" (मत्ती 5:48)। वह अब मत्ती 7:7–28 में पहाड़ी उपदेश को पूरा करता है, और यह विस्तार से बताता है कि हमें परमेश्वर के समबन्ध में इस धार्मिकता का अनुसरण कैसे करना चाहिए।

7–11 में येशु कहते हैं,

> "मांगों, तो तुम्हे दिया जायगा; ढूंढों तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुममें से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? या मछली मांगे, तो उसे सांप दे? अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

परमेश्वर उन लोगों को अपनी उपस्थिति और दिशा प्रदान करता है जो उसकी धार्मिकता को जीने की इच्छा रखते हैं। खटखटाने वाले के लिये खुल जाता है, मांगनेवालों को मिल जाता है, ढूंढ़ने वालों को प्राप्त हो जाता है। यदि हम उन लोगों को अच्छे दान देते हैं जिन्हें हम प्रेम करते हैं, तो कल्पना करें कि परमेश्वर हमें और कितना आशीष देना चाहते हैं। यह सब दूसरों के साथ वैसा ही करने के लिए होता है जैसा हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें।

13–14 पद में यीशु हमें चेतावनी देते हैं कि उसकी धार्मिकता का पीछा करने के लिए, हमें "सकेत फाटक से प्रवेश करना चाहिए। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचता है" और बहुत से है जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचता है" और थोडें हैं जो उसे पाते हैं।" हमें कम से कम चलने वाले रास्ते पर बने रहने की जरूरत है, क्योंकि विनाश की ओर जाने वाला चौड़ा और भारी आबादी वाला है। जीवन के लिए सकेत और अकेला हो सकता है।

15–23 पद में यीशु दो और चेतावनियाँ देता हैः हमें "झूठे भविष्यद्वक्ताओं और सामान्य लोगों से सावधान रहना चाहिए जो मसीह को जानने का दावा करते हैं, लेकिन नही जानते हैंः "जो मुझसे, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमे से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)। यीशु की चेतावनी स्पष्ट हैः धोखे से सावधान रहो।

धोखा दो समूहों के लोगों से आ सकता है। सबसे पहले, धार्मिक अग्वों के रूप में प्रस्तुत करने वाले लोगों से। दुर्भाग्य से, कई लोग उन्हें जान ही नही पाते, इन लोंगो का उद्देश्य नष्ट करना है। खतरनाक लोगों को उनके जीवन के फल से जल्द या बाद में पहचाना जा सकता है। लेकिन खतरा सच्चे अनुयायियों के रूप में सामने आने वाले लोगों से भी आ सकता है। अपनी रक्षा के लिए, हमें उन विश्वासियों की ढूंढना चाहिए जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं–उन लोगों के लिए जो यह प्रदर्शित करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं और इसके बारे में बात नहीं करते हैं।

यीशु अपनी बुलाहट को 24–27 पद में समाप्त करता हैः

> इसलिये जो कोई भी मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के सामान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाड़ें आईं, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकराई, फिर भी वह नही गिरा, क्योंकि उसकी नीव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुधि मनुष्य के सामान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया।

और मेंह बरसा बाड़ें आई, आंधियां चलीं और उस घर से टकराई और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।

हमें परमेश्वर के वचनों को सुनकर और उन्हें पूरा करके बुद्धिमानी से निर्माण करना चाहिए। अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम आंधियों में सुरक्षित रहेंगे। परन्तु, जिस जीवन में अभ्यास की नींव नहीं है, वह ढह जाएगा।

परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता के लिए हमारे जीवन के हर पहलू का भण्डार करने के लिए—कलीसिया को आत्मिक परिपक्वता के लिए बुलाया गया है। केवल जब परमेश्वर के लोग वास्तव में पवित्र जीवन जी रहे हैं, उनके भीतर पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त बन चुके हैं तभी वे अपनी पीढ़ी में उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में प्रभावी होंगेः वे स्थान जहाँ वे रहते हैं वहाँ प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे उनके संबंध और प्रतिनिधित्व में सुसमाचार संदेश की घोषणा करना।

भाग 2

अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए कलीसिया को सशक्त बनाना

5

यीशु ने अपनी कलीसिया को नेतृत्व दिया है

हमने उसकी कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में कुछ विस्तार से चर्चा की हैः कि प्रत्येक विश्वासी को अपने स्थान पर सुसमाचार को जीना चाहिए, आत्मा के वरदानों और फलों का प्रदर्शन करना चाहिए और अपनी अनुग्रह कहानियों को बताना चाहिए ताकि प्रत्येक

पुरुष, महिला और बच्चा सुसमाचार सुन सकें और उन्हें येशु मसीह का स्वीकार करने या अस्वीकार करने का अवसर मिल सके। अब हमें जो प्रश्न पूछना चाहिए वह यह है कि यह कैसे किया जाए?

परमेश्वर ने कलीसिया को अपने लोगों को उनकी बुलाहट में सुसज्जित करने के लिए एक अमूल्य संसाधन प्रदान किया है; नेतृत्व पौलुस इसमें स्पष्ट थेः

> और उसने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हों जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। (इफिसियों 4:11–13)

स्थानीय कलीसियाओं के नेतृत्व के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को उसके लोगों के लिए स्पष्ट रूप से पुष्टि करने से बढ़कर कोई कार्य नहीं है। नेतृत्व को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग उस प्रतिज्ञान में ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें लोगों को लुभाया जाए और उनके लिए परमेश्वर की इच्छा में चलने के लिए विवश किया जाए। स्पष्ट विश्वास में आने वाले लोगों के साथ व्यस्त रहना एक घातक त्रुटि है, साथ ही उन्हें उन सभी तरीकों से चलने में मदद करने की तैयारी किए बिना परमेश्वर ने उन्हें यीशु के माध्यम से नए जन्म में लाने के बाद बनाया है।

यह नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि वह परमेश्वर के लोगों को पहचानने और त्रुटि से बचने में मदद करे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अपनी बुलाहट में बने रहें। यीशु की चेतावनी दोहराने लायक हैः

> झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़ने वाले भेडिए हैं। उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे क्या झाडियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। (मत्ती 7:15–20)

अपने धार्मिक प्रशिक्षण के बाद के कई वर्षों में, मैंने उन विश्वासों और परंपराओं को प्रतिबिंबित किया है जो मुझे दी गई थीं। वे गलत नहीं थे, बस अधूरे थे या ध्यान से बाहर थे। इक्कीसवीं सदी में कलीसिया के इतिहास मनुष्य के दर्शन के कारण इतना अनोखा नहीं है, बल्कि इसलिए कि इसने पश्चिमी कलीसिया कि ऐतिहासिक "आओ और देखो" अभिविन्यास की गलती को उजागर किया है।

कलीसिया के जीवन के प्रति इस "आओ और देखो" दृष्टिकोण ने "कलीसिया में लोगों को एकत्रित करना" के रूप में शिष्यत्व की परिभाषा पर बहुत अधिक भार डाल दिया है। इसका परिणाम, शायद कई लोगों द्वारा अनजाने में, यह है कि कलीसिया ने यीशु के अनुयायी होने का अर्थ खो दिया है। और हमने कलीसिया के सभी कारणों को खो दिया हैः लोगों को परमेश्वर के द्वारा उसके साथ संबंध में रहने और दुनिया में उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया है। कलीसिया के नेतृत्व का कार्य परमेश्वर की प्राथमिक बुलाहट के साथ सहयोग करना है–अपने लोगों का पोषण करना ताकि वे इन उद्देश्यों में विकसित होंः पहला, कि वे पिता परमेश्वर के साथ एक निरंतर और बढ़ते संबंध में हों और, दूसरा, कि वे दुनिया में पिता का ईमानदारी से प्रतिनिधित्व करते हों।

जब परमेश्वर ने पहली बार मुझसे आश्चर्यजनक प्रश्न पूछा, "क्या आपको लगता है कि मेरी कलीसिया आपके लिए एक भण्डारगृह है, जिसमें आप लोगों को अपनी बात सुनने के लिए भर सकते हैं?" मैं इस वास्तविकता से बहुत प्रभावित हुआ कि कलीसिया के बारे में मेरा विचार गलत था। ऐसा नहीं है कि बाइबल पढ़ाना या लोगों को उसका प्रचार सुनने के लिए इकट्ठा करना गलत था। लेकिन अपने प्रश्न में, परमेश्वर ने मुझे दो बड़ी भ्रांतियां बताईंः एक, कि कलीसिया लोगों का एक समूह था और दूसरा, कि किसी को उपदेश सुनने के लिए जितने लोग एकत्रित हुए, वह एक अगुवे के लिए प्रभावशीलता का माप था।

कई वर्षों से जब से परमेश्वर ने मुझसे यह प्रश्न पूछा है, मुझे पता चला है कि यदि मसीह के लोगों को सेवा के लिए सशक्त बनाना नेतृत्व की प्राथमिक बुलाहट है, तो पश्चिम में अगुवो को गलत उपकरण के साथ अपने जनादेश और प्रभावशीलता को मापने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। यह पूछना कि क्या लोग हमारे कलीसियाओं में आते हैं या यहाँ तक कि जब वे आते हैं तो वे कैसा महसूस करते हैं, यह अत्यधिक भ्रामक परिणाम लाता है। अगुवा चुपचाप मोहक प्रश्नों में चूक जाते हैं जैसे, कितने लोग आए, कितना दिया? क्या वे खुश हैं? ये प्रश्न उन सभी कलीसियाओं को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं जो मसीह के लोगों के रूप में विश्वास करने की घोषणा करते हैं, क्योंकि वे एक ऐसे उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे परमेश्वर ने अपने कलीसियाओं के लिए कभी नहीं चाहा।

नेतृत्व को पहले यह सीखने की जरूरत है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या चाहता है, फिर वे कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि लोग इन चीजों में विकसित हों और साथ ही ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें विश्वासियों को उन पर चलने के लिए मजबूर किया जा सके। कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य में चलने के लिए लोगों को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता के बिना, आने वाली पीढ़ी के लोग जो खुद को मसीह के अनुयायी कहते हैं, नाममात्र के लोगों के अलावा और कुछ नहीं होंगे।

सत्य प्रदान करना पर्याप्त नहीं है, भले ही विश्वासियों ने बीते वर्षों में कितना भी बाइबल ज्ञान को प्राप्त कर लिया हो। आराधना पर्याप्त नहीं है, चाहे वह कितनी भी प्रेरक क्यों न हो। और सुसंगति पर नया जोर, चाहे नाटक या अन्य रचनात्मक विचारों के माध्यम से, पर्याप्त नहीं है। ये सभी संभावित अच्छी गतिविधियाँ व्यर्थ हैं यदि वे सक्रिय रूप से और आक्रामक रूप से लोगों को पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से देखे गए जीवित मूल सिद्धांतों में नहीं ले जाती हैं।

पौलुस रोमियों 6 में स्पष्ट रूप से उस नए जीवन के बारे में लिखा है जिसे परमेश्वर ने अपनी सन्तान के लिए ठहराया है:

> फिर हम क्या कहें? क्या हमें पाप में बने रहना चाहिए कि अनुग्रह बहुत हो? किसी भी तरह से नहीं! हम जो पाप के लिए मर गए है, अब भी उसमें कैसे जी सकते हैं? क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने, जिन्होंने यीशु मसीह का बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? तो हम उसके साथ मृत्यु के बपतिस्मा के द्वारा गाड़े गए, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।
>
> क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। तो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह

> जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है। (रोमियों 6:1–10)

इन सबके प्रकाश में अहम सवाल उठते हैं। क्या कलीसिया के नेतृत्व ने शरीर के जीवन में ऐसा वातावरण निर्मित किया है जो इस वास्तविकता का प्रभावी रूप से समर्थन करता है? क्या उन्होंने लोगों के हाथों में श्रोत दिए हैं जो उन्हें परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बढ़ने की अनुमति देते हैं? क्या कलीसिया के कार्यक्रम जाने–अनजाने मे लोगों को परमेश्वर के साथ एक रिश्ते के लिए व्यक्तिगत खोज करने की मदद करते हैं? यदि आवश्यक हो तो क्या कलीसिया के नेतृत्व के बिना शरीर के सदस्य परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को जारी रख सकते हैं?

नेतृत्व का परमेश्वर के लोगों के लिए बाइबल के उद्देश्य से कम की इच्छा करना अस्वीकार्य है। इस बुलावे के लिए परमेश्वर के लोगों के सशक्त बनाने से कम किसी भी चीज के लिए खुद को जवाबदेह ठहराना अस्वीकार्य है।

परमेश्वर का नेतृत्व नमूना

यह मूल्यांकन करने में कि कलीसिया परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण कर रही है या नहीं, नेतृत्व स्वयं से शुरू होना चाहिए। कलीसिया में नेतृत्व किसी अन्य संस्था के समान नहीं है। मत्ती 20:25–28 में यीशु ने अपने शिष्यों को यह स्पष्ट कर दिया:

> यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुडौती के लिये अपने प्राण दे।

इस दुनिया में सभी नेतृत्व, एक के लिए उपाधि तो किसी अन्य के लिए, भ्रष्ट हैं। शरीर इसे ऐसा बनाता है, क्योंकि यह उन लोगों पर हावी होता है जिनके पास यीशु नहीं है। यहाँ तक कि उन लोगों में भी जिन्हें यीशु मसीह में छुड़ाया गया है, शरीर हमारे भीतर परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध लड़ता है। पौलुस रोमियों 6–8 में इस लड़ाई की रूपरेखा देता है, और वह कहता है कि हम इसे तब जीतते हैं जब हम अपने शरीर को उस धार्मिकता के जीवित उपकरणों के रूप में आत्मा को देते हैं, जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमें प्रदान किया है। जब हम अपने दिल और दिमाग की रक्षा नहीं करते हैं, हालांकि, शरीर हमारे पास मौजूद प्रकाश और जीवन के विपरीत अनाज्ञाकारिता को जन्म देता है और हमारी प्रेरणाओं और कार्यों को भ्रष्ट करता है।

परमेश्वर के आदर्श में, नेतृत्व कई कारणों से संसार से अलग है। पहला, यह केवल लोगों की सेवा करने के लिए है, यहां तक कि व्यक्तिगत नुकसान उठानी पड़े। दूसरा, जब लोगों को दूसरों का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी दी जाती है, तो उन्होंने कोई महत्वपूर्ण स्थान अर्जित नहीं किया है; उन्हें केवल उसके लोगों में और उनके बीच परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में विश्वासयोग्य होने के लिए बुलाया गया है। तीसरा, नेतृत्व परमेश्वर के अनुयायियों की सेवा करने के लिए उन चीजों की पेशकश करके नहीं है जो परमेश्वर सुरक्षा या शांति या प्रावधान की तरह दे सकता है और देता है, बल्कि उन्हें लोगों को परमेश्वर मे परिपक्व करके उन चीजों को करने में उनकी मदद करें जो उसने उन्हें करने के लिए बनाया है।

जब नेतृत्व अपना काम ठीक से करता है, तो वे लोगों को दैनिक और व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के वचन और उसकी पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण की ओर संकेत करते हैं। अंततः, अच्छी कलीसिया के अगुवे किसी भी तुलना में दाइयों की तरह होते हैं–वे वास्तव में नया जीवन उत्पन्न नहीं करते; वे सिर्फ प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में मदद करते हैं। लेकिन नेतृत्व अभी भी आवश्यक है; आखिरकार, यह यीशु द्वारा कलीसिया को दिया गया है।

नेतृत्व क्या है? यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे अंतिम निर्णय लेना है। न ही यह सबसे मौखिक रूप से उपहार में दिया गया या सबसे रणनीतिक है! जैसा कि हम देख चुके हैं, यीशु पूरी तरह से एक अलग प्रभाव डालता है।

मत्ती 20:26–28 में यीशु उन लोगों के लिए तीन मानक देता है जो उसके लोगों का नेतृत्व करते हैं। वह कहता है कि जो उसके नेतृत्व में हैं, उन्हें दूसरों के सेवक, डायकोनोस होना चाहिए। उन्हें भी गुलाम, डोलोस होना है। अंततः उन्हें दूसरों के बदले में अपना जीवन देना है, जैसा कि यीशु करता है। "तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है" दुनिया से अलग नेतृत्व के लिए एक बुलाहट है, और लोगों को वास्तव में परमेश्वर के कलीसिया के नेतृत्व करने के लिए उस बुलाहट कि आवश्यकता है।

इफिसियों 4:11–16 में पौलुस ने नेतृत्व को मसीह द्वारा कलीसिया को दिए गए लोगों के समूह के रूप में वर्णित किया है जो कि वे जो करते हैं उससे नहीं बल्कि उनके पूर्ण–कक्षीय कार्य के परिणाम के द्वारा जाने जाते हैं:

> और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हों जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर–उधर घुमाए जाते हों। वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

इस परिच्छेद के बारे में हम जो कुछ भी कह सकते हैं, उनमें से कम से कम चार विशिष्ट हैं: यीशु जो नेतृत्व कलीसिया को देता है वह हमेशा एक से अधिक व्यक्ति होता है: यह लोगों का एक समूह है। इतना ही नहीं, बल्कि मसीह के लोगों को सशक्त बनाने के जटिल कार्य को पूरा करने के लिए, नेतृत्व समूह के विभिन्न सदस्यों को एक दूसरे से अलग होने की आवश्यकता है। इस विविधता का शरीर पर एकमात्र जोर और प्रभाव होगा। और अंततः जैसा कि हम त्रियेक्ता में देखते हैं, पौलुस द्वारा सूचीबद्ध ये विभिन्न लोग, प्रत्येक अलग–अलग कार्यों (प्रेरित, भविष्यवक्ता, इंजीलवादी, पासबान और शिक्षक) का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक दूसरे पर निर्भर होना चाहिए।

नेतृत्व के लिये परमेश्वर का उद्देश्य

यीशु ने अपने लोगों को नेतृत्व क्यों दिया? शरीर में नेतृत्व की भूमिका, जैसा कि हमने देखा है, मसीह के लोगों को परमेश्वर के रचनात्मक उद्देश्य में चलने के लिए सशक्त बनाना है। मसीह के प्रत्येक जन को परमेश्वर के साथ बढ़ते और घनिष्ठ संबंध में होना चाहिए। समान रूप से, उन्हें उन सभी रिश्तों में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना है जो वह उन्हें दुनिया में

देता है। तो, कलीसिया नेतृत्व की प्रभावशीलता का माप यह है कि मसीह के लोग वास्तव में इस रचनात्मक उद्देश्य को कितनी अच्छी तरह पूरा करते हैं।

गतिविधियाँ, व्यक्तित्व, और कार्यक्रम जो लोगों को अपने जीवन के नियमित भाग के रूप में स्वयं परमेश्वर से जुड़ने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं, वे सर्वोत्तम रूप से नकली हैं, जो परमेश्वर की बुलाहट के लिए सबसे खराब और एक खतरनाक विकल्प है। गतिविधियाँ और कार्यक्रम जो समर्थन नहीं करते हैं, बल्कि मसीह के लोगों को उन सभी रिश्तों में उनका प्रतिनिधित्व करने से रोकते हैं, जब वे दुनिया में चलते हैं, तो वे परमेश्वर के रचनात्मक उद्देश्य के विकल्प बन जाते हैं, परमेश्वर के लोगों को उनके अर्थ से वंचित कर देते हैं, और अपने लोगों में परमेश्वर के देहधारण की दुनिया को लूट लेते हैं।

नेतृत्व का कार्य, संक्षेप में, ऐसे लोगों की एक मण्डली विकसित करना है जिन्हें अपने ईश्वर–निर्मित उद्देश्य को सुविधाजनक बनाये, ऐसा नेतृत्व तेजी से कम होते जा रही है। इस परिदृश्य में, वे अपने स्वयं के याजक बन जाएंगे (देखें 1 पतरस 2:9) मसीह उनके महायाजक के रूप में, पवित्र आत्मा उनके अन्दर वास करने वाले शिक्षक, और वह संसार जिस पर परमेश्वर उनकी आज्ञाकारिता में स्वयं को उनके माध्यम से चित्रित करेगा।

नेतृत्व बाइबल के नए नियम के आधारित इतना महत्वपूर्ण क्यों है? कई कारणों की वजह से।

बाइबल का नेतृत्व उस छवि को दर्शाता है जिसे त्रिएक परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति में बनाया है। हमारे भीतर परमेश्वर की छवि रिश्ते को दर्शाती है (हम कौन हैं? हम उसके हैं) और प्रतिनिधित्व (हम क्यों मौजूद हैं? हम अपने आस–पास की दुनिया में उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए मौजूद हैं); यह अंतर्निर्भरता को भी दर्शाता है (हम अकेले अधूरे हैं)। हम में उनकी छवि प्रेम को भी दर्शाती है (दूसरों के लाभ के लिए खुद को देना)।

बाइबल आधारित नेतृत्व एक संयुक्त शक्ति को दर्शाता है जो तब आती है जब हम अपनी अपूर्णता को स्वीकारते हैं। भले ही हमारे पास कोई पाप न हो, हम में से प्रत्येक व्यक्ति अभी भी अधुरा है। प्रत्येक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने कलीसिया को नेतृत्व के लिए दिया है, संपूर्ण नमूना और सामर्थ को प्रतिबिंबित करने के लिए दूसरों के साथ मिश्रित और एक साथ हो जाना चाहिए। यह उस संदेश का सार है जिसे हम 1 कुरिन्थियों 12:12–27 में देखते हैं; शरीर के कोई भी अंग अनावश्यक नहीं है; शरीर का कोई भी अंग दूसरे से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होता। कलीसिया को एक देह कहने के लिए, सभी आवश्यक भागों को उपस्थित होना चाहिए, संचालन करना चाहिए, और दूसरों के साथ सहमत होना चाहिए।

बाइबल का नेतृत्व अपने लोगों के लिए एक पूर्ण और समग्र सशक्तिकरण के लिए परमेश्वर के सर्वोत्तम प्रावधान को दर्शाता है। इफिसियों 4:11 उन पांच प्रकार के लोगों की रूपरेखा देता है जिन्हें यीशु ने देह को परमेश्वर के लोगों को विश्वास और जीवन में सामर्थ देने के लिए दिया हैः प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक। इन पांच प्रकार के लोगों के एक साथ सेवा के माध्यम से, परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने वाली झूठी शिक्षाओं से बचाया जाता है और परिपक्व की जाती है जो कि उतार–चढ़ाव के खतरे को दूर करती है। महान परिणाम यह है कि "हम सब परमेश्वर के पुत्र के विश्वास और ज्ञान की एकता को प्राप्त करते हैं, और परिपक्व पुरुषत्व को प्राप्त करके मसीह की परिपूर्णता के कद के माप तक पहुंच जाते हैं" (इफि. 4:13)।

मैं नेतृत्व के इन पांच पहलुओं को "कार्य" कहता हूं, और यह उन सभी पांचों को परस्पर–निर्भर गतिविधि में लाता है जो कि मसीह के लोगों की आवश्यकताओं को प्रदान करती है। प्रेरितों के कार्यकलाप कलीसिया के प्रेरितिक उद्देश्य की याद दिलाता हैः हम यहाँ स्वयं के लिए नहीं हैं और न ही विश्व के इतिहास पर अपनी छाप छोड़ने के लिए, बल्कि परमेश्वर के उद्धार के वादे के लिए हैं जो शुरुआत में किया गया था, जिसे परमेश्वर द्वारा नीचे की ओर व्यवस्थित किया गया था। इतिहास का गलियारा और यीशु में पूर्णता के लिए लाया गया और वह उनकी दुसरे आगमन पर पूरा किया जाएगा। अन्य चार कार्य सुधार, सुसमाचार प्रचार, देखभाल, या शिक्षण सेवकाई प्रदान करते हैं। लेकिन अंत में यह सभी पांच कार्यों के प्रभाव को मसीह के कलीसिया के उपहार के पूर्ण इरादे को पूरा करने के लिए है।

बाइबल नेतृत्व आत्मा के सहयोग से सुसमाचार का प्रचार करने का सबसे अच्छा तरीका है और इसलिए कलीसिया की वृद्धि होती है। कलीसिया की आवश्यक रणनीतिक प्रकृति सदैव प्रेरितिक है! दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के लोग एक भेजे हुए लोग हैं, और हम में से कोई भी जहां भी जाता है, हमें यीशु द्वारा लोगों को स्वयं को अस्वीकार करने, अपने जीवन को लेने और उसका अनुसरण करने के लिए बुलाने का आदेश दिया गया है। वह बुलाहट परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया में होगी क्योंकि पवित्र आत्मा उन्हें निश्चित रूप से स्पष्ट करता है, लेकिन परमेश्वर के लोग उसकी योजना के लिए महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर ने उन्हें इस प्रकार से आकार दिया है कि सभी मसीह के लोगों के माध्यम से सुसमाचार का संदेश दुनिया भर के लोगों तक देखा, सुना और समझा जाए। कलीसिया हमारे आज्ञाकारीता के द्वारा हर किसी को सुसमाचार तक पहुँचने का जरिया प्रदान करती है।

आदरणीय अगुवों के अस्वस्थ अनुयाई पद्धति मे निहित अत्यधिक खतरे से बचने के लिए बाइबल आधारित नेतृत्व सबसे अच्छा तरीका है। बहुत बार, अपने अगुवों के आदर्श के कारण मसीह का अनुसरण करने के बजाय, लोग नेतृत्व में कुछ निश्चित लोगों का अनुसरण करते हैं, जिन्हें केवल सेवकों के रूप में कलीसिया को दिया गया था (देखें मत्ती 20:25–28)।

इस प्रकार मसीह के शरीर में नेतृत्व हमेशा एक से अधिक व्यक्तियों से बना होता है, हमेशा ऐसे लोगों का उपयोग करते है जो एक दूसरे से अलग होते हैं, हमेशा हर दूसरे अग्वे के साथ परस्पर निर्भर रहते हैं, हमेशा अपने उद्देश्य में परमेश्वर के लोगों को परिपक्व करने पर केंद्रित होते हैं अपने प्रभु के सुसमाचार को अपने चारों ओर की दुनिया में ले जाने के लिए, और हमेशा नेतृत्व करने वालों के बजाय प्रभु की महिमा करते हैं। इस तरह के बाइबल नेतृत्व की आज पश्चिमी दुनिया के कलीसियाओं में बहुत आवश्यकता है।

6

कलीसिया के नेतृत्व में अंतर्निर्भरता

नए नियम के नेतृत्व के मूल में अंतर्निर्भरता हमेशा अगुओं के लेने के लिए एक आसान गोली नहीं है, हालांकि यह नए नियम की एक मूलभूत शिक्षा है और कलीसिया के लिए दिया गया दैवीय आकार का एकहिस्सा है। नेतृत्व को एक ऐसी पद्धति में प्रशिक्षित और संस्कारित किया गया है जो पवित्रशास्त्र से अधिक परंपरा और हमारे आसपास की दुनिया से आती है। परन्तु जब यीशु ने कहा, "तुम में ऐसा न हो" (मत्ती 20:26)।

नेतृत्व के शिष्यों के विचारों का निर्माण यहूदी और रोमन संस्कृतियों द्वारा किया गया था, जो दोनों ऊपर से नीचे थे और शीर्ष पर रहने वालों को शक्ति और इसके साथ आने वाले सभी सामानों से पुरस्कृत किया जाता था। लेकिन नेतृत्व जैसा कि यीशु ने सिखाया और जीया, यह व्यक्तिगत सांसारिक शक्ति या जालसाजी के बारे में नहीं था, बल्कि दूसरों की सेवा करने के बारे में था—उनके लिए परमेश्वर द्वारा रचे गए उपहारों, क्षमताओं और जरूरतों को विकसित करने के बारे में था।इसलिए, जैसा कि मत्ती आगे कहते है, मसीह के शिष्यों को सेवक और दास बनना है, वे लोग जो यीशु के आदर्श का अनुसरण करते थे और दूसरों के बदले में स्वयं को दे देते थे।

हमने अपनी पीढ़ी में अभी तक पूरी तरह से नहीं देखा है कि वास्तव में अंतर्निर्भरता नेतृत्व कैसा दिखता है। लेकिन इससे इसकी ईश्वरीय योजना या परमेश्वर की अपेक्षा में कोई बदलाव नहीं आता है। तो नेतृत्व में अंतर्निर्भरता होने का क्या अर्थ है?

अंतर्निर्भरताः यह क्या नहीं है और यह क्या है।

जब एससीपी नेतृत्व में अंतर्निर्भरता के बारे में बात करती है, तो कम से कम दो चीजें हैं जो हमारा मतलब नहीं है।

सबसे पहले, हमारा मतलब यह नहीं है कि अंतर्निर्भरता नेतृत्व में उन लोगों के बीच एक भावनात्मक भावना है, या दूसरे शब्दों में, कि वे केवल एक–दूसरे को पसंद करते हैं। यह सरलता से अधिक कठोर होगा। वास्तव में, अगुओं के लिए यह संभव हो सकता है कि वे उन लोगों को पसंद न करें जिनके साथ वे काम करते हैं, लेकिन प्रेम का रास्ता चुनते हैं और एक दूसरे के साथ एक समृद्ध अंतर्निर्भरता विकसित करने के लिए उनके साथ काम करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार करते हैं। हम एक ऐसी पीढ़ी हैं जो हमारी भावनाओं से बहुत ज्यादा प्रभावित और जुड़ गए हैं। वास्तव में, हमारी पीढ़ी ने हमें सच्चाई के बजाय और, मसीहियों को, परमेश्वर के वचन के बजाय भावनाओं के अनुसार कार्य करना सिखाया है। जब दस शिष्यों ने सुना कि मत्ती 20:20–28 में याकूब और यूहन्ना यीशु के दाएँ और बाएँ हाथ पर बैठना चाहते हैं, तो वे न केवल एक–दूसरे को पसंद करते थे; वे याकूब और यूहन्ना के कार्यों से क्रोधित भी थे। फिर भी, यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें उनके आसपास की दुनिया की तुलना में अलग प्रतिक्रिया देना और कार्य करना है।

दूसरा, हमारा मतलब यह नहीं है कि अंतर्निर्भरता का संबंध, या मित्रता से कोई लेना–देना नहीं है। बहुत से लोग कहते हैं, "हम एक दूसरे को पसंद करते हैं और एक दूसरे के अच्छे दोस्त हैंः इसलिए हम एक अच्छी टीम बनाते हैं।" बेशक, मैं आज्ञाकारिता और सेवकाई के लिए मसीह के लोगों की सुविधा का अनुसरण करते हुए संबंधों की कमी की वकालत नहीं कर रहा हूँ। मैं बस इतना कह रहा हूं कि रिश्ते में रहने से हम अगुवे के रूप में अधिक प्रभावी नहीं हो जाते। बल्कि, हम रिश्ते में हैं क्योंकि हम में से प्रत्येक परमेश्वर की संतान है, और नेतृत्व में हमें परमेश्वर के बच्चों और उनकी जिम्मेदारी का इस दुनिया में प्रबंधन करने के लिए एक साथ बुलाया गया है।

तब हमारा क्या मतलब है जब हम कहते हैं कि कलीसिया में नेतृत्व के लिए दैवीय नमूना का एक तत्व अंतर्निर्भरता है?

अंतर्निर्भरता ईश्वरत्व का स्वभाव है। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा अंतर्निर्भरता में नेतृत्व करते हैं और इसलिए यह अंतर्निर्भरता का सबसे अच्छा उदाहरण है कि यह गुण कैसा दिखता है और यह कैसे काम करता है। परमेश्वर की सन्तान होने के नाते, हम परमेश्वर के स्वरूप और समानता को धारण करने के लिए सृजे गए हैं, और किसी

भी चीज का उतना रणनीतिक महत्व नहीं है जितना कि एक नेतृत्व दल के सदस्य मिलकर मसीह के लोगों की अगुवाई करते हैं। बाइबल की कहानी पिता परमेश्वर की कहानी है जो एकतरफा रूप से सारी सृष्टि को अपने आप में पुनर्स्थापित करने के लिए कार्य कर रहा है—और वह ऐसा संपूर्ण त्रिएकता की अंतर्निर्भरता क्रिया के साथ करता है। परमेश्वर पिता बहाली की इच्छा रखता है, यीशु पुत्र मानव शरीर धारण करके पिता की आज्ञा का पालन करता है, और परमेश्वर आत्मा परमेश्वर के प्रत्येक संतानों के लिए पुत्र की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान को लागू करता है। हम देखते हैं कि त्रिएक परमेश्वर के इस दिव्य नमूना को पूरे पवित्रशास्त्र में अक्सर अंतर्निर्भरता में कार्य करते हुए देखा जाता है।

यही नमूना अन्य रिश्तों में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, दुनिया केवल पर्याप्त भौतिक अंतर्निर्भरता पर बनी है ताकि पृथ्वी को मानव जीवन को बनाए रखने के लिए जाना जाने वाला एकमात्र ग्रह हो। विवाह, जैसा कि ईश्वर द्वारा दिया गया है, उस पुरुष और महिला की अंतर्निर्भरता है जिसमें पुरुष और महिला एक दूसरे से भिन्न होते हैं, लेकिन साथ ही इस रिश्ते के पीछे दैवीय नमूना पूरा करने के लिए समान हो जाते हैंः जैसे प्रजनन, अंतरंग संबंध, काम में साझेदारी, और पति और पत्नी के रूप में परमेश्वर की महिमा की एक साथ पूरा करने के लिए परमेश्वर के दिया सेवकाई में भाग लेते है। अंतर्निर्भरता भी देह में विश्वासियों के बीच संबंधों का सार हैः

> क्योकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं। (1 कुरिन्थियों 12:12—14)

त्रिएक परमेश्वर शरीर के प्रत्येक सदस्य को शरीर में अपने निर्धारित उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी चीजें देने के लिए अंतर्निर्भरता रूप से कार्य करता हैः

> वरदान तो कई प्रकार के है, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार के है, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के है, परन्तु परमेश्वर एक ही है; जो सब मे हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। (1 कुरिन्थियों 12:4—6)

अंतर्निर्भरता केवल स्थानीय कलीसियाओं के भीतर ही नहीं बल्कि मसीह के बड़े शरीर के भीतर भी होनी चाहिए है। जिसे हम आज कलीसिया कहते हैं, उसे अधिक उपयुक्त रूप से मण्डली कहा जाता है, जो कि एक बड़ी भौगोलिक इकाई का सदस्य है जिसे कलीसिया कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, एक शहर या क्षेत्र में एक कलीसिया कई कलीसियाओं से बना है। वास्तव में, प्रेरितों की अधिकांश शिक्षाओं को इस व्यापक अंतर्निर्भरता के प्रकाश में देखा जाना चाहिए लेकिन हम नए नियम की शिक्षाओं को वरदानों, कार्यालयों या आर्थिक प्रबंधन के बारे में सिखाने की कोशिश करते हुए पकड़े जाते हैं, जो इसके आवेदन को धारण करने के लिए बहुत छोटे बक्से में फिट करते हैं–अर्थात, स्थानीय कलीसियाएँ और मसीह के शरीर के बाकी हिस्सों से अलग कर देते है।

इसके अलावा, इफिसियों 4:11 में सूचीबद्ध नेतृत्व के पांच कार्य वास्तव में केवल कलीसिया के इस बड़े विचार में ही अर्थपूर्ण हैं, न कि जिसे हम आज कलीसिया कहते हैं, जो वास्तव में एक मण्डली है। जैसा कि इफिसियों 4:12–16 स्पष्ट रूप से कहता है, ये कार्य, जिन्हें केवल एक व्यापक भूगोल के बड़े मैट्रिक्स के माध्यम से समझा जा सकता है, किसी कार्य को करने या किसी के महत्व को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि मंडलियों के अंतर्निर्भरता खेल के माध्यम से दिए गए हैं। बड़े भौगोलिक कलीसिया के भीतर, संतों को सेवकाई का कार्य करने के लिए सशक्त बनाने और उन्हें बाइबल की सच्चाई से बंधे रहने में मदद करने के लिए दिये गए है। जब नेतृत्व इस तरह से कार्य करता है, तो लोग अपनी ईश्वर–निर्धारित योजना के प्रति आज्ञाकारिता में बढ़ते हैं कि वे जो कुछ भी कहते और करते हैं, उसमें वे परमेश्वर के प्रतिनिधि करने वाले बन जाते हैं।

डी. ए. कार्सन उस आनंद पर टिप्पणी करते हैं जो यीशु अपने अनुयायियों को देता है जब वे उसकी आज्ञाकारिता में चलते हैं, आत्म–संरक्षण को अलग रखते हुए और परमेश्वर की बुलाहट की पूर्णता को स्वीकार करते हैं:

पतित दुनिया में मानवीय आनंद सबसे अच्छा अल्पकालिक, उथला, अधूरा होगा, जब तक कि मानव अस्तित्व मसीह यीशु में परमेश्वर के प्रेम के अनुभव से आगे नहीं बढ़ जाता है, जिस प्रेम के लिए हम बनाए गए थे, एक पारस्परिक प्रेम जो बिना किसी आरक्षण के आज्ञाकारिता से मिलता है। पुत्र अपने शिष्यों को एक अलग पैकेज के रूप में अपनी खुशी नहीं देता है; वह अपनी खुशी साझा करता है क्योंकि वे उसकी आज्ञाकारिता को साझा करते हैं, वह आज्ञाकारिता जो स्वेच्छा से स्वयं के मर्जी से मृत्यु का सामना करते है।

अंतर्निर्भरता के संचालन को बढ़ाना

जब नेतृत्व में कुछ गुण हों तो अंतर्निर्भरता को जीना बहुत आसान हो जाता है।

आध्यात्मिक रूप से परिपक्व लोगों में अंतर्निर्भरता प्रभावी होती है। परिपक्व अगुवे वे हैं जिन्होंने ध्यानपूर्वक कान और आज्ञाकारी हृदय के साथ परमेश्वर के वचन में समय बिताया है और देह की विनाशकारी इच्छाओं से लड़ने की क्षमता में बढ़ रहे हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखी अपनी पहली पत्री में ऐसे अगुवों का वर्णन किया हैः

> यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले कम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नि का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि–सत्कार करनेवाला, और सिखाने मे निपूर्ण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरण कोमल हो, और न झगडालू, और न धन का लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल–बचों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर का ही प्रबंध करना न जनता हो, तो परमेश्वर के कलीसिया कि रखवाली कैसे करेगा? फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहर वालों मे उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे मे फंस जाय। (1 तीमुथियुस 3:1–7)

नेतृत्व करने वालों को जिम्मेदारी चाहिए, हां। हालाँकि, यह इच्छा ईश्वर द्वारा निर्देशित होनी चाहिए, नही ंतो यह वास्तव में भ्रष्ट है।

नेतृत्व में किसी को तिरस्कार से ऊपर होना चाहिए–सिद्ध नहीं, लेकिन शंका, संदेह या आरोप नहीं होना चाहिए। पौलुस 1 तीमुथियुस 5:19 में इस बिंदु को जोड़ता है, तीमुथियुस से कहता है कि बिना गवाहों के एक प्राचीन के खिलाफ दोष न लगाएं।

एक अगुवे को एक महिला का पुरुष होना चाहिए; अपनी पत्नी के लिए उसकी निष्ठा, विश्वासयोग्यता और देखभाल स्पष्ट होनी चाहिए और उस पर ही निछावर करना चाहिए। उसे एक संयमी व्यक्ति, आसानी से क्रोधित न करनेवाला होना चाहिए, बल्कि अपने और दूसरों के साथ भी हाथ मिलानेवाला चाहिए। उसे कुछ चीजों से दूर रहकर और दूसरों के प्रति काम करते हुए खुद पर नियंत्रण रखने में सक्षम होना चाहिए। उसे दूसरों का सम्मान करना चाहिए (इसका मतलब हमेशा पसंद करना नहीं होता)। उसे अपने घर और निजी स्थानों को दूसरों के साथ साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए और दूसरों को परमेश्वर के वचन को समझने में मदद करने में सक्षम होना चाहिए, विश्वासियों को उनके याजकीय में उनकी

जिम्मेदारी के केंद्र बिंदु के रूप में सशक्त बनाना चाहिए। उसे लोगों के साथ कठोर नहीं होना चाहिए, लेकिन सभी परिस्थितियों में नम्र होना चाहिए (हालाँकि नम्रता कोई काम के समान नहीं है)। उसे विवादी नही होना चाहिए, न ही उसे धन और उसकी प्रतिष्ठा, शक्ति और आत्मग्लानि से प्रेम करना चाहिए। वह अपने परिवार को अच्छी तरह से देखभाल करने में सक्षम होना चाहिए, जैसा कि उन बच्चों द्वारा प्रमाणित होता है जो अधिकार के प्रति उत्तरदायी हैं।

यह सब दो दिलचस्प निष्कर्षों की ओर ले जाता हैः अगुवे को विश्वास में युवा नहीं होना चाहिए, और कलीसिया के बाहर भी उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। एक अगुवे को एक युवा विश्वासी क्यों नहीं होना चाहिए? क्योंकि उपरोक्त गुणों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुशासन विकसित करने में समय लगता है। हमें युवा विश्वासियों को विकसित होने का समय देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि हम अपने अनंत भाग्य को अपरिपक्व अगुओं पर डाल दें और गलतियों के लिए बड़ी संभावना पैदा करें। जब पौलुस ने तीमुथियुस को जिन गुणों को सूचीबद्ध किया, वे नेतृत्व और परिपक्व करने के लिए होते हैं, जिससे बाहरी लोग भी उन्हें पहचान लेते हैं।

कलीसिया को सावधान रहना चाहिए कि वह अगुवों का चुनाव कैसे करती है, क्योंकि नेतृत्व की बुलाहट मे शैतान की ओर से विशेष खतरा होती है। एक अगुवे को मूल और सबसे घातक पाप में लिप्त होने का आसान जोखिम होता हैः घमंड, परमेश्वर की तरह बनने की चाहत या, अधिक स्पष्ट रूप से, परमेश्वर बनने की चाहत (यहेजकेल 28:2 देखें)। शैतान के लिए कहर बरपाने और विनाश करने का सबसे अच्छा तरीका है कि किसी व्यक्ति के विश्वास की प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया जाए, विशेष रूप से वे लोग जो विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंतर्निर्भरता उन लोगों में प्रभावी होती है जिन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है और सेवकाई के अंतिम परिणाम के प्रति वफादार हो सकते हैं। ऐसे लोग दूसरों में वरदानों और कार्यों की विविधता की सराहना करने और उसे अपनाने में बेहतर होते हैं। मैं मसीह के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के प्रति अंध निष्ठा या वफादारी की बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि एक वफादारी जो उसके कलीसिया के लिए परमेश्वर के नमूना को समझने से आती है–कि इस दुनिया में परमेश्वर का देहधारण है। इस तरह की वफादारी एक अगुवे को स्पष्ट रूप से और लगातार अपने लोगों में परमेश्वर की सभी प्रतिभा को दुनिया में केंद्रित करने का कारण बनती है। इस तरह की वफादारी एक अगुवे को यह समझने में सक्षम बनाती है कि लोगों कि अगवाई करने के लिए एक से अधिक लोगों, वरदानों के एक गुच्छा या एक कार्यविधि के करने की आवश्यकता है। वास्तव में, भौगोलिक क्षेत्र जितना व्यापक होगा, सभी पांच कार्य

मौजूदा कलीसियाओं को यीशु की तरह बनने, सुसमाचार प्रचार का कार्य करने, और नई कलीसियाओं को बढ़ाने के लिए पूरी तरह से संगठित करने के लिए आवश्यक होंगे।

अंतर्निर्भरता उन लोगों में प्रभावी है जो समझते हैं कि दुनिया में जो सेवा है वो परमेश्वर की सेवा है—कलीसिया के माध्यम से, उनकी अंतर्निर्भरता का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है। अन्य सभी वांछित परिणाम कलीसिया को भ्रमित, प्रदूषित या संसार में मसीह का देहधारण बनने और उस कार्य को पूरा करने से रोकते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने संसार की रचना की थी।

मेरे आध्यात्मिक गुरु, जैसा कि मैंने अध्याय 1 में उल्लेख किया है, मुझे लगातार पवित्रशास्त्र को मेरी नींव और प्रेरणा के रूप में इंगित किया। वे समझ गए थे कि कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य परमेश्वर की पवित्रशास्त्र की कहानी में निहित है, जो पुरुषों और महिलाओं को उनके रिश्ते और प्रतिनिधित्व के दिव्य नमूना में पुनर्स्थापित करने की मांग करता है। हालाँकि, आज कलीसिया में अधिकांश लोगों को नेतृत्व के द्वारा कलीसिया के एक गलत विचार और इसके उद्देश्य में उनकी भागीदारी के आधार पर उम्मीदों में बंधा हुआ बनने की अनुमति दी गई है। ये लोग किसी भी ऐसी चीज की अपेक्षा नहीं करते हैं जो प्रारंभिक कलीसिया को परिभाषित करती हो; इसके बजाय वे उम्मीद करते हैं कि नेतृत्व कुछ भी करे और सब कुछ करे ताकि उनके लिए कलीसिया में रहना संभव या आकर्षक हो। गाड़ियों को रखने कि संरचना, बड़ी इमारतें, व्यापक कार्यक्रमों और रोमांचक आराधना और शिक्षण सेवाओं के माध्यम से, पश्चिमी कलीसिया ने अक्सर लोगों को सिखाया है कि यह वास्तव में उनके बारे में है। इसमें कलीसिया ने मनुष्य की अंतर्निहित संकीर्णता और हमारी संस्कृति की बढ़ती आत्म—केंद्रियता के साथ सहयोग किया है, या बढ़ाया है। नेतृत्व को अब लोगों को यीशु के वचनों के प्रकाश में कार्य करने के लिए बुलाना चाहिए।

इसका मतलब एक लंबी सड़क होगा

- बहुत से लोगों को फिर से प्रचारित करना जो न केवल नाम मात्र के हैं बल्कि वास्तव में विश्वासी नहीं हैं,
- कई लोगों को यह महसूस करने में मदद करने के लिए कि वे जिस विश्वास को समझते हैं वह गलत है, और
- परमेश्वर के साथ अपने दैनिक संबंधों को अपने जीवन के केंद्र में रखने के लिए सभी लोगों को नयी आकृति प्रदान करना।

अंतर्निर्भरता उन लोगों में प्रभावी होता है जो समझते हैं कि आध्यात्मिक व्यावहारिकता उसका केंद्र है। नेतृत्व दल के लोगों के बीच मित्रता और संबंध महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अंततः नेतृत्व को एक दिव्य उद्देश्य के लिए बुलाया गया है और उन लोगों के बीच जिम्मेदारी दी गई है जो परमेश्वर के हैं। अगुवों को कुछ काम पूरा करना होता है, पहले परमेश्वर के लोगों के साथ और फिर उस दुनिया के साथ जो उसने हमें जीने के लिए दी है।

अगुवों को परमेश्वर के लोगों को उसकी मूल योजनाः उसके साथ संबंध और उसके प्रतिनिधित्व में पोषित करना है। यीशु मसीह में इस मूल नमूने को पुनर्स्थापित किया गया, और जब वह नई दुनिया लाएगा तो यह पूरी तरह से होगा। उसके लोगों में पवित्र आत्मा वास करता है और इसलिए वह पूरी तरह से उन लोगों में विकसित होने में उसके साथ सहयोग करता है जो वह चाहता है। संक्षेप में, परमेश्वर के लोग अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं और बलिदान और सेवा का जीवन जी सकते हैं, और नेतृत्व का कार्य ऐसा करने में उनकी सहायता करता है। परमेश्वर पवित्र आत्मा इसका उपयोग व्यक्तिगत जीवन के छोटे स्तर के साथ–साथ मंडलियों और कलीसियाओं के बड़े स्तर पर अपने संदेश को बढाने और दूसरों को अपने पास लाने के लिए करता है।

अंततः, नेतृत्व को यीशु के अनुयायियों को उनके द्वारा अंगीकार किए गए विश्वास के अनुरूप जीवन जीने में मदद करने के लिए बुलाया जाता है। नये नियम और ग्रीक विद्वान मेरिल टेनी ने युहन्ना की पुस्तक से इस शक्तिशाली अंतर्दृष्टि को उस विश्वास के बीच नाजुक नृत्य पर देखा जिसकी हम घोषणा करते हैं और जो जीवन हम जीते हैंः

> (विश्वास के लिए), पिस्तुओ, नामक ग्रीक शब्द का प्रयोग सुसमाचार में कम से कम अट्ठानवे बार किया गया है और परंपरागत रूप से विश्वास का अनुवाद किया गया है, हालांकि कुछ उदाहरणों में इसे विश्वास या समर्पण कहा जाता है। इसका अर्थ कभी भी किसी प्रस्ताव को मात्र स्वीकृति देना नहीं है। इसका आमतौर पर किसी व्यक्तिगत दावे की स्वीकृति या यहां तक कि किसी आदर्श या व्यक्ति के प्रति पूर्ण व्यक्तिगत समर्पण होती है। युहन्ना ने अपने पढ़नेवालों को वास्तविक संकेतों के आधार पर एक स्थिर विश्वास की ओर ले जाने की कोशिश की, जो ऐतिहासिक घटनाएँ थीं, और जो उनके पीछे की आध्यात्मिक वास्तविकता को भी दर्शाती हैं।
>
> यह अंत जीवन शब्द में व्यक्त किया गया है। चौथे इंजील में जीवन, 'जोए', का अर्थ पशु जीवन या मानव अस्तित्व के कार्यप्रणाली से अधिक है। इसे यूहन्ना 17:3 में यीशु द्वारा सावधानीपूर्वक परिभाषित किया गया है। . . . जीवन, इस प्रकार परिभाषित, विभिन्न तत्वों से युक्त है। इसका तात्पर्य चेतना से हैः क्योंकि चेतन के अस्तित्व के बिना कोई ज्ञान नहीं है। इसके अलावा, यह संपर्क का प्रतीक हैः क्योंकि कोई उन

चीजों को नहीं पकड़ सकता है जिनसे उसका न तो प्रत्यक्ष और न ही अप्रत्यक्ष रूप से संपर्क है। फिर से, इसमें निरंतरता, या अवधि शामिल है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान उसके साथ सह–अस्तित्व को मानता है। और अंत में, यह विकास मान लेता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान बढ़ता हुआ होना चाहिए, स्थिर वस्तु नहीं। सुसमाचार की शिक्षा का उद्देश्य अनन्त जीवन, और मनुष्य का पूर्ण भाग्य है।

अंतर्निर्भरता नेतृत्व स्पष्ट रूप से सुसमाचार के साथ दुनिया तक पहुँचने के लिए जनादेश को देखता है और इसे पूरा करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे करने के लिए व्यावहारिक रूप से आगे बढ़ता है। वे इस परिणाम के अनुसार और पवित्र आत्मा के दैनिक निर्देशन में धन, संपत्ति, लोगों और अवसरों का निवेश करते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त करना, पसंद किया जाना, खुश लोगों को सुनिश्चित करना, और अत्यधिक मात्रा में संपत्ति प्राप्त करना, ये सभी कलीसिया के सबसे महत्वपूर्ण कार्य से विचलित कर देते हैंः परमेश्वर के दिव्य नमूना को पूरा करना और हमारे उद्धारकर्ता के अंतिम आदेश को पूरा करना।

अंतर्निर्भरता उन लोगों में प्रभावी है जो यह महसूस करते हैं कि यह पवित्र आत्मा है जो नेतृत्व टीमों का निर्माण करता है। नेतृत्व टीम को एक कलीसिया द्वारा नहीं बनाया जाना चाहिए जो अपने स्वयं के दर्शन को ही पूरा करते है या इससे भी बदतर, अपने कार्यक्रमों का नेतृत्व करते है। कलीसिया को उन लोगों का नेतृत्व करने के लिए बुलाना है जिन्होंने उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर की दिव्य प्रतिभा को आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर मे पकड़ रखा हैं। भले ही कलीसिया को यह महसूस करना चाहिए कि यह परमेश्वर पवित्र आत्मा है जो उन्हें एक साथ लाएगा, फिर भी इसे उन लोगों की तलाश में होना चाहिए जो लोगों के साथ संबंध और प्रतिनिधित्व बहाल करने के परमेश्वर के उद्देश्य को स्वीकार करते हैं। कलीसिया अक्सर नेतृत्व के निर्माण के बारे में अच्छा नहीं रहा है, लेकिन परमेश्वर द्वारा नेतृत्व के लिए बुलाए गए लोग पूरी दुनिया में बिखरे हुए हैं, दूसरों की पहचान करने, कल्पना करने, प्रशिक्षित करने और उन्हें मुक्त करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमारा कार्य पवित्र आत्मा पर निर्भर होना है कि आत्मा हमें उनके पास ले जाए।

नेतृत्व के लिए एक अनोखी बुलाहट

एक अंतिम बिंदु जो अंतर्निर्भरता को प्रभावी बनाने में मदद करता है, उस पर अधिक विस्तार से ध्यान देने की आवश्यकता है। अंतर्निर्भरता उन लोगों में प्रभावी है जो इफिसियों 4:11 के पांच कार्यों के साथ भ्रमित नहीं होते हैं, जो केवल कुछ रिश्तेदारों को शामिल करते हैं, शेष मसीह के लोगों को छोड़, जिन्हें 1 कुरिन्थियों 12 में बताए गए अनुसार आत्मा के वरदान दिए

गए हैं। नेतृत्व के कार्यों वाले और मसीह के शरीर के अन्य सदस्यों को अंतर्निर्भरता में काम करना चाहिए, लेकिन जो लोग इफिसियों 4:11 के कार्यों को पूरा करते हैं, वे तनाव में और शरीर में बाकी सभी के विपरीत तीन अवधारणाओं को धारण करते हैं।

पहला, जिन्हें इफिसियों 4:11 मे दिए गए नेतृत्व कार्यों का प्रयोग करने के लिए बुलाया गया है, जैसा कि हमने नोट किया है, उन्हें मसीह द्वारा कलीसिया को सेवकाई के कार्य में सशक्त बनाने और लोगों को मसीह के जीवन में बढाने और उसके वचन मे जागरूकता लाने में मदद करने के लिए दिया गया है: उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाला नियुक्त करके, और कुछ को सिखाने वाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह के देह उन्नति पाए" (इफि. 4:11–12)।

दूसरा, आत्मा उन लोगों को वरदान देता है जिनके पास वो पांच कार्य होते हैं, क्योंकि ये लोग पहले मसीह के अनुयायी हैं, पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। इसलिए जब प्रत्येक अगुवे का कोई न कोई कार्य होता है, प्रत्येक के पास ऐसे वरदान भी होते हैं जो उसकी सेवकाई को विशिष्ट बनाते हैं। नेतृत्व की टोली के वरदान तब एक मूसा के सामान बन जाते हैं जो विशिष्ट रूप से मिश्रित, नमूना और शरीर में आत्मा द्वारा उपयुक्त किया जाता है और पिता की इच्छा को सर्वोत्तम रूप से पूरा करने के लिए दुनिया में रखा जाता है। हम यह कह सकते हैं कि वरदान एक ऐसा इंजन है जो नेतृत्व को अपने कार्यों को पूरा करने में सक्षम बनाता है।

प्रेरितों के कार्य सुसमाचार के निरंतर विस्तार को प्रेरित करता है, विशेष रूप से नए स्थानों में, और इसके परिणामस्वरूप नए कलीसियाओं का स्थापना होती हैं। भविष्य के कार्य कलीसिया को खतरे के बारे में जागरूक करता है और शरीर को आज्ञाकारिता के लिए बुलाने के उपकरण के रूप में शरीर में सुधार के लिए पूर्ण वचन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इंजीलवादी कार्य सुसमाचार की प्रकृति को शरीर में और उसके माध्यम से गतिमान रखता है; जो लोग इस कार्य को करते हैं वे नए लोगों को मसीह मे देखने के लिए आगे बढ़ते हैं और, समान रूप से, महत्वपूर्ण रूप से, शरीर को प्रत्येक व्यक्ति की गवाही के बारे में जागरूक रखते हैं। पासबानो के कार्य लोगों की देखभाल करता है, लोगों को एक–दूसरे की जरूरतों के बारे में जागरूक करता है और व्यक्तिगत शरीर के सदस्यों के माध्यम से और उनके लिए कार्य करता है। शैक्षणिक कार्य बाइबिल की सच्चाई को उस नींव के रूप में रखने की आवश्यकता को प्रेरित करता है जिससे प्रत्येक सदस्य बंधे हुए हैं उस सीमा जिसके अन्दर वह रहते है। फिर भी क्योंकि नेतृत्व टोली के वरदानो को मूसा के सामान अनोखा और विविध है, जिस तरह से प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य करता है वह अलग होता है।

तीसरा, जिन लोगों के पास पाँच कार्य हैं, जैसा कि हमने देखा है, उन्हें न केवल कलीसिया की स्थानीय अभिव्यक्तियों के लिए दिया गया है, बल्कि मसीह के शरीर अर्थात कलीसिया के अधिकांश सदस्य के जीवन के लिए दिए गए हैं। पौलुस, यूहन्ना, पतरस और याकूब के पास अन्य लोगों के समूह थे जो उनके साथ किसी भी एक समय मे काम करते थे और जाहिर तौर पर कभी भी एक ही समय में एक ही स्थान पर नहीं थे। (बेशक, इन पहले प्रेरितों को सीधे मसीह द्वारा भेजा गया था, आज कल के प्रेरितिक कार्य वाले लोगों के विपरीत। इफिसियों 4:11 के कार्य वाले लोग आज सीधे मसीह द्वारा नहीं भेजे जाते हैं लेकिन उनके कलीसिया के माध्यम से चुने जाते हैं।) हमें ध्यान रखना चाहिए। इसलिए, इन महान भौगोलिक कार्यों को चलाने के लिए मसीह द्वारा दिए गए नेतृत्व को उस नेतृत्व के साथ भ्रमित नहीं करना है जो आज हम स्थानीय कलीसियाओं में देखते हैं।

इफिसियों की व्याख्यात्मक समझ, और विशेष रूप से इफिसियों 4 के वो पांच कार्य, केवल स्थानीय कलीसिया के लिए इरादा कि गयी नेतृत्व के सनझ से अलग कार्य करती है। जैसा कि हम पौलुस, बरनबास, पतरस और अन्य लोगों के साथ देखते हैं, जबकि नेतृत्व को एक समय के लिए एक स्थानीय क्षेत्र में बांधा जा सकता है, उनकी सेवकाई वास्तव में भौगोलिक रूप से बहुत व्यापक है। नए नियम के अगुवे पूरे रोमन साम्राज्य पर और भारत में थॉमस की तरह, पूरी दुनिया में केन्द्रित और सक्रिय थे। मेरा मानना है कि पाँच कार्यों को करने के लिए जितने लोग सोचते हैं, उससे कहीं कम लोग बुलाए जाते हैं। उनकी भूमिकाओं की सुविधाजनक और व्यापक भौगोलिक प्रकृति में, दूसरों के अनुसार, उनमें से कई को पूरी दुनिया में कार्य पूरा करने की माँग नहीं की जाएगी।

क्योंकि कार्य करने वाले लोगों के पास भी आत्मा द्वारा दिए गए वरदान होते हैं, ठीक मसीह के सभी लोगों के सामान, उनके कई कार्य स्थानीय स्तर पर उनके वरदानो के माध्यम से किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, कलीसिया की प्रेरितिक प्रकृति की एक मजबूत समझ रखने वाला एक अगुवा घर के नजदीक एक भौगोलिक क्षेत्र में एक विस्तार सेवकाई चला सकता है और नए कलीसियाओं का स्थापना होते हुए देख सकता है। इंजीलवाद के वरदान के साथ एक अगुवा भी घर के करीब सेवा कर सकता है और देख सकता है कि लोग मसीह के लिए जीते हैं और शरीर को उसके गवाह बना सकता है। कलीसिया में इफिसियों 4:11 के कार्यों को समझने और उनका अभ्यास करने में आज एक बड़ा जटिल कारक कलीसिया का छोटे छोटे टुकडो मे बटना है। बहुत से लोग स्थानीय कलीसियाओं को मसीह के शरीर की पूर्ण और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। इस प्रकार प्राथमिक स्थान की अंतर्निर्भरता की आवश्यकता है—जो स्थानीय संदर्भ में—खो गया है, और कलीसिया लाखों टुकड़ों में विभाजित हो गयी है। लेकिन नया नियम बड़ी कलीसिया में अंतर्निर्भरता को दर्शाता है। पत्रियों को उस चीज के लिए नहीं लिखा गया था जिसे आज हम एक कलीसिया कहते

हैं, बल्कि उन संग्रहों के लिए जिन्हें हम किसी शहर या क्षेत्र के एक बड़े सहर या छेत्र के कलीसिया के रूप में बेहतर पहचान सकते हैं। इन कलीसियाओं में प्राचीनों और डीकनों द्वारा सेवा की जाती थी, उनमें से कुछ शायद स्थानीय संदर्भ से थोड़ा अधिक व्यापक रूप से काम कर रहे थे। इस प्रकार प्रेरितों के साथ काम करने वाले लोगों की टोली, ज्यादातर व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में सुसमाचार के एक रणनीतिक प्रेरितिक विस्तार में, कई इलाकों से आए और गए जहां सुसमाचार कि आवश्यक थी। उन स्थानों में उन्होंने वह सब कुछ भर दिया जो इन स्थानों की कलीसियाओं को परमेश्वर के वचन और यीशु के जीवन के बारे में अपनी समझ बढ़ाने के लिए आवश्यक था जिसमें उन्हें बुलाया गया था। इन भेजे गए लोगों ने कलीसियाओं को गलत शिक्षाओं और शिक्षकों से बचाने के लिए आवश्यक बाइबल की शिक्षाओं और सीमाओं को समझने में भी मदद की और मंडलियों में लोगों के जीवन और गवाही के माध्यम से सुसमाचार की निरंतर प्रगति को जारी रखा।

समय, इतिहास, संप्रदायवाद, कलीसिया कि जीवन के अत्यधिक बनावट, और मानवीय अहंकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका में कलीसिया को बाइबल की संरचना से अलग कर दिया है। क्या हम कभी इसे पुनः स्थापित होते हुए देखेंगे? मैं नहीं जानता, लेकिन इसे बेहतर ढंग से समझने से हमें ईश्वर पर विश्वास करने और इसे लाने का प्रयास करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अतः अंतर्निर्भरता, कलीसिया का नेतृत्व है जो त्रिएक परमेश्वर की प्रकृति में कार्य करता है, हर एक अलग कार्य करता है लेकिन परिणाम में अन्य सभी के साथ एकजुट हो जाता है। यह पूछना कि कौन प्रभारी है या अधिक महत्वपूर्ण या अधिक रणनीतिक है, बाइबल की दृष्टि से बेतुका है। हर एक अगुवे के महत्व को इस तथ्य से परिभाषित किया जाता है कि वह परमेश्वर द्वारा अपनी कलीसिया के लिए एक वरदान है। इस प्रकार, यह प्रत्येक अगुवे की भूमिका को परिभाषित करता है और, सबसे महत्वपूर्ण बात, परमेश्वर के द्वारा दिया गया दर्शन का परिणाम है।

परमेश्वर ने नेतृत्व को अपने लोगों के बीच में रखा है ताकि वह अपने बच्चों में विश्वास को जन्म दे और बढाएं। नेतृत्व उद्धार उत्पन्न नहीं करता है—केवल परमेश्वर ही ऐसा करता है—लेकिन वे ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग परमेश्वर दूसरों को समझने, स्वीकार करने और विश्वास में बढ़ने में मदद करने के लिए उपयोग करता है। अंतिम परिणाम—पूरी दुनिया में फैली दया—सबसे अधिक प्रभावी है जब बाजार, विवाह, परिवारों और कलीसियाओं में परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में परिपक्व हो रहे हैं और उसका प्रतिनिधित्व करने में अपनी प्रभावशीलता में बढ़ रहे हैं।

कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने अपने शिष्यों के साथ इतनी प्रभावी भाषा का इस्तेमाल कियारू: "तुम में ऐसा नहीं है"!

7

अमेरिकी कलीसिया के लिए अब क्या?

तो हमें क्या करना है? अमेरिका में कलीसिया की संरचना में प्रमुख चिंताओं को देखने के बाद, हम इन मामलों को कैसे संबोधित कर सकते हैं और परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार एक कलीसिया बन सकते हैं?

मैं अमेरिकी कलीसिया में सब कुछ के ढेर सारी परिवर्तन की वकालत नहीं करता, लेकिन मुझे विश्वास है कि हमें इस तथ्य पर विचार करने की आवश्यकता है कि हमारे वर्तमान पश्चिमी कलीसिया संरचनाओं का विश्वासियों के सोचने के तरीके पर अधिक प्रभाव पड़ता है और अंततः, हम आम तौर पर सोचते हैं उससे अधिक कार्य करते हैं। यहां तक कि जब हमारे पास सही संदेश होता है, तो हम जो करते है वह हम जो कहते है उसे धुंधला कर सकती है।

पश्चिमी दुनिया की कलीसिया में हाल के वर्षों में सबसे बड़ी त्रुटियों में से एक अनुरूप होने का प्रयास है। बहुत से लोग इस तर्क में शामिल हो गए हैं कि यदि हम अपने आस–पास के लोगों के लिए और अधिक अनुरूप हो सकते हैं, तो निश्चित रूप से वे यीशु और कलीसिया में अधिक रुचि रखेंगे (कभी–कभी मुझे डर लगता है कि बाद मे यह लोगों के दिमाग में सबसे अधिक सर्वोच्च होगा)!

प्रासंगिकता हमारे समय में कलीसिया की प्राथमिक आवश्यकता नहीं है। हमें वास्तव में जिस चीज की आवश्यकता है, वह लोगों को सुसमाचार तक पहुंचने के लिए सहायता प्रदान करना। इसमें अच्छी बात यह है कि कलीसिया, बाइबल और रणनीतिक रूप से, पहले से ही अधिकांश लोगों के लिए भौतिक रूप से उपलब्ध है; मसीही लगभग हर भौगोलिक स्थिति में काम करते हैं, अध्ययन करते हैं, छुट्टियां मनाते हैं और रहते हैं। समस्या यह प्रतीत होती है कि अधिकांश मसीह अनुयायी या तो परमेश्वर के उद्देश्य को नहीं समझते हैं या अपने आसपास के लोगों से जुड़ना नहीं चाहते हैं। फिर भी यह अभी भी सच है कि अधिकांश लोग

जो मसीह के पास आते हैं, एक मसीही के साथ संबंध के माध्यम से ऐसा करते हैं जिसने प्रभु और उनके संदेश को उन्हें उपलब्ध कराया है।

मुझे संदेह है कि आधुनिक कलीसिया की आराधना, प्रचार, इमारतों, अगुओं, और यहां तक कि उनके द्वारा नियोजित गाड़ी रखने के स्थल में प्रासंगिकता के लिए अन्य मासिहियों को अपने ब्रांड के लिए आकर्षित करने और जो हमारे पास है उसे अपने पास रखने की अधिक कोशिश करते है–न कि खोये हुओं को लाने मे। हम लोग बहुत बोर हो रहे हैं। हम खेलों से ऊब चुके हैं, इसलिए निर्माता हर साल और प्रयास करता है उसे बेहतर बनाने के लिए। हम अपनी नौकरी से ऊब चुके हैं, इसलिए हम नई नौकरी की तलाश करते हैं। हम अपने घरों से ऊब चुके हैं, इसलिए हम जरूरत के अनुसार तैयार की गई अपनी आत्म–केंद्रित अपेक्षाओं को बेहतर ढंग से संभालने के लिए नए घर खरीदते हैं। हम अपनी कलीसियाओं से ऊब चुके हैं, इसलिए हम नए रोमांचक "प्रासंगिक" कलीसियाओं की तलाश करते हैं। हर समय (पैसे के बारे में कुछ भी नहीं कहते) जो हम बेहतर आराधना, बेहतर उपदेश, बेहतर बच्चों के कार्यक्रमों और मिलने के लिए बेहतर इमारतों पर खर्च करते हैं, वह वास्तव में वह हम पर ही खर्च होता है।

प्रासंगिकता के बाद कलीसिया के उत्तेजित उत्साह के बावजूद, शोध विशेष रूप से तीन कठोर वास्तविकताओं को दिखाता है। पहला, पश्चिम में नियमित रूप से कलीसिया जाने वाले लोगों की संख्या में हाल के वर्षों में तेजी से गिरावट आई है। दूसरा, लोगों का इधर से उधर होता हुआ समूह जिसे हम रखना चाहते हैं, चाहे वे किसी अन्य कम–रोमांचक कलीसिया में सक्रिय रहे हों या अभी अभी "बिना कलीसिया के व्यक्ति" वाली उपाधि में शामिल हुए हों, वास्तव में एक नई कलीसिया में चार साल से अधिक नहीं रहते हैं। तब वे फिर से चले जाते हैं! कई लोग, शायद, दो या तीन बार कलीसिया बदलने के बाद, अंत में बिना कलीसिया के व्यक्ति वाली उपाधि में शामिल होने के लिए, अंतिम बार कलीसिया बदलते हैं, या लगभग पूरी तरह से बाहर निकल जाते हैं। तीसरा, मापने योग्य भक्ति उन लोगों में नहीं बढ़ रही है जो कहते हैं कि वे यीशु के हैं। नैतिकता नहीं बढ़ रही है, विवाह में निष्ठा नहीं बढ़ रही है; कलीसिया के अगुवों की बढ़ती संख्या भी नैतिक पतन की ओर है।

यह अंतिम क्षेत्र मुझे सबसे अधिक चिंतित करता है, क्योंकि यदि प्रासंगिक होने के बजाय लोगों के लिए सुलभ होना हमारी प्राथमिक आवश्यकता है, तो मसीही जिस प्रकार का जीवन जीते हैं उसका अनंत महत्त्व होता है और इस संसार में सुसमाचार प्रचार के कारण उसका व्यवहारिक महत्त्व होता है। यहाँ समस्या की जड़ हैः जिस तरह से पश्चिमी कलीसिया ने खुद को संरचित किया है, "हम आपकी अपेक्षाओं को पूरा करेंगे" प्रासंगिकता का निर्माण करते हुए, वास्तव में अँधेरा छा गया हैं, यदि पूरी तरह से मिटा नहीं दिया गया है, तो

मसीहियों को अपने आस–पास के लोगों तक आवश्यक संदेश सुसमाचार को पहुचाना होगा और लोंगो को उस कलीसिया तक पहुचना होगा जिसे परमेश्वर ने बनाया है।

प्रासंगिकता और उसके परिणाम

प्रासंगिक होने के प्रयास से उत्पन्न कठिनाई कम से कम दुगनी होती है।

पहला, जब हमारी कलीसियाएँ उन भूखों को खिलाती हैं जिनकी हमारी संस्कृति ने तृप्त होने की अपेक्षा की है, सुसमाचार का अनिवार्य संदेश विकृत और क्षीण हो जाता है। बाइबल का सुसमाचार उद्धार की प्रतिज्ञा के ऊपर बना है, और यह प्रतिज्ञा सुसमाचार के आवश्यक चित्र को केन्द्रित करती है। उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में सृष्टि की कहानी और पतन से उठने वाली प्रतिज्ञा यह है कि परमेश्वर स्वयं मनुष्य की अनाज्ञाकारिता के परिणामों को नष्ट कर देगा। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को और विस्तार से उनकी सभी संतानों को उनके साथ संबंध में रहने और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया। यीशु मसीह में, अंतिम आदम, परमेश्वर द्वारा उन दो नमूनों को आदम और हव्वा की संतानों के लिए पुनर्स्थापित किया है जो उस पर विश्वास करते हैं। तो कलीसिया का ध्यान स्पष्ट है हमें लोगों से पूछना चाहिए, "क्या आप परमेश्वर के साथ संबंध चाहते हैं, और यदि हां, तो क्या आप उसका प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं?" यदि कोई व्यक्ति उत्तर नहीं देता है, तो वह सुसमाचार नहीं चाहता है!

दूसरा, बहुत से प्रचारकों ने सुसमाचार के केंद्रीय फोकस को भ्रष्ट कर दिया है, सुसमाचार को एक ऐसे सार में बदल दिया है जो इसके संदेश का गलत अर्थ निकालता है और अधिकतर, मृत बच्चे पैदा करता है।

मृत बच्चे जो वास्तव में एक स्थानीय कलीसिया में रहते हैं, कलीसिया पर दबाव डालते हैं। वे एक हमें सहज महसूस कराते हैं, संतुस्ट वातावरण बनाते हैं, इसलिए कलीसिया अक्सर इन मृत बच्चों के लिए सांस्कृतिक प्रासंगिकता को कायम रखता है, जो सच्चे बाइबल अध्ययन और चुनौती से ऊब चुके हैं। उनकी उपस्थिति कुछ लोगों को बाइबल की सामग्री को विकृत करने के लिए भी प्रेरित करती है ताकि इसे अधिक स्वादिष्ट बनाया जा सके। हालाँकि, बाइबल का इरादा कभी भी पुनरुत्पादित लोगों के लिए सुखद नहीं था। यह उन्हें दोषी ठहराने के लिए था या, जैसा कि डिट्रिच बोन्होफर अपनी पुस्तक एथिक्स में लिखते हैं, उन्हें यह महसूस करने में शर्म आती है कि परमेश्वर से अलग होना मानव से कम होना है क्योंकि कि परमेश्वर ने हमें ऐसा बनाया है।

इस सब का इससे क्या लेना–देना है कि कलीसिया किस तरह से खुद को तैयार करता है कई महत्वपूर्ण विचार दिमाग में आते हैं।

पहला, यदि प्रासंगिकता का केंद्रीय ध्यान वास्तव में मनोरंजन का एक प्रयास है, तो कलीसिया अपने संदेश और संदर्भ को एक ऐसी संस्कृति के अनुरूप बना रहा है जो परमेश्वर के विरोध और विद्रोह में है। क्या यह वास्तव में सच है कि परमेश्वर ने जो कहा है और बाइबल में संरक्षित किया है, उससे बेहतर हम बता सकते हैं? यदि बाइबल वास्तव में परमेश्वर की सांस है, तो परमेश्वर ने प्रेरित किया है, और "किसी भी दोधारी तलवार से भी तेज है" (इब्रा. 4:12), क्या हमारा काम इसे "बेहतर" करना है या इसके बजाय केवल इसे स्पष्ट करना है? आज इतने सारे प्रचार में संक्षिप्त, काट–छाँट, काल्पनिक, अलंकारिक बातें शामिल हैं जो लोगों की दिलचस्पी के लिए अधिक हैं, न कि यह समझाने के लिए कि परमेश्वर ने पहले ही क्या कहा है।

दूसरा, प्रासंगिक नेतृत्व होने के हमारे प्रयास, स्वाभाविक रूप से, हमारे कलीसिया के वातावरण को भी प्रासंगिक बनाने के लिए संरचित करता है। यदि हम बाइबल की स्पष्ट शिक्षा पर एक स्पष्ट और अपरिवर्तित नजर डालें, तो कलीसिया को पता चलेगा कि उसकी मंडलियों के वातावरण के बारे में उसके बहुत से निर्णय सीधे परमेश्वर के संदेश के विरोध में होते हैं।

प्रासंगिक वातावरण बनाने के कुछ सबसे स्पष्ट प्रयासों को पहचानना आसान है। उदाहरण के लिए, सुनहरी भाषा वाले शिक्षक, ऐसे स्थान को धारण करते हैं, जो अनौपचारिक पर्यवेक्षक भी हमारे बीच में परमेश्वर का स्थान बता सकता है। वह वातावरण जिसमें इस तरह के सुनहरे लोग और उनके मदद करने वाली आराधना समूह कलीसियाओं को अपनी सभाओं में रणनीति अपनाने के लिए प्रेरित करते जो कि यीशु के अनुयायियों की सभाओं की तुलना में रॉक संगीत कार्यक्रमों के सामान होते हैं। ऐसे वातावरण में धुआँ, अँधेरी रोशनी, आराधना समूह की प्रमुख आवाजें, और केंद्रीय समय और ध्यान जो एक प्रचारक कि ओर जाते हैं, वे सभी वास्तव में परमेश्वर की आत्मा को सुनने के विरुद्ध काम करते हैं जो यीशु का अनुसरण करने का दावा करते हैं जवाबदेह होंगे। कलीसिया ऐसे गीत गाती है जो वास्तव में उनके जीवन की पवित्रता या यहाँ तक कि उनके वास्तविक इरादों को नहीं दर्शाते हैं। लोग उन बातों को सुनते हैं जो वे वास्तव में नहीं सुनते हैं, लेकिन एक अजीब मजाक या आकर्षक कहानी या साफ–सुथरे वीडियो के कारण पसंद करते हैं। यह "प्रासंगिक" संदर्भ किसी भी सम्मोहक विचार को दूर कर सकता है जो संदेश के माध्यम से आता है।

यहां तक कि सबसे अच्छे और सबसे वफादार बाइबिल संचारक भी इस वास्तविकता के शिकार हो सकते हैं। लेकिन क्या हम वास्तव में सोचते हैं कि हम बेहतर गाड़ी रखने का स्थान, प्रचारित आराधना, निचोड़ संचार विधियों और रॉक–संगीत वातावरण के लिए लोगों की

सभी अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं और फिर उन्हें यीशु के वचन बता सकते हैं: "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)?

जिन रूपों को हम उस संदेश के लिए घडिया के रूप में चुनते हैं जिन्हें हम मानते हैं कि वे हमेशा के लिए हमारी सेवकाई मे महत्वपूर्ण परिणाम लाते हैं। मांस को खिलाना और लोगों को पूरा सुसमाचार देने की कोशिश करना अनुचित है।

जिन क्षेत्रों में हम पवित्रशास्त्र के स्पष्ट मंशा से सबसे अधिक विचलित हुए हैं, उनमें से एक वह राशि है जो हम "प्रासंगिक" को रखने के लिए स्थान बनाने और कायम रखने के लिए खर्च करते हैं। जब अमेरिका में दुनिया की आबादी का 5 प्रतिशत से भी कम है और अमेरिकी कलीसिया वैश्विक कलीसिया का मुश्किल से 1 प्रतिशत है, तो क्या हम वास्तव में इन खर्चों को सही ठहरा सकते हैं? जब इन स्थानों में कम और नियमित रूप से अधिकाधिक अंगीकार करने वाले मसीही शामिल होते हैं, तो क्या हम वास्तव में इन खर्चों को उचित ठहरा सकते हैं? जब पहले कलीसिया से ही यीशु के अनुयायी की किसी भी बाइबल की परिभाषा के किसी भी माप के बारे में माप नहीं कर रहा है, तो क्या हम इन खर्चों को सही ठहरा सकते हैं? जब यीशु के जीवन और संदेश का सार इतना सरल, बलिदान और दूसरों पर केंद्रित है, तो क्या हम वास्तव में इन आत्मकेंद्रित खर्चों को सही ठहरा सकते हैं? जब कलीसिया की प्रकृति यह है कि उसके लोगों को सेवकाई का कार्य करना है, तो क्या हम वास्तव में परमेश्वर के लोगों को "सशक्त" बनाने के लिए बहुत सारे कर्मचारियों का भुगतान करने को उचित ठहरा सकते हैं? जाहिर है, इनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर न ही होना चाहिए। लेकिन वे जिन विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनका मनोरंजन जारी है और, इससे भी बदतर, परमेश्वर को जिम्मेदार ठहराया गया है (परमेश्वर ने हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया!) क्योंकि हमारी संरचना की मांग है कि ऐसा हो।

राज–गद्दी छिनने की प्रासंगिकता

हालाँकि, सुसमाचार हमारे आधुनिक प्रासंगिकता–प्राप्त कलीसिया संरचनाओं की मांग नहीं करता है, और न ही कलीसिया जैसा कि पत्रियों में वर्णित है। यदि हम चाहते तो हर विश्वासी के लिए यीशु के जीवन को सबसे आगे रखते हुए, हम स्वयं को व्यवस्थित करने के बेहतर तरीकों के बारे में 24–7 सोच सकते थे, लेकिन मृत्यु के प्रकाश में पश्चिमी कलीसिया अब चल रहा है और बाइबल के विस्फोट के लिए औसत दर्जे की स्लाइड नैतिकता, मुझे यह निष्कर्ष निकालना है कि हम बस यह नहीं करना चाहते हैं। कलीसिया का अधिकांश भाग

आंकलन, अंगीकार करने और सुधार करने के बजाय अनाज्ञाकारिता जारी रखने के लिए तैयार है।

यह मानते हुए कि अभी भी पर्याप्त विश्वासी हैं जो वास्तव में परवाह करते हैं और यह कि परमेश्वर ने अभी तक पश्चिमी कलीसिया को पूरी तरह से अपने ऊपर नहीं दिया है, हम उम्मीद कर सकते हैं कि वह वास्तव में हमें अनुशासित करेगा, क्योंकि "प्रभु जिसे प्रेम करता है उसे अनुशासित करता है, और हर बेटे को ताड़ना देता है। जिसे वह प्राप्त करता है। यह अनुशासन के लिए है जिसे आपको सहना होगा। परमेश्वर आपको पुत्र के रूप में मानते हैं। ऐसा कौन सा पुत्र है जिसे उसका पिता अनुशासित नहीं करता?" (इब्रा. 12:6–7)।

हालांकि, हम अमेरिकी कलीसिया में खुद को अनुशासित करने के लिए कुछ चीजें कर सकते हैं। सबसे पहले, हम बाइबल की स्पष्ट, मिलावट रहित घोषणा को अपनी सभी सभाओं में वापस रख सकते हैं, भले ही इसका अर्थ यह हो कि मसीही विश्वासियों को स्वीकार करने से झगडा छोड़न होगा। दूसरा, हम घरेलू समूह, बाजार समूह, और अन्य लोगों के नेतृत्व वाले सेवाओं का निर्माण करके नेतृत्व संरचना के विकेंद्रीकरण में अधिक प्रयास कर सकते हैं। तीसरा, हम कई संचारकों को शिक्षण और उपदेश की जिम्मेदारी के लिए शामिल कर सकते हैं ताकि लोग किसी एक सुपरस्टार पर बेवजह और गलत तरीके से निर्भर न हो। चौथा, हम अपनी कलीसियाओं के आकार को सीमित कर सकते हैं और फिर उपलब्ध किराये की जगहों का उपयोग करके और उनमें से अधिक को खोलकर संपत्ति व्यवसाय से बाहर निकल सकते हैं। हम यीशु के हैं, और इस प्रकार हम उसके लोगों के रूप में जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं। हमें इक्कीसवीं सदी के नए मंदिरों की आवश्यकता नहीं है, लोगों को रखने के लिए, जिनकी परमेश्वर अपेक्षा करता है कि वे उनके समुदायों में मौजूद हों। पांचवां, हम लोगों की अपेक्षाओं का पुनर्गठन कर सकते हैं और जब हम इकट्ठा होते हैं तो आवश्यक सेवकाईयों का नेतृत्व करने के लिए और अधिक स्वयंसेवकों पर भरोसा कर सकते हैं, हमारे मौजूदा ढांचे को जीवित रखने के लिए हमारे द्वारा खर्च किए जाने वाले लोगों और धन को कम कर सकते हैं। हम कई और विचारों पर विचार कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर हर इलाके में धर्मी पुरुषों और महिलाओं से अपेक्षा करता है कि वे आत्मा के मन की खोज करें कि कैसे अपने सभी लोगों को जीने और सुसमाचार सुनाने के लिए प्रेरित किया जाए। बेशक, पवित्रशास्त्र कुछ दानों का संचार करता है, लेकिन स्पष्ट शिक्षा से परे, जो लोग यीशु को स्वीकार करते हैं उन्हें अपने दैनिक जीवन में सुसमाचार को जीना है, यह बहुत कुछ नहीं देता है। हमारे सभी वर्तमान कलिसिया आकार को उन लोगों में पुनः कॉन्फिगर किया जा सकता है जो मसीह के लोगों के सशक्तिकरण को अनुकूलित करते हैं, प्रत्येक विश्वाशियों के याजकीय काम को उजागर करते हैं, हमें खुद पर कम पैसा खर्च करने में मदद करते हैं, सुनहरी जीभ वाले व्यक्तियों को दूर

रखते है और पवित्रशास्त्र के संचार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और बनाते हैं उनके लोगों में मसीह के पृथ्वी पर मानव जीवन को प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे के लिए सुलभ करते है।

बदलाव आसान नहीं होगा

इसलिए पश्चिमी कलीसिया को नवीनीकरण की आवश्यकता है! कलीसिया के पुराने विचार को जाने के लिए एक जगह के रूप में पुनः कार्यक्रम निर्माण करने से काम नहीं चलेगा। हमें इस बात पर सवाल उठाने की सख्त जरूरत है कि हम क्या करते हैं, लेकिन इससे भी ज्यादा, हमारे सोचने के तरीके पर। समस्या यह है कि हमारी सोच को सुधारना हमेशा आसान नहीं होता है।

एक बात के लिए, कलीसिया के बारे में हमारा ऐतिहासिक धर्मविज्ञान हमारे रास्ते में आ जाता है। पश्चिमी दुनिया में कलीसिया को केवल एक जगह के रूप में देखने के लिए अनुकूलित बना दिया गया है, न कि लोगों के रूप में विश्वास के कार्यों में बढ़ने और न परमेश्वर के उद्देश्य के सेवा में उनके कलीसिया के लिए भागीदारी। यह कलीसिया को सभी प्रकार की निराशाओं और गलतियों के लिए तैयार करता है। नेतृत्व ने परमेश्वर के लोगों को आराम करने की अनुमति दी है बाइबल से कम विचार वाल`कलीसिया में–एक ऐसे स्थान के रूप में जहां वे इकट्ठा हो सकते हैं, आराधना का अनुभव कर सकते हैं, और एक उपदेश सुन सकते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इतने वर्षों के बाद भी लोग नेतृत्व की अनुमति के अनुरूप दृढ़ता से गिर जाते हैं! लेकिन अब, जब हमारी संस्कृति में मसीह, उसके सुसमाचार, उसकी अपेक्षाओं, और उसके लोगों में उसके जीवन के प्रति शत्रुता बढ़ रही है, परमेश्वर के लोगों का हिलना लगभग असंभव है।

यीशु कहते हैं, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)। ये शब्द बहुत से अंगीकार करने वाले मसीहियों के लिए वैकल्पिक बन गए हैं। यह वास्तव में समर्पित लोगों के लिए है, कुछ सोच सकते हैं। या, मुझे पता है कि यीशु यही कहते हैं, लेकिन मैं उस तरह की प्रतिबद्धता के लिए तैयार नहीं हूं। या इससे भी बदतर, मैं इसे करने के लिए तैयार नहीं हूँ। परन्तु कलीसिया परमेश्वर के साथ संबंध रखने वाले लोग हैं और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए बनांये गए हैं। यीशु मसीह की कलीसिया एक भेजे हुए लोग हैं, चाहे हम कहीं भी जाएँ या उस यात्रा में हम कुछ भी करें। इससे कम कुछ भी काफी नहीं, बल्कि विधर्म है।

एक और समस्या जो कलीसिया को अपनी सोच में सुधार करने से रोकती है वह है नेतृत्व में कई लोगों का अहंकार! यह देखना आसान है कि क्यों कलीसिया को इकट्ठा करने

की जगह के रूप में इसका नेतृत्व करने वालों के लिए इतना व्यक्तिगत अर्थ है, खासकर अगर वे कई लोगों को इकट्ठा करने में सक्षम हैं। वे लोग अपने नेताओं से "प्रेम" करना सीखते हैं, उनकी सराहना करते हैं, और उन्हें महत्व देते हैं और यहां तक कि आर्थिक लाभ भी देते हैं।

लेकिन जब नेतृत्व वास्तव में यीशु द्वारा उनके कलीसिया का नेतृत्व करने के लिए बुलाए गए सशक्तिकरण जनादेश से प्रेरित होता है, तो उनका अपना महत्व परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत, दैनिक, घनिष्ट संबंध को स्थान देता है। अगुवे केवल दाइयाँ हैं जिन्हें परमेश्वर के लोगों को सत्य मे जीने और सत्य दाता के साथ अर्थपूर्ण संबंध विकसित करने में मदद करने के लिए बुलाया गया है! इस दशा में वे स्वेच्छा से कम हो जाते हैं, लेकिन उसे अवश्य ही बढ़ना चाहिए। अंततः हमें अपनी सोच में सुधार करना मुश्किल लगता है क्योंकि, जैसा कि हमने पहले देखा, आज कलीसिया के अधिकांश लोगों ने कलीसिया और उसके उद्देश्य में उनकी भागीदारी के बारे में एक गलत विचार को विकसित कर लिया है। विश्वासी आज उम्मीद करते हैं कि नेतृत्व कलीसिया में उपस्थित होने को आकर्षक और उनके लिए आसान बनाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह करे। इसमें नेतृत्व ने मनुष्य के निहित स्वार्थ और हमारी संस्कृति को प्रोत्साहित किया है। अब लोगों को यीशु के वचनों के प्रकाश में कार्य करने के लिए बुलाने के लिए नवीनीकरण की एक लंबी सड़क की आवश्यकता होगी।

नवीनीकरण को गले लगाना

तो हम न केवल कलीसिया के रूप में जो करते हैं, बल्कि हम कैसे सोचते हैं, इसका सफलतापूर्वक पुनर्मूल्यांकन कैसे करें?

सबसे पहले, हमें कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अपनाने और इसे पूरा होते देखने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता है। परमेश्वर के कलीसिया के लिए उसके स्पष्ट बाइबिल उद्देश्य को शामिल करने, भौगोलिक जवाबदेही के एक चक्र को परिभाषित करने के लिए पवित्र आत्मा के साथ एक बातचीत शुरू करने, और प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चे को सुसमाचार को देखने, सुनने और छूने और मसीह के लिए निर्णय लेने का अवसर देने के लिए हमारे सभी संसाधनों पर ध्यान केंद्रित करने जैसा कुछ नहीं है।

दूसरा, हमें अपने उत्तरदायित्व के दायरे में उन लोगों को पूरी तरह से सुस्माचार सुनाने के लिए रणनीतियां बनानी चाहिए। नेतृत्व परमेश्वर के लोगों को बहुत अधिक प्रोत्साहित नहीं कर सकता। नेतृत्व को अपने लोगों को सिखाना चाहिए, उन्हें रिहा करना चाहिए, और उम्मीद

करनी चाहिए कि वे हर जगह परिवर्तित जीवन के उपकरण बनेंगे जहां परमेश्वर उन्हें ले जाए।

तीसरा, कलीसिया को लम्बा होने के बजाय पार्श्व रूप से विकसित होने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए–लंबे भवनों का निर्माण करने और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करने के बजाय हमारे समुदायों में बाहर की ओर विस्तार करना चाहिए। हमें एक जगह दो से तीन सौ से ज्यादा लोगों को इकट्ठा नहीं करना चाहिए। जो हमारे पास नहीं है, उसका हमें मालिक नहीं होना चाहिए। लोग जो कर सकते हैं और जो करना चाहिए, उसके लिए हमें एक कर्मचारी का भुगतान नहीं करना चाहिए। परमेश्वर जो हमें देता है उसे हमें स्वीकार करना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक जो कलीसिया पार्श्व रूप से विकसित होने का प्रयास में कर सकता है वह प्रशिक्षित अगुवों है। जो कलीसिया वह करने के लिए वचनबद्ध है जो परमेश्वर चाहता है वह प्रत्येक व्यक्ति के विशेष व्यक्तिगत और सामूहिक स्थानों में अपने लोगों के माध्यम से करता है, उसे शिखर, आकर्षक नमूना की तुलना में कहीं अधिक नेतृत्व की आवश्यकता होगी जो हमारे इतिहास का एक प्रमुख शत्रु रहा है। मैं यहां वेतनभोगी कर्मचारियों की बात नहीं कर रहा हूं, जो घटनी चाहिए, लेकिन प्रशिक्षित स्वयंसेवकों के लिए जो सेवकाई की भूमिकाओं में सेवा करने के इच्छुक हैं।) कलीसिया के जीवन के हर स्तर पर दाई की सेवकाई में नेतृत्व के साथ शामिल होने के लिए लोगों का यह प्रशिक्षण स्थानिक प्रबंध का अधिकार देने के नेतृत्व गतिविधि की ओर हमारे प्रयास में मदद करेगा। नेतृत्व बहुतों को प्रशिक्षित नहीं कर सकता है।

यदि कलीसिया स्वयं को और अपने लोगों को सही ढंग से संरचित करती है, तो यह मौजूदा अगुवों को अन्य अगुवों को बनाने के लिए महत्वपूर्ण समय प्रदान करेगी। वे इस संबंध के आधार पर–संभावित अगुवों के साथ आमने–सामने समय बिता सकते है। यह व्यक्तिगत समय तीन व्यापक श्रेणियों (व्यक्तिगत आध्यात्मिक जीवन, व्यक्तिगत सेवा की समझ, और नियमित बाइबिल अध्ययन के माध्यम से धर्म ज्ञान मे परिपक्वता) पर केंद्रित होना चाहिए और नए अगुवा जितना संभव हो उतना युवा होना चाहिए। निर्माण सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे से शुरू होता हैः उनका व्यक्तिगत आध्यात्मिक गठन। यदि युवा अगुवा नियमित रूप से परमेश्वर के वचन से अपने आप को खिलाने के लिए जल्दी नहीं सीखते हैं और नियमित रूप से उसके साथ बात करने के लिए प्रेरित नही होते हैं, तो वे न केवल ईश्वरीय योजना के सार को खो देंगे, और परमेश्वर के लोगों के साथ विश्वसनीय भी नहीं होंगे। मौजूदा नेतृत्व नए अगुओं को संगठनात्मक रूप से प्रशिक्षित कर सकता है, नियमित रूप से छोटे और बड़े समूह की सभाओं का नेतृत्व कर सकता है और शरीर के उद्देश्य, मूल्यों और अपेक्षित परिणामों के बारे में सिक्षा दे सकता है।

चौथा, हमें अन्य कलीसियाओं से मित्रता करने की आवश्यकता है। जबकि मैं इसे जोर से कहता हूं, हमें गहराई से विचार करने की जरूरत है कि बाइबल की एकता क्या है और क्या नहीं, जबकि हम यह देखने की कोशिश करते हैं कि परमेश्वर एक अधिक व्यावहारिक साझेदारी से क्या बना सकता है जो इससे आ सकती है।

अस्तित्व की एकता होती है। परमेश्वर की सारी कलीसियाएं एक हैं क्योंकि हम मसीह में हैं और उन्होंने हमें एक बनाया है। यूहन्ना 17:20–23 में, यीशु कहते हैं,

> मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उनसे प्रेम रखा।

सुसमाचार में साझेदारी की एकता भी होती है। यह किसी ऐसे योजना पर एक साथ काम करने की एकता को संदर्भित करता है जिसके लिए परमेश्वर की आत्मा ने हमें बुलाया है। फिलिप्पियों 1:3–5 इस प्रकार की साझेदारी का संकेत देता हैः "मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं, तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। और जब कभी तुम सब के लिये बिनती करता हूं, तो सदा आनन्द के साथ बिनती करता हूं। इसलिये, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो।" प्रत्येक कलीसिया सुसमाचार के कार्य में कितना कुछ कर रही थी यह स्पष्ट नहीं है, परन्तु उनकी भागीदारी उस सेवकाई पर केन्द्रित थी जिसे परमेश्वर ने पौलुस और उनके साथ कार्य करने वालों को दिया था। इस प्रकार की साझेदारी के लिए किसी स्थानीय निकाय से बहुत अधिक मांग नहीं करती है। आश्चर्यजनक रूप से, हालांकि, कुछ कलीसियाओं को एक योजना में साझेदारी की इस योग्यता को भी उतना ही आसान लगता है, जितना आसान है।

अंततः सुसमाचार मे साझेदारी की एकता है। इस तरह की एकता पिछले दो की तुलना में बहुत अधिक गहरा है। यह स्थानीय कलीसियाओं में रेखांकित करके एक स्थान के पूर्ण प्रचार पर केंद्रित करता है जो अपनी व्यक्तिगत अपूर्णता को गले लगाते हैं फिर भी अपने स्थान तक पहुंचने के लिए अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को स्वीकार करते हैं। ऐसे कलीसिया अनंत काल द्वारा परिभाषित समय को महत्व देते हैं और परमेश्वर द्वारा सुसमाचार में किए गए उद्धार के वादे को पूरा करने के लिए अपनी सारी संपत्ति निवेश करने कि इच्छा रखते हैं। इस वजह से, वे अन्य इच्छुक कलीसियाओं के साथ, हर पुरुष, महिला और बच्चे के लिए

उनके स्थान पर सुसमाचार को सुलभ बनाने के तरीके और साधन ढूंढते है, चाहे कितना भी समय लगे। जब तक साझेदारी इस प्रकार की गहराई तक नहीं पहुँचती, तब तक हम वास्तव में सुसमाचार के लिए साझेदारी नहीं देखते हैं।

एकता के पहले दो स्तर कलीसिया को इस तीसरे प्रकार की एकता की प्रभावी उद्धार की ओर ले जा सकते हैं जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए बनाया और इरादा किया था। लेकिन बहुत बार, शायद अधिकतर, वे नहीं करते। इस प्रकार वे उस उद्धार के वादे को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हैं जिसे परमेश्वर ने दुनिया के लिए बनाया है और इसलिए उस स्थान के लिए जहां प्रत्येक मण्डली वास्तव में मौजूद है।

परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, हमें एकता के सभी तीन पहलू देते हैं, और वे सभी कलीसिया के लिए उसके इरादे पर आधारित हैं। यीशु मसीह में परमेश्वर के द्वारा होना, क्योंकि उसने हमें परमेश्वर के मूल स्वरूप में पुनर्स्थापित किया है। यीशु के द्वारा एकता में, क्योंकि उसने हमें संसार में अपनी कलीसिया के रूप में, अपने बुलाए हुए लोगों के रूप में भेजा है। एकता के लिए जब हम यीशु में जीवन की प्रकृति को पूरी तरह से समझते हैं और गले लगाते हैं, लोगों की संघटन की सीमा जिसे परमेश्वर ने कलीसिया में बनाया है, और कलीसिया की जवाबदेही हर आदमी, महिला और बच्चे के लिए सुसमाचार तक पहुंच बनाने के लिए है। प्रत्येक पहलू हमसे कुछ अलग मांग करती है। होने के नाते, कि हम शांति के बंधन में आत्मा की एकता की रक्षा करें। एकता में, कि हम लगातार अपने हाथों को इस उम्मीद में खुला रखते हैं कि सभी अंततः दुनिया में कलीसिया की प्रकृति और परमेश्वर की प्रेरितिक बुलाहट में आयंगे। एकता के लिए, कि हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में काम करें और पूरे कलीसिया के लाभ के लिए, भले ही हमें कुछ समय के लिए अकेले चलना पड़े।

पांचवां, नेतृत्व को परमेश्वर के लोगों को आर्थिक रूप से संसाधनों के लोगों और उन स्थानों के लिए तैयार करना चाहिए जहां सुसमाचार को रोपने की जरूरत है और इससे नई कलीसियाएं निकलती हैं। हमारे पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर का है, क्योंकि उसने हमें उसके साथ संबंध में रहने के लिए बनाया है ताकि हम अपने जीवन और जो कुछ उसने हमें दिया है, उसे संभाल कर उसका प्रतिनिधित्व करें।

छठा, कलीसिया को यह मापना चाहिए कि वह कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में कैसे आगे बढ़ रहा हैः मसीह के लोगों को सशक्त बनाना, लोगों को संगठित करना, और अपने उत्तरदायित्व के दायरे में सुसमाचार प्रचार करना। कलीसिया के लिए परमेश्वर जो कर सकता है और जो करेगा, उसके सस्ते विकल्प के द्वारा स्वयं को बहकाने नहीं देना चाहिए।

हमें नवीनीकरण की आवश्यकता है! मेरी आशा यह है कि यह पुस्तक उस यात्रा के लिए अग्रदूत है जिसे पश्चिमी कलीसिया की इस पीढ़ी को अपनाना चाहिए, एक ऐसी यात्रा जो आज के मसीही जगत में प्रचुर मात्रा में आसान उत्तरों के विरोध विकल्पों की मांग करेगी।

कलीसिया में सुधार के लिए समय और चिंतन की आवश्यकता होगी। यह सुधार की ओर ले जाएगा। यह कलीसियाओं की भौगोलिक संबंध में एक दूसरे के साथ सर्वोत्तम रूप से पूरा किया जाएगा। परिणाम? हम कलीसियाओं का निर्माण करेंगे जो हर दृष्टि से उतनी ही दें जितनी, यदि अधिक नहीं तो वे रखते हैं। विश्वासी, लोगों को उनके स्थान पर रणनीतिक रूप से शामिल करेंगे। अंततः नवीनीकरण कलीसियाओं को उत्पन्न करेगा जो उनकी प्रभावशीलता को कलीसिया संरचना से नहीं बल्कि लोग अपने विश्वास के साथ जो करते हैं।

अनुबंध 1

परमेश्वर की कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को लागू करना।

कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य और इस उद्देश्य के लिए मसीह के लोगों को सशक्त बनाने के लिए नेतृत्व की जिम्मेदारी पर चर्चा करने के बाद, कलीसिया अपने कार्य को पूरा करने के लिए बाइबल की रणनीतियों को कैसे लागु करता है?

सबसे पहले, हमें कलीसिया की सामर्थ के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है—उसके लोगों में जीवित पवित्र आत्मा। जब आत्मा मसीह के लोगों के माध्यम से रह रहा है और परमेश्वर के लोग इस प्रकार पाँच प्रारम्भ मूल्यों को जी रहे हैं जिनके बारे में हमने अध्याय 3 में बात की थी, परमेश्वर की प्रतिभा का केंद्र इस बात से प्रकट होता है कि लोग उसकी महिमा को देख सकते हैं, उसकी धार्मिकता को छू सकते हैं, और उसमे जीतने के लिए खींचे जा सकते हैं। जब परमेश्वर के संतान अपने जीवन के सामान्य भाग के रूप में अपने पौरोहित्य का अभ्यास कर रहे हैं, अपनी विशेष अनुग्रह गवाही को जी रहे हैं, उस फल में परिपक्व हो रहे हैं जो उनमें आत्मा के जीवन से आता है, उन वरदानों और क्षमताओं को

जारी कर रहे है जो आत्मा ने उन्हें सेवा के लिए दी हैं, और उनके लिए परमेश्वर की योजना का पालन करने में उनकी सारी संपत्ति का भण्डार करना, कलीसिया के अंधेरे को सुसमाचार की रोशनी से भरने में प्रभावी है।

दूसरा, हमें आर्थिक वास्तविकता के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। हमारे नेतृत्व की संरचना में और उन जगहों पर जहां हम इकट्ठा होते हैं, हमें उस आर्थिक वास्तविकता दोनों के साथ सहयोग करना चाहिए जिसमें हम रहते हैं और परमेश्वर द्वारा हमें प्रदान की गई आर्थिक संपत्ति के साथ जिम्मेदार और उचित होने की आवश्यकता है। हमें याद रखने की जरूरत है, जैसा कि हमने अभी ऊपर उल्लेख किया है, कि परमेश्वर के लोगों को उसकी शक्ति में चलना है, और इस प्रकार हमें घरों और बाजारों के आसपास स्थानीय कलीसियाओं की संरचना और जीवन का इरादा करना चाहिए, जिसमें अधिकांश नेतृत्व को इसे चलाने के लिए गैर भुगतान लोगों की आवश्यकता है। हमें दूसरों को प्रशिक्षित करने और समुदाय के जीवन में बाइबल की सच्चाई को सुरक्षित करने के लिए भुगतान किए गए नेतृत्व को उनकी प्राथमिक जिम्मेदारियों पर केंद्रित रखना चाहिए।

तीसरा, हमें पवित्र आत्मा द्वारा पाप अंगीकार करने वाली सेवकाई में सहयोग करने की आवश्यकता है। जैसे हम अपने निकटतम कलीसियाओं में सुसमाचार प्रचार करते हैं, हमें ऐसे लोगों की तलाश करनी चाहिए जिनमें परमेश्वर पहले से ही उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कार्य कर रहा हो। हमारी रणनीतियों को बस हमें पर्याप्त लोगों के करीब प्राकृतिक पहुंच में लाना है ताकि परमेश्वर की आत्मा हमें यह दिखाए कि वह किन लोगों को पाप अंगीकार करने के दोषी ठहरा रहा है, आश्वस्त कर रहा है और बुला रहा है। हमारी जिम्मेदारी प्रासंगिक नहीं है या यहां तक कि सुसमाचार के सार्वजनिक प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लिए नहीं है बल्कि सामान्य रहने वाले स्थानों और जीवन के अनुभवों में लोगों के साथ शारीरिक निकटता है।

चौथा, हमें अगुवों को प्रशिक्षित करने की जरूरत है। अपने नेतृत्व ढांचे को प्रभावी ढंग से विकेन्द्रीकृत करने के लिए, हमें पर्याप्त नेतृत्व को प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि हम विश्वासपूर्वक और बाइबल के आधार पर अपनी संगती में सभी के प्रति सशक्त जिम्मेदारी निभा सकें। किसी भी कलीसिया के प्राथमिक कार्य नेतृत्व का कार्यक्रमों को प्रबंधन या पवित्रशास्त्र की एकल घोषणा नहीं है; यह विश्वास समुदाय के बीच में सत्य का संरक्षण और समुदाय के जीवन में हर स्तर पर नेतृत्व का प्रशिक्षण और रिहाई है ताकि वे शरीर के प्रत्येक सदस्य को कलीसिया के लिए दुनिया में परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सशक्त बना सकें।

पांचवां, हमें अपने समुदाय में रुचि रखने वाली एक और कलीसिया की तलाश करनी चाहिए जिससे हम उसी प्रक्रिया के माध्यम से मदद कर सकें। हमारे अपने से परे पड़ोसियों में

अपने दर्शन को विस्तार करने के लिए, हमें अपने बड़े विश्वास समुदायों में पर्याप्त समय बिताना चाहिए ताकि हम साथी कलीसियाओं की पहचान कर सकें कि हम अपने पूरे शहरों, जिलों या राज्यों में कलीसिया की जिम्मेदारी को पूरा करने में सहायता कर सकें। जब कलीसिया सुसमाचार के लिए साझेदारी में परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में एकजुट होते हैं, अपने स्थान को पूरी तरह से प्रचारित करने के लक्ष्य के साथ, उनके बीच प्रभावी और संचालनात्मक सहयोग बनाया जा सकता है। अन्य प्रकार की एकता, जैसा कि हमने इस पुस्तक के अध्याय 7 में चर्चा की है, वही "परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा सेवा पर" क्या प्रभाव उत्पन्न नहीं करेगा।

अंततः कलीसियाओं के पास परिपूर्ण कलीसिया रोपण करने के लिएः एससीपी यात्रा और एससीपी पाठक द्वारा प्रदान की गई प्रशिक्षण सामग्री के माध्यम से अपना नेतृत्व कार्य कर सकता है। इन दो संसाधनों में कलीसियाओं को उनका दर्शन बनाने, दर्शन को मापने के लिए प्रतिबद्ध करने, पूरी तरह से लोगों को जुटाने में मदद करने के लिए आवश्यक सभी संसाधन शामिल हैं और जो कुछ परमेश्वर की आत्मा ने उनके स्थान पर तैयार किया है, उन्हें काट लें। एक कलीसिया अपने नेतृत्व के साथ इन प्रशिक्षण सामग्रियों के माध्यम से काम करने के बाद, वह उस कार्य को व्यवस्थित करने के लिए तैयार होगा जिसे परमेश्वर ने करने के लिए ठहराया है और उसे फसल काटने के लिए प्रदान करता है, और यह खुद को इस तरह से संरचित करने में सक्षम होगा जो पार्श्व रूप से बदने और कलीसिया के कार्यक्रमों के लिए बड़े भवन को पछाड़ने के लिए अनुमति देता है। जब बाइबल के सिद्धांतों को व्यवहार में लाया जाता है, तो यह येशु के लोगों में उसके के देहधारण को हमारे स्थानों के लोगों के साथ सीधे संपर्क में लाने में सक्षम बनाता है ताकि परमेश्वर उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सके।

अनुबंध 2

हमारे उद्देश्य को दुनिया के अन्य जगह पर बढ़ाना

जवाबदेही का एक चक्र होने का एक पहलू वह है जिसे मैं दूरबीन कहता हूं। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि प्रत्येक कलीसिया के पास न केवल अपने स्थान पर बल्कि उससे दूर दुनिया के कम से कम एक अन्य स्थान पर भी परमेश्वर के उद्धार के वादे के अपने हिस्से को

व्यक्त करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई कोई न कोई जिम्मेदारी है। लेकिन दुनिया भर में सेवकों या अल्पकालिक कार्य करने वाले समुहों को भेजने के बजाय जैसा कि पिछली पीढ़ियों में कलीसिया ने किया है, मेरा मानना है कि आज कलीसिया को मुख्य रूप से दुनिया के अन्य हिस्सों में विश्वासियों के साथ घर से भागीदार बनाना चाहिए।

यीशु ने अपने शिष्यों से और उनके माध्यम से हमारे लिए अंतिम शब्द दिए कि हमें जाकर हर जाती को चेला बनाना है (मत्ती 28:19 देखें)। हम इसे हर एक सुसमाचार में और प्रेरितों के काम 1:8 में यीशु के अंतिम शब्दों में भी भेजते हुए देखते हैंः "यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक तुम मेरे गवाह होगे।" जैसा कि मैंने इस पुस्तक के अध्याय 1 में दिखाने का प्रयास किया है, यीशु के शिष्यों ने हमारे प्रभु की इस आज्ञा को दो हजार से अधिक वर्षों से अपने–अपने स्थानों, पीढ़ियों और तरीकों से मानते आ रहे है। इसमें वे लोग भी शामिल हैं जो सुधार से निकलकर उन लोगों के साथ अपनी जगह लेने के लिए उठे जिन्होंने पहले से ही अपने दिल, दिमाग, इच्छा, और जीवन को परमेश्वर के उद्धार के वादे को पूरा करने के लिए दिया था और यीशु में मानव जाति के पास स्पष्ट सुसमाचार है।

ये सभी पूर्व पीढ़ियां यह देखे बिना मर गईं कि यीशु के शब्दों में क्या अनुमान लगाया गया था–कि सुसमाचार पूरी दुनिया में अपना रास्ता खोज लेगा तब हम विद्रोहियों के अंत की उम्मीद कर सकते हैं और तब हम एक नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की अनुमान कर सकते हैं (देखें मत्ती 24:14)। लेकिन हम एक अलग समय में रहते हैं, एक ऐसा समय जिसमें मेरा मानना है कि अंतिम परिदृश्य को प्रभावी ढंग से देखने के लिए हम और अधिक कुछ नहीं कर सकते। मैं मसीही इतिहास में किसी अन्य समय के बारे में नहीं जानता जब इतने सारे स्थानों से इतने सारे लोग यीशु के अनुयायियों का अंगीकार रहे हों। पिछली पीढ़ियों के कई कलीसियाओं के तुलना मे आज कि कलीसिया बड़ी है जिसे पिछले पीढ़ी सायद कभी संभव मान सकती थी और आज हम में से बहुत से लोगों को यह एहसास होता है। निःसंदेह, यह सच है कि प्रभु नहीं लौटे हैं, इसका अर्थ है कि हमारा कार्य पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है। निश्चित रूप से अभी भी लोग हैं, जो कुछ स्थानों मे जहाँ मसीहत नही है अभी भी सुसमाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं या ऐसे स्थानों मे जहाँ मसीहत है, अभी तक उद्धार नही प्राप्त किये हैं। उन्नीसवीं सदी के बाद के दिनों में, नेतृत्व ने इस वैश्विक प्रयास से दुनिया भर में सुसमाचार को यूरोप से अमेरिका तक ले जाने का प्रयास किया है। पिछले तीन दशकों में, हालांकि, विश्व सुसमाचार प्रचार के प्रयास के लिए वैश्विक नेतृत्व ने फिर से परिक्रमा की है, इस बार अमेरिकी नेतृत्व से दूर–लेकिन यह किसकी परिक्रमा कर रहा है, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है! हो सकता है कि कोई भी राष्ट्र वास्तव में पिछले पांच सौ वर्षों से मौजूद जुनून, समर्पण और बलिदान को प्रत्येक राष्ट्र तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए नहीं देगा। अब हम दुनिया भर में

इतने सारे अंगीकार करने वाले मसीहियों को पाते हैं कि आत्मा कहीं से भी हर जगह भेजने की प्रक्रिया को आवश्यकतानुसार व्यवस्थित करने में सक्षम है।

हालाँकि, जो बात मुझे चिंतित करती है, वह अमेरिकी कलीसिया पर इस नई वास्तविकता का प्रभाव। जैसा कि मैंने अध्याय 1 में कहा है, मैं नियमित रूप से इतने सारे अमेरिकी कलीसिया के पासबानों, और इसीलिए उनके कलीसियाओं के बारे में जागरूकता की कमी पर, मानव इतिहास के लिए परमेश्वर के उद्धार के वादे की केंद्रीयता के बारे में चकित हूं। परमेश्वर के प्रति संवेदनशीलता की इस तीव्र कमी और इतिहास के उनके आयोजन (यहां तक कि, और शायद विशेष रूप से, हमारे व्यक्तिगत इतिहास) के कारण, बहुत से लोग इस बात से बिल्कुल अनजान हैं कि परमेश्वर ने विश्व स्तर पर क्या किया है और कर रहा है। यदि हम सभी जातियों से चेला बनाने के लिए पवित्रशास्त्र की आज्ञा से प्रेरित नहीं हो सकते हैं, तो हमें कम से कम यह महसूस करने के लिए सेवा में होना चाहिए कि जबकि हम अमेरिकियों के रूप में दुनिया की आबादी का 5 प्रतिशत से कम और शायद 1 या अधिक नहीं हैं। विश्व के 2 प्रतिशत मसीही अंगीकार करने वाले, हमारे पास इतनी सारी संपत्ति है कि निश्चित रूप से अन्य जगहों पर सुसमाचार के लिए उपयोग की जा सकती है। जब हम यह महसूस करते हैं कि कलीसिया सुसमाचार को दुनिया तक पहुँचाने के लिए मौजूद है, तो निश्चित रूप से यह आपकी आत्म–केन्द्रितता को नियंत्रित करना चाहिए और हमारे जीवन और संसाधनों का अधिक उपयुक्त ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

हमारे वर्तमान सँरचना के साथ समस्याएं

इससे पहले कि मैं इस शाश्वत और वैश्विक वास्तविकता में मसीह का अधिक पूर्ण पालन करने के लिए हम क्या कर सकते हैं, यह संबोधित करने से पहले, मैं अमेरिकी कलीसिया के सुसमाचार के साथ दुनिया तक पहुंचने के वर्तमान मॉडल के साथ कुछ चिंताओं को स्वीकार करना चाहता हूं।

सबसे पहले, मिशनरी संस्थाओं को उन नई सुसमाचार प्रचारित वास्तविकता पर आनन्दित होना चाहिए था कि सुसमाचार अब दुनिया के सभी हिस्सों में मौजूद है और इस तरह खुद को छिन्न भिन्न कर दिया है और जीवित रहने के तरीकों को खोजने का प्रयास किया है। इस अस्तित्व की मानसिकता के परिणामस्वरूप सेवकों को न केवल संस्था और उसके समर्थकों को बहुत अधिक पैसा खर्च करना पड़ा, बल्कि अक्सर कुछ भी ऐसा नहीं दिखता जैसा कि अन्य पीढ़ियों ने सोचा था कि सेवक वास्तव में थे। अमेरिकी सेवकों की एक पूरी पीढ़ी अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को नहीं समझती है और परिणामस्वरूप

जातियों को चेला बनाने के प्रक्रिया मे कोई महत्वपूर्ण प्रयाश नहीं करती है। कुछ भी करने और परियोजनाओं और इमारतों के निर्माण की शुरुआत करने के बावजूद, कुछ वास्तव में उस जगह के खो जाने पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं जहां वे गए हैं। यहां तक कि जब स्थानों पर यीशु के लाखों अनुयायी हैं, तब भी अमेरिकी सेवा संस्थाएं वहां लोगों को भेजना जारी रखती हैं। ये सुसमाचार प्रचारक सुसमाचार का प्रचार करने में मदद करने के प्रयास में जाते हैं, लेकिन उन जगहों की कलीसियाएं वास्तव में सेवकों की तुलना में बेहतर तरीके से कार्य करना जानती हैं। या वे जाते हैं क्योंकि वे ऐसे लोगों की एक जेब देखते हैं जिन्हें वे अगम्य मानते हैं, और राष्ट्रीय कलीसिया की जिम्मेदारी की पूर्ण अनादर करते हुए, वे अपने स्वयं के लोगों को भेजते हैं, जिनमें से कई को सुसमाचार प्रचार, कलीसिया रोपण, या स्वदेशी नेतृत्व को ऊपर उठाने का कोई ज्ञान या अनुभव नहीं होता।

मुझे संदेह है कि हम वास्तव में यह नहीं जानते हैं कि पहले से हो चुके सुसमाचार प्रचार का जश्न कैसे मनाया जाए और अपने स्वयं के प्रयासों से भंग कर देते है। अमेरिकी मसीहत सेवकों का उद्योग बन गया है, जो पूरी दुनिया में हो रही नई, अच्छी वास्तविकताओं के लिए एक कठोर निर्णय लेने में असमर्थ है।

दूसरा, अमेरिकी कलीसियाओं की तेजी से बढ़ती संख्या ने इस वास्तविकता को महसूस किया है कि सेवा संस्थाएं बेअसर हो गई हैं और इसलिए पूरी दुनिया में अपने स्वयं के लोगों को भेजकर कथित खाली स्थान में कदम रख रही है। ऐसा करने के लिए तर्क उनके दृष्टिकोण से स्पष्ट और प्रचुर मात्रा में हैं: "स्थानीय कलीसिया को एजेंसियों की अनुमति से अधिक शामिल होना चाहिए।" "हमारे लोग अब इसके बारे में नहीं जानते हैं और इसलिए अब तक भेजे गए लोगों की परवाह नहीं करते हैं।" ऐसा करने के लिए तर्क उनके दृष्टिकोण से स्पष्ट और प्रचुर मात्रा में हैं: "स्थानीय कलीसिया को संस्थाओं की अनुमति से अधिक शामिल होना चाहिए।" "हमारे लोग अब इसके बारे में नहीं जानते हैं और इसलिए अब तक भेजे गए लोगों की परवाह नहीं करते हैं।" "हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि हम किसी वास्तविक चीज को छू रहे हैं।" "हमारे लोगों को प्रत्यक्ष रूप से शिक्षित करने से अधिक देने और प्रार्थना कि ओर ले जायगा।" यह सब कितना अच्छा लगता है! इतना अच्छा, वास्तव में, कि अधिकांश सेवा संस्थाएं बैंड बाजे में शामिल हो गई हैं और यात्रा कि संस्थाओं से ज्यादा कुछ नहीं हैं, उनके क्षेत्र के लोग अमेरिकी समूहों की मेजबानी के लिए समय के बड़े हिस्से को खर्च करते हैं।

जबकि इस अल्पकालिक समूह उन्माद से कुछ अच्छा आ सकता है, जमीनी स्तर पर तथ्य इसके विपरीत के प्रमाण दिखाते हैं। अराजकता हो गई है! बहुत सारे समूह एक ही स्थान पर जा रहे हैं और स्थानीय अगुवों पर भारी पड़ रहे हैं, अनावश्यक निर्भरता पैदा कर

रहे हैं क्योंकि अमेरिकी व्यक्ति कुछ लोगों से जुड़ जाते हैं और अंत में उन्हें पैसे भेजते हैं, या तो इसलिए कि उनसे सीधे पूछा गया था या अपने स्वयं के समझौते के कारण।

लेकिन इस दृष्टिकोण की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह सुसमाचार के संदेश को दूषित करता है। इन समूहों की कोई भी मात्रा उन्हें उस भाषा और संस्कृति में स्थानीय आबादी तक सुसमाचार ले जाने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं कर सकती है जिसे लोग जानते हैं। हां, निश्चित रूप से, कभी–कभी नियम के अपवाद होते हैं। लेकिन सैकड़ों वर्षों के प्रशिक्षित और अनुभवी सेवकों द्वारा नियम सीखा और अभ्यास किया गया है, और ये अल्पकालिक दल इन सभी अच्छी तरह से सीखे और सांस्कृतिक सिद्ध नियमों के संपर्क को तोड़ते हैं। एक सेवक ने मेरे पास खेद व्यक्त किया कि अकेले एक गर्मी के समय में, पूरी तरह से वियोजित की गई संस्थाएं और कलीसियाओं ने स्थानीय लोगों को "सुसमाचार" प्रचार करने के लिए दस हजार से अधिक अमेरिकी युवाओं को एक विशेष शहर में भेजा और इसके बजाय यह भ्रम पैदा किया कि क्या कलीसिया और सुसमाचार विदेशी या अमेरिकी थे।

मुझे संदेह है (हालांकि मुझे आशा है कि मैं गलत हूं) कि यह नई रणनीति, जो संभव है क्योंकि कोई भी इन दिनों कहीं भी आसानी से जा सकता है, एक लबादे से ज्यादा कुछ नहीं है जो स्थानीय कलीसियाओं को अपने आय को स्थानीय स्तर पर खुद पर खर्च करने की अनुमति देता है। जबकि कलीसियाओं ने पहले अपने आय का 10 या 20 प्रतिशत विदेश में भेजते हो सायद, अब वे इसमें कटौती कर सकते हैं, क्योंकि अल्पकालिक दल अपना अधिकांश धन स्वयं जुटाते हैं।

मैं चकित हूं, और मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर का आत्मा, जिसका काम पाप, धार्मिकता और न्याय के लिए संसार को दोषी ठहराना है, आहत है। कलीसिया को "बेहतर" करने की हमारी नई खोज ने किसी भी अन्य पीढ़ी से जिन्होंने सायद कभी ऐसा सपना देखा हो, जिसने हमें कंजूस बना दिया है और उन लोगों में भी यही रवैया बनाए हुए है जिनके लिए परमेश्वर ने हमें जिम्मेदारी दी है।

हम इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि हम वैश्विक मसीही समुदाय के 2 प्रतिशत से अधिक नहीं हैं और फिर भी इसकी संपत्ति का इतना बड़ा प्रतिशत रखते हैं, हम परमेश्वर और सुसमाचार में उद्धार के उनके वादे के सामने अपने आप को कैसे सही ठहराते हैं?

हमारे उद्देश्य को ढूंढने के तरीके

तो कलीसियाओं के रूप में परमेश्वर के उद्धार के वादे में निहित कार्य को पूरा करने में पूरी तरह से भाग लेने के लिए जिम्मेदार होने के नाते, हम इस कार्य में कैसे हिस्सा ले सकते हैं? मेरा मानना है कि अमेरिकी कलीसियाओं के लिए दुनिया भर में राष्ट्रीय कलीसियाओं के साथ साझेदारी करने का सबसे अच्छा तरीका है। यह परिभाषित करता है कि मैं दूरबीन को क्या कहता हूं।

यह हमें खींचेगा; वास्तव में, यह बहुत अपेक्षाएँ रखने वाला है, और हमने इतने लंबे समय से अपने लोगों को विपरीत परिणामों में ढाल रखा है, कि मुझे संदेह है कि हम बदलाव कर सकते हैं। मैं हमेशा आशान्वित हूं, निश्चित रूप से, कि परमेश्वर अपनी संप्रभुता में अपनी इच्छाओं को पूरा करेगा, लेकिन क्या अमेरिकी मसीही उसके कार्य में प्रभावी रूप से वैश्विक भागीदार होंगे? मुझें नहीं पता!

कलीसिया की साझेदारी के इस पूरे आयाम को बहुत अधिक नवीनीकरण की आवश्यकता है। पिछले सात अध्यायों में व्यक्त किए गए विचारों के आधार पर कई सुझाई गई रणनीतियाँ निम्नलिखित हैं, जो वर्तमान प्रणाली में बदलाव के रूप में नहीं बल्कि साहसिक नए विचारों के रूप में हैं।

सबसे पहले, अमेरिकी कलीसियाओं को दुनिया में एक जगह का चयन करना चाहिए जहां वे स्वदेशी कलीसियाओं और अगुवों के साथ प्रभावी ढंग से और संवेदनशील रूप से साझेदारी कर सकें, जो कि वे और उनके स्थानीय साथी कलिसियाएँ अपने स्वयं के सीमा में कर रहे हैं। यह इस विश्वास का स्वाभाविक विस्तार है कि परमेश्वर हमारे चारों ओर की दुनिया में जो कुछ भी करने जा रहा है, वह सभी मसीह के लोगों के माध्यम से करने जा रहा ळें हमारे निकटतम भौगोलिक स्थानों में ऐसा होने की संभावना को देखना हमारे लिए आसान है; हम जितना आगे जाते हैं यह उतना ही मुश्किल हो जाता है। लेकिन सुसमाचार की स्पष्ट भेजने वाली प्रकृति और वैश्विक वास्तविकताओं को देखते हुए कि मसीही दुनिया भर में मौजूद हैं, हर कलीसिया को कार्य में भाग लेने के लिए एक रास्ता खोजना चाहिए।

जैसा कि हमने देखा है, ऐतिहासिक रूप से इसका अर्थ है सेवक कहे जाने वाले लोगों को पूरी दुनिया में लोगों और स्थानों पर भेजना। यह तरीका हमेशा पूरी तरह से काम नहीं करता था, लेकिन परमेश्वर ने अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस साधन का इस्तेमाल किया। लेकिन हम पर दुनिया बदल गई है; जबकि अमेरिकी कलीसिया को कुछ सेवकों को भेजना जारी रखना चाहिए, हमें पहले की तरह इतने लोगों की जरूरत नहीं है। इसके बजाय स्थानीय कलीसिया को खुद को और अपने लोगों को उस कार्य से जोड़ने के लिए नए तरीके खोजने की जरूरत है जिसे अभी तक दुनिया में पूरा किया जाना बाकी है। ऐसा करने के

लिए मुझे दुनिया भर के कलीसियाओं में राष्ट्रीय भागीदारों को खोजने से बेहतर कोई रास्ता नहीं दिख रहा है।

हालाँकि, कोई भी ऐसे ही भागीदार नहीं; ये ऐसे भागीदार होने चाहिए जिन्होंने अपने लक्ष्य, या अपनी जवाबदेही के क्षेत्र की पहचान की हो, और इस लक्षित क्षेत्र के भीतर अपने लोगों और संपत्तियों तक पहुचने का प्रयास कर रहे हों। यह और भी अच्छा है यदि उस घेरे में एक पूरा शहर या राष्ट्र शामिल हो। और यह अभी तक का सबसे अच्छा है अगर कलीसिया ने एक क्षेत्र के चारों ओर एक रेखा खींचा है, कहते हैं, 100,000 या अधिक लोग और लोग यह जानते हैं कि कलीसिया पहले से ही कहां स्थापित किये गए हैं और कहाँ किस क्षेत्र को अभी भी एक सुसमाचार गवाह की जरूरत है।

इस तरह की तैयारी उस जगह को पूरी तरह से सभी के लिए स्पष्ट रूप से सुसमाचार प्रचारित करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है, और हम अमेरिकियों के रूप में तुरंत पहचान सकते हैं कि दुनिया भर के ये कलीसिया उसी बुलाहट का सामना करते हैं जो हम करते हैंः परमेश्वर के लोगों को संगठित करने और नेतृत्व को प्रशिक्षित करने के लिए। यह जानते हुए कि हमें कलीसिया की इमारतों, अस्पतालों, या स्कूलों को सबसे महत्वपूर्ण ध्यान के रूप मे हमारी साझेदारी को उनकी मदद करने में फंसने से बचेंगे। किसी भी कार्य में उन्हें अपनी लक्षित आबादी के बीच विकसित करने की आवश्यकता होती है, जैसे अनाथों और विधवाओं की सेवा करना, हम उन तरीकों से मदद कर सकते हैं जो काम को बनाए रखने की उनकी क्षमता के लिए पर्याप्त हैं।

दूसरा, अमेरिकी कलीसियाओं को अपने स्थानीय सहयोगी कलीसियाओं के साथ उस एक विदेशी स्थान पर भी मिलकर काम करना चाहिए। लंबी दूरी की साझेदारी को और अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है यदि हम उत्तरदायित्व के अपने मंडल में अधिक कलीसियाओं के साथ कार्य में भागीदार हैं। लंबी दूरी की साझेदारी को और अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है यदि हम उत्तरदायित्व के अपने छेत्र में अधिक कलीसियाओं के साथ कार्य में भागीदार हैं। यह विदेशी लक्ष्य को एक बड़ा लक्ष्य भी बना सकता है। हमें विदेशी भूमि में एक स्थानीय कलीसिया के साथ भागीदारी करने से बचना चाहिए, बल्कि कलीसियाओं के बड़े संपर्क पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और हमें ऐसा कोई भी निवेश करने से बचना चाहिए जो इन कलीसियाओं को उनकी स्थानीय जिम्मेदारियों या निर्माण प्रणालियों को लूटता है जो कि बनाए रखने की उनकी क्षमता से परे हैं।

तीसरा, अमेरिकी कलीसियाओं को बहुत सारे छोटे समूह दूसरे देशों में नहीं भेजने चाहिए। हमारे लिए विदेश भेजने के लिए सबसे महत्वपूर्ण लोग हमारे अगुवे हैं, विशेष रूप से वे जो हमारे अपने लोगों की जवाबदेही के अपने छेत्र में सेवा करके नेतृत्व कार्य में परिपक्व

हुए हैं। जितना हम अन्यथा चाहते हैं, अन्य देशों के लोगों को हमारे उपदेशों की, कलीसियाओं को प्रचारित करने और स्थापित करने में हमारी बहुत मदद, या हमारी अत्यधिक प्रशिक्षण सामग्री कि आवश्यकता नहीं है। और आखिरी चीज जो उन्हें चाहिए वह यह समझने की है कि बड़े पैमाने पर अमेरिकी कैसे कलीसिया कि आयोजन करते हैं। इसलिए हमें बहुत से लोगों को विदेश भेजने में सावधानी बरतने की जरूरत है। हमें समूहों, समूह के आकार और हम किन लोगों को भेजते हैं, उन्हें सीमित करना चाहिए। अगर हम सिर्फ एक कार्य समूह भेजना चाहते हैं, तो हमें फिर से सोचना चाहिए। हम उन्हें भेजने के लिए अमेरिका में जगह ढूंढ सकते हैं।

चौथा, अमेरिकी कलीसियाओं को अपने लोगों को दुनिया के बारे में शिक्षित करने के लिए समय निकलना चाहिए। मैं एक के लिए अधिक संतुष्ट होऊंगा यदि हम अपने लोगों को विदेशों में कभी नहीं भेजते हैं, बल्कि उन्हें सामान्य रूप से दुनिया और आज तक विश्व प्रचार प्रयासों के बारे में शिक्षित करने में अधिक समय और प्रयास करने से। बेशक, अगर हम उन्हें ठीक से सिक्षा दें, तो हमारे विदेशी साथी इस काम में हमारी मदद कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि हमारा नेतृत्व स्वयं सुसमाचार को पूरी दुनिया में ले जाने के जनादेश के प्रति आश्वस्त थे और खुद को एक शाश्वत और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षित करते थे, तो यह अकेले अमेरिकी कलीसियाओं के वातावरण को बदल देता। पश्चिमी कलीसिया की ऐतिहासिक और वैश्विक सुसमाचार की पहुंच के बारे में दृढ़ विश्वास और समझ की कमी हमारे ज्ञान की कमी का मुख्य दोषी हो सकती है।

पांचवां, अमेरिकी कलीसियाओं को अपने लोगों से उस जगह के लिए प्रार्थना करने के लिए कहना चाहिए, भले ही वे वहां कभी नहीं जाते। हमें अपने लोगों को सिखाना चाहिए और उन्हें दिखाना चाहिए कि कैसे वे अपने बच्चों को एक अनंत और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ पालना शुरू कर सकते हैं, जबकि वे दुनिया भर के स्थानों के लिए प्रार्थना करना सीखते हैं। यह हमारी संस्कृति की अहंकार को दूर करने की दिशा में एक लंबा रास्ता तय कर सकता है, जिसका सामना अमेरिकियों को दिन में चौबीस घंटे, सप्ताह में सात दिन करना पड़ता है।

छठा, अमेरिकी कलीसियाओं को दूरबीन कि सेवकाई में अपना अधिक आय देने का एक तरीका ढूँढना चाहिए। क्या हमारे कलीसियाओं के कुल आय का 50 प्रतिशत हमारे स्थानीय छेत्रों और हमारे विदेशी लक्ष्यों को देना वास्तव में बहुत अधिक होगा?

सातवां, अमेरिकी कलीसियाओं को अपने प्राथमिक नेतृत्व को अपने विदेशी लक्ष्य के लिए भेजना चाहिए और विश्वासियों की मदद करने में भाग लेना चाहिए जो हम अपने स्थानीय लक्ष्य में करते हैं। हमारी कलीसियाओं की उतनी ही देखभाल करने, समझने और आर्थिक रूप से संसाधनों की जितनी कि नेतृत्व परवाह, समझ और आर्थिक रूप से संसाधनों

की देखभाल करता है। हमें अपना नेतृत्व भेजना चाहिए और लोगों को घर पर ही रहने देना चाहिए।

आठवां, अमेरिकी कलीसियाओं को विकास रणनीतियों के बारे में सावधान रहना चाहिए जो विदेशी स्थानीय कलीसियाओं को वहां कि प्राथमिक शक्ति बनने में मदद नहीं करते हैं और सीधे तौर पर सुसमाचार प्रचार और कलीसिया रोपण से जुड़े नहीं हैं। विधवाओं और बच्चों की देखभाल जैसे सामाजिक मंत्रालयों का विकास, और शायद हमेशा कीड़े का एक डिब्बा होगा, क्योंकि वित्त के प्रबंधन में लोगों के साथ भागीदारी करने से गलतियाँ हो सकती हैं। मेरे अंगूठे का एक नियम यह है कि यदि किसी स्थान पर सुसमाचार प्रचार प्रक्रिया में विकास की आवश्यकता है, तो विदेशी कलीसियाओं को बनाए रखने के लिए कार्य काफी छोटा होना चाहिए, और अमेरिकी कलीसियाओं को जितना संभव हो, अदृश्य रहने के लिए प्रयास करना चाहिए। सुसमाचार जितना संभव हो उतना प्रासंगिक और स्वदेशी होना चाहिए। ज्यादातर जगहों पर विदेशी चेहरे इसके प्रसार को जटिल बनाते हैं, खासकर अगर सुसमाचार की घोषणा धन की अभिव्यक्तियों से जुड़ी होती है जो विदेशी लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

यह पद्धति गरीबी, परित्याग या उत्पीड़न से जुड़ी प्रणालियों को नहीं बदलेगी। हम हर विधवा की मदद नहीं कर सकते, लेकिन जब स्थानीय कलीसिया यीशु की जीवन शैली अपनाते हैं, तीन या चार या पचास या अधिक विधवाओं की मदद कर सकते है। और इससे सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है!

नौवां, अमेरिकी कलीसियाओं को हमारे देश से दुनिया में जाने वाले सेवकों को भेजना और समर्थन देना जारी रखना चाहिए। लेकिन हमें केवल उन्हें भेजना चाहिए जिन्होंने अनुभव से दिखाया है कि वे वास्तव में कलीसिया को समझते हैं जैसे परमेश्वर ने उसे बनाया है, कैसे नेतृत्व को उसके भीतर काम करना चाहिए, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दूसरों को कैसे सुविधा प्रदान की जाए और स्वयं के लिए कोई कार्य न करें। हमें कुछ ऐसे युवाओं को भी भेजना चाहिए जिनमें हम सुनने वाला हृदय और आज्ञाकारी इच्छा देखते हैं। इन युवा विश्वासियों के लिए अनुभवी लोगों की एक समूह की तुलना में शिष्य होने के लिए कोई और बेहतर जगह नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे भविष्य में कोनसी सेवकाई करते हैं; यह अनुभव उन्हें नेतृत्व का हिस्सा बनने के लिए तैयार करेगा जहाँ भी परमेश्वर उन्हें ले जाएगा।

अंततः अमेरिकी कलीसियाओं को अपने विदेशी सहयोगियों और उनके द्वारा भेजे जाने वाले सेवकों को नियमित रूप से जवाबदेह बनाना चाहिए। जैसा कि हमारे स्थानीय कलीसियाओं में होता है, जिन चीजों को हमें अपनी विदेशी भागीदारी में मापने की आवश्यकता होती है, वे हैं जिन पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैंः क्या लोग बाइबल के पाँच प्रारम्भ

मूल्यों में बढ़ रहे हैं? क्या वे उन मूल्यों को कहीं भी और हर जगह जी रहे हैं जहाँ परमेश्वर उन्हें अवसर देता है? क्या कलीसिया अपने छेत्र पर एक मापनीय प्रभाव डाल रही है? क्या हम लोगों को विश्वास में आते देखते हैं?

जैसा कि हम अपने सहयोगियों और सेवकों को जवाबदेह ठहराते हैं, हमें भी उन्हीं चीजों के लिए खुद को जवाबदेह ठहराना चाहिए। जवाबदेही मानक के लिए दूसरों से पूछना कपट है जिसे हम जानबूझकर खुद पर लागू नहीं करते हैं।

इन सुझावों में से कोई भी अमेरिकी कलीसिया में सभी समस्याओं का समाधान नहीं करेगा। लेकिन अगले दशकों में यह स्वस्थ रूप से भेजने, जाने और बढ़ने की अनुमति देगा।

टिप्पणियाँ

प्रस्तावना

1. मेरे द्वारा लिखी गई पुस्तकें, लेखों और डीवीडी के साथ, www.spcglobal.org, सैचुरेशन चर्च प्लांटिंग इंटरनेशनल की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

परिचय

1. परमेश्वर के साथ संबंध और प्रतिनिधित्व पर गहन विचारों के लिए, *डिवाइन डिजाइनः इन द बिगिनिंग* (http://scpglobal.org/resources/) पढ़ें।

अध्याय 1: हम अपने राष्ट्र का इतिहास लिख रहे हैं

1. जबकि मेरे पास इन नंबरों के लिए कोई विशिष्ट स्रोत नहीं है, मैं व्यक्तिगत रूप से इस कलीसिया के विकास का हिस्सा रहा हूं और कई लोगों में से एक हूं जो इसे सटीक मानते हैं। 1990 के दशक में ऑपरेशन वर्ल्ड के पैट्रिक जॉनस्टोन ने निष्कर्ष निकाला कि 2000 तक भारत में 200,000 नए कलीसिया होंगे और

कलीसिया लगभग 15 प्रतिशत वार्षिक औसत वृद्धि दर पर पुनः उत्पन्न कर रहा था। वह दर आज भी अटूट रूप से जारी है।

2. *जिम मोंटगोमरी, आई एम गोना लेट इट शाइनः 10 मिलियन लाइट हाउस टू गो* (पासाडेना, सीएः विलियम केरी लाइब्रेरी, 2001), •. "डॉन फिलीपींस, जहां यह सब 1974 में शुरू हुआ, उदाहरण के लिए, 2000 के अंत तक लगभग 5,000 कलीसियाओं से 50,000 तक बढ़ने के अपने लक्ष्य की पूर्ति का जश्न मनाया है।"

3. केली शट्टक, "सेवेन स्तार्ट्लिंग फैक्ट्सः अन अप क्लोस लुक एट चर्च अटेंडेंस इन अमेरिका," 29 डिसेम्बर, 2015, चर्च लीडर्स, http://churchleaders.com/pastors/pastorarticles/139575-7-startling-facts-an-up-close-lookat-church-attendance-in-america.html (5 जून, 2017 को एक्सेस किया गया)।

4. डेल टैकेट, "व्हाट्स अ क्रिस्चियन वर्ल्डव्यू?" फोकस ओन दा फॅमिली, http://www.focusonthefamily.com/faith/christian-worldview/whats-a-christianworldview/whats-a-worldview-anyway (5 जून, 2017 को एक्सेस किया गया)।

अध्याय 3ः कलीसिया को अपनी सफलता को कैसे मापना चाहिए?

1. *ए माइंड अवेकः एन एंथोलॉजी ऑफ सी.एस. लुईस* (लंदनः जेफ्री ब्लेस, 1968), 130.

अध्याय 6ः कलीसिया में अंतर्निर्भरता

1. *डी. ए. कार्सन, द गॉस्पेल अकार्डिंग टू जॉन, पिलर न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री* (लीसेस्टर, इंग्लैंडः इंटर–वर्सिटी प्रेस, 1991), 521.

2. *मेरिल सी. टेनी, जॉनः द गॉस्पेल ऑफ बिलीफः एन एनालिटिक स्टडी ऑफ द टेक्स्ट* (ग्रैंड रैपिड्सः एर्डमैन, 1976), 31–32.

3. न केवल स्थानीय कलीसिया के लिए बल्कि कलीसिया बड़े पैमाने के लिए नेतृत्व के पांच कार्यों पर अधिक जानकारी के लिए, एफ एफ ब्रूस द्वारा दो पुस्तकों पर एक नजर डालें: द पॉलीन सर्कल एंड मेन एंड मूवमेंट्स इन द प्रिमिटिव चर्च: स्टडीज इन अर्ली नॉन–पॉलीन क्रिश्चियनिटी।

परिशिष्ट 1: परमेश्वर के कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को लागू करना।

1. आप www.scpglobal.org पर एससीपी जर्नी और एससीपी रीडर को अन्य किताबों के साथ पा सकते हैं, जो आपको परमेश्वर के उद्धार के वादे को बेहतर ढंग से समझने और उसके लोगों के माध्यम से लागू करने में मदद करने के लिए उपलब्ध हैं।